मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

७४वां स्थापना दिवस
एवं
कौस्तुभ जयंती समारोह शुभारंभ

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ दिसम्बर २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ११-१२

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री बसंत कुमार बिड़ला एवं डॉ. सरला बिड़ला साथ दे रहे हैं सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा, कौस्तुभ जयंती के चेयरमैन श्री सीताराम शर्मा व अन्य पदाधिकारीगण

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR

1935-2010

७४वां स्थापना दिवस विशेषांक

बायें से राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री ओम प्रकाश पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथालिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा, उद्घाटनकर्ता श्री बसंत कुमार बिड़ला व डॉ.सरला बिड़ला,कौस्तुभ समिति के चेयरमैन श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वय श्री हरिप्रसाद कानोड़िया व श्री राज के. पुरोहित एवं श्री पुष्करलाल केडिया

सभागार में दर्शकगण

''परचम प्रस्तुति'' सांस्कृतिक कार्यक्रम 'देश रंगीला'

PLATINUM JUBILEE YEAR

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442

Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

With Best Compliments From

HARTEX RUBBER PRIVATE LTD.

Manufacturers & Exporters of Cycle Tyres & Tubes

Kamala Towers, 2nd Floor
Plot No. 1-8-304 to 307
Patigadda Road, Begumpet
Hyderabad - 500 016
Andhra Pradesh, India

MAHABIR PETRO PRODUCTS PVT.LTD.
(MFG.OF CALCINED PETROLEUM COKE & CARBON PASTE)
Tel/ Fax 06243 : 244370, 244371 (o) : 246113, 242864 (R)
e-mail : pmaskara@vsnl.net
REGD.&H.O.BARAUNI INDUSTRIAL AREA
P.O.TILRATH-851122 DIST.BEGUSARAI(BIHAR)

With best compliments from:

Chiranjilall Agarwal

Shalimar Group of Companies
Shalimar Pellet Feeds Limited
Shalimar Hatcheries Limited
Sona Vets Private Limited
Contai Golden Hatcheries (E) Private Limited
Utkal Feeds Private Limited

17 A B & C Everest
46C Chowringhee Road
Kolkata 700 071

Phone Nos: 22882469, 22886439
Fax No: 22882496
E-mail : spfl123@vsnl.net
Website : www.shalimarpoultry.com

Dhanbad Fuels Ltd.
13 Elgin Road 4th floor
Room No.4C Kol-20
Phone No.: 22890700

समाज विकास

✦अक्टूबर २००९ ✦वर्ष ५९ ✦अंक १२ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक *पृष्ठ संख्या*

चिट्ठी आई है ८

'मारवाड़ी समाज' – दशा–दिशा – शम्भु चौधरी १०

अध्यक्षीय : नन्दलाल रुँगटा ११

74वां स्थापना दिवस व कौस्तुभ जयंती का शुभारम्भ :

बदलते समय के साथ समाज को भी..... – डॉ. सरला बिड़ला १३

डॉ. श्रीमती सरलाजी बिड़ला का अभिभाषण १४

श्री पुष्करलाल केड़िया का सम्मान १६

सम्मेलन की सात दशकीय यात्रा – सीताराम शर्मा १७

क्रूर सामाजिक विसंगति है : वृद्धाश्रम–रामअवतार पोद्दार १८

महामंत्री की रपट १९

परिचर्चा : वृद्धाश्रम एवं टूटते परिवार २२

कौस्तुभ जयंती के सदस्यों की सूची २५

बच्चा बड़ा होने से डरता है – भानीराम सुरेका २७

''कल आज और कल'' – विश्वनाथ मारोठिया २९

समाज में फैले सामाजिक समरसता–संजय हरलालका ३०

समाज कैसे शक्तिशाली हो? – आत्माराम सोंथलिया ३१

अभिशाप बनता जा रहा है दिखावा–विजय गुजरवासिया ३३

क्या आप सहमत हैं? होना चाहिये–बद्री प्रसाद भीमसरिया ३५

आज का धनाढ्य समाज – श्री हरिप्रसाद बुधिया ३६

समाजिक–चेतना – ओमप्रकाश खण्डेलवाल ३७

मारवाड़ी समाज : कल आज और कल–पुरुषोत्तम शर्मा ३९

तलाक–दहेज हत्या – राधेश्याम अग्रवाल ४०

समरसता और सामाजिक विकास – हरि शंकर शर्मा ४१

विवाह संस्कार : – राजेन्द्र शंकर भट्ट ४२

कैसे लायें सब मिलकर – गोपाल ''अकेला'' ४३

सुनी सुनायी – स्वराज्यमणि अग्रवाल ४४

मेरा धर्म (क्या है?) – ओम लड़िया ४५

मारवाड़ी शब्द का जन्म – मौजीराम जैन ४६

राजस्थानी नाटक 'टूँटिया'–डॉ. पूर्णिमा केड़िया 'अन्नपूर्णा' ४७

व्यक्ति, समाज और संस्था के निहितार्थ–सोम प्रकाश गोयनका ५७

बालक हैं उपहार : अच्छे हों संस्कार – सरोज गिड़िया ५८

समाज तब और अब – राधाकृष्ण माहेश्वरी ६०

नये आजीवन एवं विशिष्ट सदस्यों की सूची ६१

मारवाड़ी सम्मेलन की प्रासंगिकता–डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ६३

दहेज, दहेज पर बने कानून.......... – राजेश बजाज ६६

समाज, संगठन और राजनीति – कमल नोपानी ६७

जाने कहां गये वे लोग? – गोविन्द प्रसाद शर्मा ६८

बंटवारा – जगदीश चन्द्र एन. मुंदड़ा ६९

कुछ यादगार क्षण ७०

समाज के बारे में उद्गार :

सम्मेलन 'मारवाड़ी समाज' का प्रतिनिधित्व – नन्दलाल रुँगटा ७७

समय के साथ प्रश्न बदलते हैं। – सीताराम शर्मा ७७

संवेदनशीलता समाज का आभूषण–नन्दकिशोर जालान ७८

प्रतिभाओं को ठीक ढंग से देखे समाज–स्व. भँवरमल सिंघी ७८

कविता : पूर्ण–विराम – जयकुमार रुसवा ८०

युगपथ चरण :

हिन्दुस्तान क्लब : श्री सीताराम शर्मा अध्यक्ष चुने गये ८१

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ ८२

नगाँव में अग्रसेन जयंती ८३

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव संपन्न ८४

बधाई : श्री आत्माराम सोन्थलिया ८४

अग्र युवा संगठन वाद–विवाद प्रतियोगिता ८४

अग्रसेन महाराज की जयंती मनी ९९

दीपावली मिलन समारोह ९९

माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल ९९

कविता : पंक्षी – परशुराम तोदी 'पारस' ९९

कविता : विदाई गीत – सज्जन बेरीवाल १००

श्रद्धांजलि : प्रोफेसर कल्याण मल लोढ़ा १००

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ e-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७०००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

With Best Compliments From

JAI BHARAT COMMERCIAL CORPORATION

23/24, Radha Bazar Street, 3rd Floor,
Kolkata- 700 001.
Phones :2242-5889, 2242-7995, 2231-8944
Fax : 2242-9813
e.mail : jbccsonthalia@yahoo.com

Manufacturers & Suppliers of :

Cast Iron/Mild Steel/Electric Resistance Welded/Galvanised Iron/PVC Pipes and their Fittings, Ductile Iron Pipe Fittings, A.C. Pressure Pipes, C.I.D. Joints, Fiber Glass Strainer, M.S.Rounds/Tor Steel, Rubber Rings/ Gasket, C.I.Coupling, C.I.Bolted Collar, C.I.Leak Repairing Clamp, Mechanical Joints (M.J.Collar), Push Type Reducer, Hydrant Tee, Flange & Socket/Spigot Tail Pieces, Bends, C.I.Flexible Adaptor, Bleaching Powder, Halogen Tablets etc.

Turnkeys : Supply, delivery & installation of submersible Pumping Machinery, Electro Chlorinator and Bulk Water Flow Meter.

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान
27 NOV 2009

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता की स्थापना के 75 वें वर्ष में प्रवेश पर 25 दिसम्बर, 2009 को 'कौस्तुभ (प्लेटिनम) जयंती समारोह' का आयोजन किया जा रहा है।

प्रवासी राजस्थानी जहां भी गए हैं, वहां अपने व्यावसायिक कौशल के साथ वे अपनी समृद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं को आगे बढ़ाने में भी अग्रणी रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सम्मेलन को चिरस्थाई बनाने के लिये अपनी मातृभूमि के साथ भावात्मक संबंध बनाये रखें और सामुदायिक महत्व के कार्य करवाने में भी अग्रणी रहें।

मैं सम्मेलन के संस्थापकों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए इसके सभी सदस्यों एवं पदाधिकारियों को इस ऐतिहासिक अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूं और इस समारोह एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

चिट्ठी आई है :

कौस्तुभ जयंती

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अगले वर्ष निज।
'कौस्तुभ जयन्ती' मनाएगा यह जान हुआ अति हर्ष।
इस उत्सव पर मिले मान्यता 'मायड़ भाषा' को कैसे
'सम्मेलन' इस मुद्दे पर अब जमकर करे विचार–विमर्श

रीढ देश की अर्थ व्यवस्था की हम हैं राजस्थानी
गति विकास में देन हमारी सदा देश ने है मानी
सीमा–प्रहरी श्रेष्ठ कहाए हैं इस धरती के बेटे
किसी क्षेत्र में भी किससे सोचो कम हैं राजस्थानी?

लिए मान्यता तरस रही है फिर क्यों निज मायड़ भाषा?
क्यों इस मुद्दे पर दिल्ली नित दिए जा रही है झांसा?
'सम्मेलन' इस यक्ष–प्रश्न को हल करने बाबत अपनी
सिंह–गर्जना करे जोश भर अब जन–जन को है आशा

– ताऊ शेखावाटी

अद्वितीय धरोहर सेतुबंध

यह पुल ३.५ किलोमीटर लंबा और १.५ किलोमीटर चौड़ा है। रामचन्द्रजी ने लंका विजय हेतु अपनी वानर सेना को लंका पहुँचाने के लिए समुद्र पर यह निर्मित करवाया था। इसको बनाने वाले महान शिल्पी विश्वकर्मा के पुत्र नल और नील थे, जिन्हें यह विद्या वंशानुगत प्राप्त हुई थी। आज के कुछ सम्माननीय व्यक्ति भले ही उनकी विद्या पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए कहते हों कि उन्होंने किस कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी।

गवरमेन्ट पनडुब्बी द्वारा पुल को दिखाने की व्यवस्था करे जैसा की मोरिशियश आदि जगहों में समुद्र के नीचे की चीजें दिखाने की व्यवस्था है, तो इससे करोड़ों रूपयों की सालाना आमदनी भी भारत सरकार को होगी और लाखों लोग लाभान्वित भी होंगे। धर्म परायण हिन्दु आस्था स्वरूप दर्शन के लिए जाएंगे और टूरिस्ट लोग आश्चर्य प्रतीक स्थान देखने के लिए जाएंगे।

– मुरलीधर चौधरी
25, बुड़ों शिव तल्ला
मेन रोड, कोलकाता–38

रथारूढ़ों में कोई एक फहराये तिरंगा झंडा लाल किले पर

धर्म रथ चल रहा निरन्तर – समाज सेवा हेतु
विगत 74 वर्षों से सतत् निरन्तर !
आज सम्मेलन ध्वज तले रूढ़ाष्ढ़ है –
रुंगटाजी
रूधारूढ़ थे पूर्व –
नन्दकिशोरजी,
मोहनलालजी,
सीताराम शर्मा जी।
सारथी हैं – पोद्दारजी,
हरलालकाजी।
अन्य रथों पर सवार हैं –
कानोड़ियाजी, पुरोहित जी,
कंदोईजी।
साबूजी, खंडेलवालजी एवं
भीमसरियाजी
सैनिक हैं, अनगिनत, विभिन्न दिशाओं में –
लड़ रहे हैं – सामाजिक कुरितियां दूर करने
लड़ रहे हैं – न्याय, सुव्यवस्था के लिए
प्रयासरत हैं – सामाजिक उत्थान एवं
मानवीय मूल्यों को बढ़ाने में
सरस्वती पुत्र हैं –
लक्ष्मी पुत्र भी
विश्व के हर कोने में रथामठ हैं –
राजनीति में नहीं ।
स्थापना दिवस पर यही संदेश –
रथारूढ़ों में कोई एक फहराये –
तिरंगा झंडा लाल किले पर ।

– श्रीमती प्रेमलता खंडेलवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा
अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के
विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

कार्यकाल	स्थान	अध्यक्ष	महामंत्री
1935–1938	कोलकाता	स्व. रायबहादुर रामदेव (कोलकाता)	स्व. भूरामल अग्रवाल
1938–1940	कोलकाता	स्व. पद्मपत सिंघानिया (कानपुर)	स्व. ईश्वरदास जालान
1940–1941	कानपुर	स्व. बद्रीदास गोयनका (कोलकाता)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
1941–1943	भागलपुर	स्व. रामदेव पोद्दार (मुम्बई)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
1943–1947	दिल्ली	स्व. रामगोपाल मोहता (बीकानेर)	स्व. बजरंगलाल लाठ
1947–1954	मुम्बई	स्व. बृजलाल बियाणी (अकोला)	श्री रामेश्वरलाल केजड़ीवाल
			श्री नन्दकिशोर जालान
1954–1962	कोलकाता	स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी (जबलपुर)	श्री नन्दकिशोर जालान
1962–1966	कोलकाता	स्व. गजाधर सोमानी (मुम्बई)	स्व. रघुनाथप्रसाद खेतान
1966–1974	पूना	स्व. रामेश्वरलाल टांटिया (कोलकाता)	स्व. रामकृष्ण सरावगी
			स्व. दीपचन्द नाहटा
1974–1976	राँची	स्व. भंवरमल सिंघी (कोलकाता)	श्री नन्दकिशोर जालान
1976–1979	हैदराबाद	स्व. भंवरलाल सिंघी (कोलकाता)	श्री नन्दकिशोर जालान
1979–1982	मुम्बई	स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार (मुम्बई)	स्व. बजरंगलाल जाजू
1982–1986	जमशेदपुर	श्री नन्दकिशोर जालान	स्व. बजरंगलाल जाजू / श्री रतन शाह
1986–1989	कानपुर	श्री हरिशंकर सिंहानिया (दिल्ली)	श्री रतन शाह
1989–1993	राँची	स्व. रामकृष्ण सरावगी (कोलकाता)	स्व. दुलीचंद अग्रवाल
1993–1997	दिल्ली	श्री नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	स्व. दीपचंद नाहटा
1997–2001	हैदराबाद	श्री नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
2001–2004	कानपुर	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
2004–2006	मुम्बई	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री भानीराम सुरेका
2006–2008	भुवनेश्वर	श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता)	श्री राम अवतार पोद्दार
2008–2010	दिल्ली	श्री नन्दलाल रूँगटा	श्री राम अवतार पोद्दार

अपनी बात:

'मारवाड़ी समाज' - दशा-दिशा

–शम्भु चौधरी
कार्यकारी संपादक

मारवाड़ी समाज का हर व्यक्ति सिर्फ यह सोचता है कि धन कहाँ से लाये, धन आ जाए तो उसे खर्च कैसे किया जाए, न सिर्फ खर्च किया जाए इस खर्च करने से एक साथ कितनी गंदगी समाज में फैला सकते है मानो इस बात की हौड़ लगी हुई है। कि कोई व्यक्ति पान का स्वाद तो लेना अपनी प्रतिष्ठा समझता है पर पान की पीक को जहाँ–तहाँ थूक कर रुमाल से मूँह पोंछ लेना अपना अधिकार।

आज समाज का हर वर्ग, जो संपन्न हो चुके है या जो संपन्न होने की कतार में खड़े है वे अथवा वे जो इन दोनों के बीच में पीस रहे हैं अर्थात मध्यम श्रेणी सब के सब धन के प्रदर्शन की हौड़ में शामिल हैं। यह समस्या सिर्फ बड़े शहरों तक ही अब सीमित नहीं रही, छोटे–छोटे शहरों में भी यह बीमारी फैलती नजर आती है। जहाँ एक तरफ समाज में शादी–विवाह में हो रहे फिजूलखर्ची, आडम्बर, दिखावे का प्रचलन बढ़ते जा रहा है वहीं समाज में एक समस्या बड़ी तेजी से सामने उभर आई है, वह वृद्ध माता–पिता की सेवा का जिम्मा कौन ले? प्रायः यह समस्या हर परिवार की होती जा रही है। बच्चे पुस्तैनी कारोबार से तो विलुप्त हो ही रहे हैं, साथ ही अन्तर्जातीय विवाह की बढ़ती मांग ने समाज में कई घरों के ताने–बाने को तार–तार कर दिया है। आज से २०–२५ साल पहले की ही बात करें तो उस समय परिवार का विघटन सबके सामने एक समस्या थी, संयुक्त परिवार ने जैसे–जैसे अपने कदम एकल परिवार की तरफ बढ़ाए, वैसे–वैसे समाज में बच्चों के संस्कारों में काफी परिवर्तन देखने को मिलता गया। बच्चे माता–पिता, के अलावा किसी दूसरे को पहचानते तक नहीं। कहीं–कहीं तो माता–पिता को भी बच्चे नहीं पहचानते, नौकर, ड्राईवर या शिक्षकों के भरोसे हमारे बच्चे पलते–बिगड़ते हैं। माता–पिता को बच्चे की देखभाल, उनसे हँसने, बात करने तक का समय नहीं रहता, बच्चा जब खुद के घर में ही अकेलेपन का अहसास कर जब बड़ा होने लगता है उस समय तक परिवार के सदस्य उसके लिये पराये से दिखने लगते हैं। मामा–मामी को तो थोड़ा बहुत पहचान भी लेते हैं चाचा–चाची, दादा–दादी तो पहचाने की बात तो बहुत दूर की हो चुकी है। मानो हम रिस्ते के बंधन को संकिर्ण बना चुके हैं इस संकिर्णता ने उनका स्टेटस इतना बड़ा बना दिया है कि कई बार तो समाज के बीच भी बच्चे खुद को खड़ा करने में भी शर्म अनुभव करने लगते हैं।

पिछले 25 सालों से कलकते के मारवाड़ी समाज को नजदिक से देखने का मुझे अवसर मिला। इस शहर ने एक तरफ मारवाड़ी समाज को जहाँ धन–दौलत, शौहरत, मान–सम्मान दिया वहीं शहर के विकास में समाज का योगदान नगण्य मिलता है। समाज का एक वर्ग भले ही बीमार मानसिकता वाली सामाजिक संस्थाओं को माध्यम बनाकर खुद को सम्मानित समझता हो, परन्तु बंगाली समाज में मारवाड़ी समाज की कोई प्रतिष्ठा बनी हो मुझे दिखाई नहीं देतीं, जबकी दूसरे प्रान्तों में मारवाड़ी समाज ने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की है। कोलकाता शहर देश का एक मात्र ऐसा शहर है जहाँ से मारवाड़ी समाज की छवि बनती और बिगड़ती है। परन्तु दुर्भाग्य से इस शहर में रहने वाले मारवाड़ी कि नियत हीं कुछ ओर बयान करती है।

पिछले २५ सालों से कलकते के मारवाड़ी समाज को नजदीक से देखने का मुझे अवसर मिला। इस शहर ने एक तरफ मारवाड़ी समाज को जहाँ धन–दौलत, शौहरत, मान–सम्मान दिया वहीं शहर के विकास में समाज का योगदान नगण्य मिलता है। समाज का एक वर्ग भले ही बीमार मानसिकता वाली सामाजिक संस्थाओं को माध्यम बनाकर खुद को सम्मानित समझता हो, परन्तु बंगाली समाज में मारवाड़ी समाज की कोई प्रतिष्ठा बनी हो मुझे दिखाई नहीं देती, जबकी दूसरे प्रान्तों में मारवाड़ी समाज ने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की है। कोलकाता शहर देश का एक मात्र ऐसा शहर है जहाँ से मारवाड़ी समाज की छवि बनती और बिगड़ती है। परन्तु दुर्भाग्य से इस शहर में रहने वाले मारवाड़ी की नियत ही कुछ ओर बयान करती है।

कोलकाता में सम्मेलन भी इस गंदगी से अछूता नहीं है। हर बार सम्मेलन के पदों को पाने के लिये कोलकत्ते के चन्द मारवाड़ियों के द्वारा कोई न कोई मुकद्दमा सम्मेलन पर होता रहता है। मुझे इस बात का अंदाज आज तक नहीं लगा कि आखिर इस संस्था में ऐसी क्या खास बात है? ब्लैकमेल की गंदी राजनीति ने समाज के अच्छे लोगों को सम्मेलन में आने से रोक रखा है। समाज को दिशा देने वाले इन तथाकथित व्यक्तियों के इस आचरण से समाज को काफी क्षति उठानी पड़ी है। खुद को समाज के हितैशी मानने वाले लोग जब सम्मेलन जैसी संस्था का ही माखौल बना देते हैं तो ऐसे व्यक्ति से समाज क्या अपेक्षा रखेगा?

नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ –

– मो. 09831082737

अध्यक्षीय :

सम्मेलन की जिम्मेदारी बढ़ी है

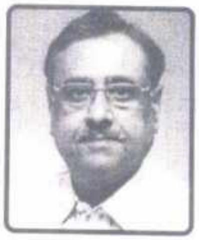

– नन्दलाल रूँगटा , अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सन् १६३५ के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा एक 'व्हाइट पेपर' प्रकाशित किया गया था। उस पेपर के अनुसार "जो देशी राज्यों की प्रजा है उसे ब्रिटिश राज्य की प्रजा के नागरिक अधिकार नहीं दिये जायेंगे। बस इस बील ने प्रवासी मारवाड़ी समाज में एक खलबली मचा दी। कारण स्पष्ट था मारवाड़ी समाज उस समय 'राजपुताना की विभिन्न देशी रियासतों का हिस्सा माना जाता था। बड़ी संख्या में देश के अन्य हिस्सों (जहाँ ब्रितानी हुकुमत चलती थी) में फैल चुके थे। सिर्फ देश भर में एक मात्र राजपुताना क्षेत्र ही ऐसा था जहाँ देशी राज्य कायम था। इस बील से प्रवासी मारवाड़ी समाज के सीधे तौर पर प्रभावित होने की संभावना बन गई।

यह शंका आम मारवाड़ियों में होने लगी कि यदि मारवाड़ी समाज को देशी राज्यों का नागरिक करार कर दिया जाता है तो देश के अन्य भागों में उनकी नागरिकता का अधिकार समाप्त हो जायेगा।

इस तरह के बील ने देश में हलचल पैदा कर दी मारवाड़ी समाज इस बील से अपने आपको सबसे ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगा।

उस समय स्व. ईश्वर प्रसादजी जालान, स्व. काली प्रसादजी खेतान, स्व. बद्रीदासजी गोयनका, स्व. घनश्यामदास बिड़ला, स्व. देवी प्रसाद खेतान ने इस बील की गम्भीरता का अध्ययन किया एवं तय किया कि तत्काल सरकार (ब्रिटिश हुकूमत) के समक्ष समाज की शंका समाधान हेतु प्रश्न उठाया जाए।

ब्रिटिश पार्लियामेंट ने सभी पक्षों की बातों को ध्यान में रखकर एक कमेटी बना दी। परन्तु इस कमेटी में भाग लेने के लिए समाज के सामने बड़ा प्रश्न जो उभरकर आया वह ये था कि विदेश यात्रा कैसे की जाए। चुँकि उस समय समाज का कोई सदस्य विदेश यात्रा करता तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। एक तरफ समाज के जीने-मरने का प्रश्न तो दूसरी तरफ समाज का कानून इसमें अपनी अड़चन पैदा कर रहा था।

मारवाड़ी समाज इस प्रान्तीयता के विष को भाँप चुका था, कि ब्रिटिश साम्राज्य देश को दो भागों में बाँटना चाहता है। जिसका संशोधन कराया जाना जरूरी था। इस समय समाज में 'मारवाड़ी एसोसिएशन' ही एक मात्र संस्था सक्रिय भी परन्तु यह संस्था विलायत यात्रा विरोधी विचार धारा के कारण ज्यादा सक्रिय नहीं हो पाई। तब आनन-फानन में मारवाड़ी ट्रेड एसोसिएशन की ओर से ब्रिटिश सरकार को एक पत्र देकर उससे ब्रिटिश पार्लियामेंट में समाज का पक्ष रखने की अनुमति मांगी गयी। ब्रिटिश सरकार ने अनुमति दे दी। जिसका नेतृत्व बंगाल के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर सर एन.एम सरकार ने किया। उन्होंने विलायत जाकर भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के समक्ष समाज का पक्ष रखा। तब जाकर इस बील में यह लिखते हुए संशोधन कर दिया गया कि – **"मारवाड़ी समाज की कठिनाइयों को दूर करने के लिए यह संशोधन किया जा रहा है।"**

परन्तु संशोधन करते समय यह अधिकार प्रान्तीय सरकारों को दे दिया। अब समाज को संगठित करने की बात तेजी से उभर कर आई एवं सन् १६३५ में "अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन" का गठन हुआ। जिसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर १६३५ में कोलकाता के मुहम्मद अली पार्क में सम्पन्न हुआ। जिसके प्रथम सभापति बने स्व. रायबहादुर रामदेव जी चोखानी।

यह इतिहास की एक छोटी सी घटना थी जिस घटना ने देश में मारवाड़ी समाज को संगठित कर दिया। किसी भी घटना से समाज को सोचने का अवसर प्रदान होता है। पर इस सोच को लागू करने के लिए संगठन की जरूरत हमेशा बनी रहती है। सम्मेलन की भूमिका को नकार कर समाज कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। हम भले ही व्यापार व नौकरी-पेशा में संलिप्त हों, परन्तु संगठन को मजबूत करने के लिए हमें आगे आना ही होगा।

अपनी ७५ सालों की यात्रा में सम्मेलन ने समाज की कई महान हस्तियों का सानिध्य पाया है, कई जन आन्दोलन किये गए। समाज सुधार के कई कार्यक्रम हुए। प्रान्तों को संगठित किया गया। सम्मेलन को गांव-गांव तक पहुँचाया गया। समाज के लोग सम्मेलन से बहुत अपेक्षा रखते हैं। हमारे सामने आज पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक इत्यादि हर प्रकार की चुनौतियाँ हैं। इसलिए वर्तमान में सम्मेलन की ७५ वर्ष पूर्व की घटना से कहीं ज्यादा जरुरत है। हमें इस संगठन को मजबूत करने के लिए तन-मन-धन से आगे आना होगा। सम्मेलन को और सुदृढ़ करने की जरूरत है। पदाधिकारियों की जिम्मेदारी बढ़ी है।

आज हम सबको मिलकर एक साथ कदम बढ़ाने की जरूरत है। ताकि सम्मेलन को और अधिक सुसंगठित किया जा सके। सम्मेलन अपने ७५वें वर्ष में प्रवेश कर **"कौस्तुम जयन्ती"** मनाने जा रहा है। इस अवसर पर अपनी और सम्मेलन के समस्त पदाधिकारियों की तरफ से आप सभी को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ।◆

With Best Compliments From

vikram
vision in action

Vikram India Limited	Leading Manufacturer & Exporter Of Complete Range Of Tea Processing Machinery
Vikram Private Limited	Manufacturer Of DRI (Sponge Iron)
Vikram Solar Private Limited	Leading Manufacturer Of Mono-crystalline & Multi-crystalline Solar Photovoltaic Modules & Turnkey Solution Provider
Chandanpur Tea Co. Private Limited	Tea Processing Factory at Islampur, W. Bengal
Associated Tea Industries	Tea Processing Factory at Tinsukia, Assam
Maruti Textiles Private Limited	Polyester & Synthetic Fabric Processing Plant Pandesara, Surat, Gujrat
Pioneer Textiles Private Limited	Polyester & Synthetic Fabric Processing Plant Pandesara, Surat, Gujrat
BRCM Public School	An English Medium Day & Boarding School Affiliated to CBSE at Bahal, Haryana
BRCM College of Engineering & Technology	An Eminent Engineering College Approved by AICTE, Affiliated to MDU at Bahal, Haryana

'TOBACCO HOUSE'
1, Old Court House Corner Kolkata 700001, India
Phone : +91 33 2230 7299 / 7629 / 9072
Fax : +91 33 2248 4881 / 2479 3526
e mail : info@vikram.in website : www.vikram.in

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

74वां स्थापना दिवस एवं कौस्तुभ जयंती समारोह

बदलते समय के साथ समाज को भी बदलना होगा

- डॉ. सरला बिड़ला

कार्यक्रम का उद्घाटन सुप्रसिद्ध उद्योगपति बसंत कुमार बिड़ला एवं डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला साथ दे रहें है
कौस्तुभ जयंती समारोह के चेयरमैन सीताराम शर्माए, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा,
राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरि प्रसाद कानोडिया व राज के. पुरोहित

कोलकाता २५, दिसम्बर। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से शुक्रवार को ७४वां स्थापना दिवस एवं कौस्तुभ जयंती समारोह का आयोजन स्थानिय विद्या मंदिर प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सुप्रसिद्ध उद्योगपति बसंत कुमार बिड़ला एवं डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला ने किया। इस मौके पर सरला बिड़ला ने बधाई देते हुए कहा कि सम्मेलन पिछले ७४ वर्षे से सामाजिक कार्य कर रहा है। आपने बताया कि आपके पिता स्व. बृजलाल बियाणी भी सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुकें हैं। आपने कहा कि दहेज, पर्दा, बाल विवाह प्रथा आदि के खिलाफ सम्मेलन ने अपनी आवाज उठाई है। आज समाज में आर्थिक विकास के नए – नए आयाम खुल रहे हैं, परंतु यह समझना जरूरी है कि यह विकास किसी एक वर्ग के लिए सीमित नहीं है, बल्कि सभी के लिए है। डॉ. सरला बिड़ला ने अपने औजस्वी भाषण में कहा कि सम्मेलन ने शादी विवाह आदि में होने वाली फिजूलखर्ची रोकने हेतु सदा प्रयास किए हैं आगे भी यह प्रयास जारी रहना चाहिये। आपने शिक्षा प्रसार में सुधार आदि में तेजी लाने की जरूरत देते हुए कहा कि बदलते समय के साथ समाज को भी बदलना होगा। उन्होंने कहा कि समाज सुधार में मेरे पिता बृजलाल बियाणी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। दान देने में सद्भावना होनी चाहिए। आपने आगे कहा कि मारवाड़ी समाज को अपने अर्जित किए धन में ही अपना विकास देखें।

इस अवसर पर कौस्तुभ जयंती समारोह के चेयरमैन सीताराम शर्मा ने कहा कि पहले पर्दा प्रथा के खिलाफ अभियान शुरु किया गया जिसके काफी अच्छे परिणाम मिले हैं। अब तो कई कार्यक्रमों में मुझे पर्दा रखने के लिये बोलना पड़ता है। उन्होंने कहा कि अपनी खुबियों की बदौलत मरवाड़ी समाज आगे बढ़ा है। उन्होंने धन का प्रभुत्व बढ़ने पर चिन्ता प्रकट की तथा फिजूलखर्ची दिखावा के खिलाफ अभियान तेज करने की अपील की।

श्री शर्मा ने कहा कि देश के १४ प्रान्तों में सम्मेलन की शाखाएं संचालित व सक्रिय हैं। कौस्तुभ जयंती वर्ष पर कम से कम ४–५ नये राज्यों में शाखाएं खोलने एवं ७५ सौ नये सदस्यों को सदस्य बनाने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि देश भर में समाज के ७५ मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति देने का भी निर्णय लिया गया है।

राजस्थानी भाषा में दिये अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल रुंगटा नें कहा कि अपनी मेहनत एवं लगन के कारण मारवाड़ी विश्व के हर कोने में बसे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे समाज के बच्चे हर क्षेत्र में आगे बढ़े हैं लेकिन नौकरशाहों में भी सफलता हासिल करनी होगी। उन्होंने कौस्तुभ जयंती वर्ष में ७५ सौ नये सदस्य बनाने की बात कही। आपने अपने भाषण में श्री जुगल किशोर जैथलिया जी के कार्यों की सराहना करते हुए सम्मेलन की तरफ से उनका आभार व्यक्त किया।

बा मण तू मारवाड़ी बोलनो सिखा

स्व. ईश्वरदास जालान अभिनन्दन ग्रंथ के दूसरे संस्करण का लोकार्पण

सुप्रसिद्ध उद्योगपति बसंत कुमार बिड़ला एवं डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला

श्री रुंगटा के मारवाड़ी भाषा में दिये भाषण से प्रभावित होकर श्रीमती सरला बिड़ला पुन: माइक पर आकर बताई कि किस प्रकार कुमारमंगलम का बेटा उन्हें आकर बोलता है – "**बा मण तू मारवाड़ी बोलनो सिखा**" यह सुनते ही सारा सभागार तालियों से गुंज उठा।

इस मौके पर समाज सेवा के लिये श्री पुष्करलाल केड़िया को सम्मानित किया गया। सम्मेलन के महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने माला एवं पगड़ी पहनाई, श्री बसंत कुमार बिड़ला ने रजत मानपत्र एवं नन्दलाल रुंगटा ने मान पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। श्री केड़िया नें कहा कि ४५ वर्षो तक मुझे बिड़लाजी की कम्पनी में काम करने का मौका मिला और वहीं से समाज सेवा की प्रेरणा मिली। उन्होंने सम्मेलन द्वारा और अधिक से अधिक समाज सेवा करने की कामना की। इस मौके पर स्व. ईश्वरदास जालान अभिनन्दन ग्रंथ के दूसरे संस्करण का लोकार्पण भी किया गया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरि प्रसाद कानोड़िया, राज के. पुरोहित, संयुक्त महामंत्री ओमप्रकाश पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री संजय हरलालका ने किया। धन्यवाद दिया श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने।

इस दौरान 'परचम' की ओर से 'देश रंगीला' पर शानदार प्रस्तुति दी गई। हम भारतवासी, भारतवासी हम.... गीत पर कलाकारों ने नृत्य किया। इसके साथ ही युवतियों ने नृत्य कर लोगों का मन मोह लिया।

समारोह में सम्मेलन के पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, श्री नन्द लाल सिंघानिया, श्री सुर्य प्रकाश बागला, श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, श्री शम्भु चौधरी, श्री श्यामलाल जालान, श्री हरि प्रसाद बुधिया, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, श्री जुगल किशोर सराफ व बड़ी संख्या में सम्मेलन के सदस्य उपस्थित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक

'परचम' की ओर से '**देश रंगीला**' पर शानदार प्रस्तुति

कौस्तुभ जयन्ती समारोह में
डॉ. श्रीमती सरलाजी बिड़ला का अभिभाषण

डॉ. श्रीमती सरलाजी बिड़ला भाषण देते हुए

मंच पर उपस्थित सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, कौस्तुभ जयंती के चेयरमैन श्री सीताराम शर्मा व अन्य पदाधिकारियों व उपस्थित सदस्यों मैं सर्वप्रथम हार्दिक बधाई देती हूँ। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती शुभारम्भ समारोह में उपस्थित होकर हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। सम्मेलन ने देश एवं समाज के सामाजिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए ७४ वर्ष की लम्बी यात्रा तय की है। मैं आशा करती हूँ कि सम्मेलन भविष्य में पहले से भी अधिक सकारात्मक भूमिका निभाता रहेगा।

पिछले सात दशकों में सम्मेलन ने पर्दा प्रथा, दहेज, दिखावा, आडम्बर, वधू–दहन, फिजूलखर्ची के विरुद्ध सशक्त आवाज उठायी है। साथ ही सम्मेलन ने स्त्री शिक्षा, समाज–सुधार एवं साक्षरता के अनेक कार्यक्रम अपने हाथ में लिये हैं।

७४ वर्ष पूर्व के मारवाड़ी समाज और आज के मारवाड़ी समाज में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। समाज ने व्यवसाय, उद्योग, शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति आदि क्षेत्रों में आशातीत सफलता प्राप्त की है। विशेषकर समाज की महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सफलता प्राप्त की है। सम्मेलन ने हमेशा से आत्मंथन कर समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है। मुझे लगता है कि सम्मेलन का यह भागीरथ प्रयास सम्मेलन की सफलता का मूल मंत्र है।

समाज के कई अति प्रतिष्ठित पूर्व अध्यक्षों ने सम्मेलन को नेतृत्व प्रदान किया है। १९५३ में सम्मेलन के सप्तम अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए सेठ गोविन्ददासजी ने कहा था– "सम्मेलन के द्वारा मैं मानव जाति और भारत राष्ट्र की सेवा कर सकूंगा। हमें बदलते हुए समाज के साथ बदलना होगा। आज के युग में पर्दा और दहेज जैसी कुप्रथाएं सहन नहीं की जा सकती। युवकों पर तो सामाजिक और मानवीय सुधार लाने का पूरा भार है।"

सामाजिक सुधार की दिशा में बृजलालजी बियानी ने बहुत ही अहम् भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने राजस्थानी समाज को राजनीति के नजदीक लाने की प्रक्रिया को तेज किया और राजस्थानी समाज को समाज सुधार एवं समरसता का मंत्र दिया।

सम्मेलन की हीरक जयंती समारोह में पधारे भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने कहा था– "व्यवसाय के साथ–साथ मारवाड़ियों का एक अन्य पक्ष भी है। और वह है समाज सेवा का महत्वपूर्ण पक्ष। अत्रि मुनि ने 'श्रीस्मृति' में लिखा है– "दान धनं वार्ता भजन चेति वैविश:" अर्थात दान देना, अध्ययन करना, व्यापार करना तथा यज्ञ करना वैश्य के प्रमुख कर्त्तव्य है। मैं यह मानती हूं कि मारवाड़ी समुदाय अपने इन कर्त्तव्यों का यथासंभव निर्वाह कर रहा है।"

हमें अपनी दान देने की इस भावना को आज भी बनाकर रखना है। अर्जित किये हुए धन में ही अपना कल्याण देखा जाए।

हमारा देश विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। आर्थिक नीतियों के उदारीकरण के फलस्वरूप औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के नये–नये रास्ते खुल रहे हैं। यह विकास कुछ व्यक्तियों या कुछ समुदायों के लिये नहीं होकर जन–जन के विकास के लिये होना चाहिए।

सम्मेलन के प्रतीक चिन्ह में लिखा वाक्य– "म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति" बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य देश का विकास एवं देश की रक्षा होना चाहिए। राष्ट्र के विकास में ही सबका विकास है। आज सम्मेलन के ७४वें वर्ष के मौके पर समाजसेवा के क्षेत्र में अवर्णनीय योगदान दे रहे श्री पुष्करलाल केड़िया का सम्मान कर सम्मेलन ने न सिर्फ अपने दायित्व का निर्वहन किया है बल्कि समाज के लोगों को एक संदेश भी दिया है। श्री केड़िया समाजसेवा के साथ–साथ आदर्श व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी एवं प्रकाशनों के माध्यम जो जन–जागरुकता अभियान चलाए हुए हैं उसके लिए वह साधुवाद के पात्र हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े श्री जोधराजी लड्ढा माहेश्वरी समाज में अपनी अहर्निश सेवा प्रदान कर रहे हैं। मेरी शुभकामना है कि वे अपने सामाजिक यज्ञ की इस भावना को और अधिक सफलता के साथ सम्पादित करते रहें। मैं आभारी हूं कि आज समाज के इस स्वर्णिम समारोह के मौके पर हमें शामिल होने का अवसर प्रदान किया गया।

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार

निष्काम कर्मयोगी

श्री पुष्करलाल केडिया

सुपरिचित समाजसेवी श्री पुष्करलाल केडिया को सम्मानित करते हुए।

सुपरिचित समाजसेवी श्री पुष्करलाल केडिया सेवा की प्रतिमूर्ति हैं। दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, सैकड़ों संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित एवं भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक स्वरूप एवं राष्ट्र की नई पीढ़ी के चरित्र निर्माण हेतु दर्जनों से अधिक पुस्तकों के मूल चिन्तक एवं लेखक श्री पुष्करलाल केडिया का जन्म राजस्थान के गुढ़ा गौड़जी (जिला : झुंझुनूं) में १७ जुलाई १९२८ को हुआ। कोलकाता आने पर १० वर्ष की अल्पायु में ही विद्यालय में 'कब' के रूप में 'स्काउट आन्दोलन' से जुड़ गये और यहीं से शुरू हुई निष्काम सेवा की यह अविरल यात्रा। स्काउटिंग में विभिन्न पदों पर आसीन रहने के बाद सन् १९६७ में भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स पश्चिम कोलकाता के डिस्ट्रीक्ट कमिश्नर एवं सन् १९८५ में सहायक राज्य कमिश्नर (पं० बंगाल) के पद पर पहुँचे। परहित चिंतन एवं मानव सेवा का पर्याय बन चुके श्री पुष्करलाल केडिया कोलकाता की कई शीर्षस्थ सेवा संस्थाओं से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

अपना पूरा जीवन स्काउट के जरिए समाज को समर्पित कर देने वाले श्री पुष्करलाल केडिया ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता हैं। जिन्होंने प्रतिक्षण समाज सेवा की चाह को सर्वोपरि रखा।

श्री पुष्करलालजी केडिया के तप: पूत व्यक्तित्व में यही सत्य अपनी समूची प्रखरता के साथ विद्यमान है। पिछले २५ वर्षों से शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद जीवन की अष्टदशकीय सेवा यात्रा में भी उनकी क्रियाशीलता, ऊर्जा और चिन्तन पर आगे रहने की विलक्षण दृढ़ता पूर्ववत् देखकर नई पीढ़ी में चेतना का संचार होता है। उनके मानस की त्रिवेणी आज भी सद्प्रवृत्तियों और जीवन के उच्चतम आदर्शों की पवित्र धाराओं से गरिमामण्डित है।

जीवन्त प्रतीक आज कोलकाता के बड़ाबाजार अंचल में अमृत कलश के समान सुशोभित श्री विशुद्धानन्द हास्पिटल एण्ड रिसर्च इंस्टीच्यूट है। आप उसके कई दशकों से प्रधान सचिव हैं।

श्री केडिया जी के मार्गदर्शन में एवम् श्री केडिया जी द्वारा स्थापित 'मनीषिका' आज बालक–बालिकाओं एवं बुद्धिजीवियों के मध्य सम्पूर्ण राष्ट्र में अपना स्थान बना चुकी है। आप इस संस्था के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता प्रमाणित करने के लिए आपने अनेकों पुस्तकों का सृजन किया है। इन पुस्तकों का अंग्रेजी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। नई पीढ़ी में चरित्र निर्माण एवं उसके सम्यक विकास हेतु आप प्रदर्शनियों, दृश्य श्रव्य माध्यमों एवं सेमिनारों के द्वारा एक अपूर्व चेतना जाग्रत कर रहे हैं। इसके कई प्रकाशन राष्ट्रीय स्तरपर समादृत हो चुके हैं।

आपके चिन्तनपूर्ण लेखन पर विक्रमशिला विद्यापीठ ने पी.एच.डी. की मानद उपाधि प्रदान की। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के कारण जहाँ पं.बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री वीरेन जे.शाह ने सेवा सम्मान में प्रदान किया वहीं महानगर सहित देश के शीर्ष सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं ने आपको अभिनंदित कर स्वयं को धन्य बनाया।

आज दिनांक २५ दिसम्बर २००९ को कोलकाता में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन आपको ''भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार'' से सम्मानित करते हुए काफी हर्ष महसूस करता है। हम ईश्वर से आपके शतायु होने की प्रार्थना भी करते हैं।•

सम्मेलन की सात दशकीय यात्रा

– सीताराम शर्मा
चेयरमैन, कौस्तुभ जयंती
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन का जन्म १९३५ में सामाजिक विभेदों के संक्रमण काल में सनातनी दल के तत्कालीन प्रमुख नेता श्री रामदेव चोखानी के सभापतित्व में हुआ। सम्मेलन के आरम्भिक वर्षों में सनातनी एवं सुधारक दलों के आपसी सम्बन्धों में मिठास को बनाये रखने के लिए समाज सुधार के विषयों को अपने उद्देश्य से अलग रखा। जिससे कि आपसी विवाद न उत्पन्न हो। इस समझौते की नीति का विरोध भी हुआ एवं बसन्तलाल मुरारका, सीताराम सेकसरिया, मूलचन्द अग्रवाल, प्रभुदयाल, हिम्मतसिंहका जैसे सक्रिय कार्यकर्ताओं ने नाराज होकर मारवाड़ी कार्यकर्ता सम्मेलन के नाम से एक नये सम्मेलन का गठन कर डाला। लेकिन कुछ वर्षों बाद इसे बन्द कर दिया गया एवं सभी सम्मेलन से जुड़ गये।

श्री नन्दकिशोर जालान एवं स्वर्गीय दीपचन्द नाहटा की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने मुझे बेहद प्रभावित किया। कोलकाता एवं बंगाल की शाखाएं अपने निरन्तर विवाद एवं झगड़ों से एक तरफ मुझे निराश करती थी तो प्रांतीय शाखाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन के प्रति आदर भाव एक सममेलन से अपेक्षाएं मुझे प्रेरित करती रही। गांव, जिलों, कस्बों में सम्मेलन एवं सम्मेलन पदाधिकारियों को जो प्रेम, सम्मान दिया जाता है वह अतुलनीय है। मुझे सम्मेलन ने जो प्यार, सहयोग एवं समर्थन दिया है वह मैं भुला नहीं सकता।

मैंने जब २००६ में भुवनेश्वर में आयोजित २०वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया, उस समय के अपने भाषण में मैंने सबसे अधिक जोर उच्च शिक्षा एवं राजनैतिक चेतना पर दिया था। यह दिलचस्प है कि १९३७ में सम्मेलन ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पांच विभाग बनाये, उनमें राजनैतिक विभाग एवं शिक्षा विभाग प्रमुख थे। राजनैतिक विभाग के भूरामल अग्रवाल एवं शिक्षा विभाग के चौथमल सराफ मंत्री थे।

प्राय: यह प्रश्न किया जाता है कि मारवाड़ी सम्मेलन क्या और क्यों है, इसका बहुत ही सही उत्तर १९४३ में अधिवेशन अध्यक्ष स्व. रामगोपाल मोहता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दिया। "अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंच पर हम लोग सभी जाति, उपजाति एवं फिरकों के राजस्थान निवासी मारवाड़ी कहलाने वाले लोग बिना किसी भेदभाव के एकत्रित होकर सामूहिक रूप से अपना संगठन करके अपनी सर्वांगीण उन्नति करते हुए अपने उचित स्वत्वों और अधिकारों की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध हो रहे हैं।"

स्वतंत्रता के उपरान्त बदलती परिस्थितियों में समाज को रुढ़िग्रस्त और हानिप्रद प्रथाओं से बाहर निकालने की आवश्यकता सर्वोपरि लगी और सामाजिक विषयों को सम्मेलन के उद्देश्यों में सशक्त कर लिया गया। समाज सुधार एवं समरसता प्रमुख कार्यक्रम के रूप में उभर कर आये। १९४७ में स्व. बृजलाल बियाणी ने छठे अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि "मारवाड़ी भाई जहां रहते हैं वहां की जनता से समरस हो जायें, वहीं अपनी जन्मभूमि राजस्थान को सम्पूर्ण विस्मरण न करें। वर्तमान समय में सारे सुधारों में पर्दा निवारण को मैं प्रथम स्थान देता हूँ। पर्दे के कारण समाज की स्त्रियों की स्थिति ठीक है। स्त्रियों की प्रगति के अभाव में सारे समाज की प्रगति कुण्ठित है।"

मुझे १९९३ में संयुक्त महामंत्री के रूप में सम्मेलन से सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री नन्दकिशोर जालान एवं स्वर्गीय दीपचन्द नाहटा की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने मुझे बेहद प्रभावित किया। कोलकाता एवं बंगाल की शाखाएं अपने निरन्तर विवाद एवं झगड़ों से एक तरफ मुझे निराश करती थी तो प्रांतीय शाखाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन के प्रति आदर भाव एक सममेलन से अपेक्षाएं मुझे प्रेरित करती रही। गांव, जिलों, कस्बों में सम्मेलन एवं सम्मेलन पदाधिकारियों को जो प्रेम, सम्मान दिया जाता है वह अतुलनीय है। मुझे सम्मेलन ने जो प्यार, सहयोग एवं समर्थन दिया है वह मैं भुला नहीं सकता। महामंत्री, उपाध्यक्ष एवं २००६ में राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से निर्वाचन इसी प्रेम एवं समर्थन के गवाह हैं।

सम्मेलन समाज सुधार, समरसता, राजनैतिक चेतना, उच्च शिक्षा, राजस्थानी भाषा, आदि क्षेत्रों में एक सक्रिय एवं सार्थक भूमिका निभा रहा है। एक वर्ष व्यापी कौस्तुभ जयंती समारोह का शुभारम्भ २५ दिसम्बर २००९ को बिड़ला दम्पति बाबू बसंत कुमारजी बिड़ला एवं परम विदूषी डॉ. श्रीमती सरलाजी बिड़ला के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कौस्तुभ जयंती समिति की अध्यक्षता का भार सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने कृपा पूर्वक मुझे सौंपा है। हम सभी को मिलकर इस महान एवं महत्वपूर्ण उत्सव का पालन करना है।◆

क्रूर सामाजिक विसंगति है : वृद्धाश्रम

– रामअवतार पोद्दार, रा. महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

हमारे समाज में व्याप्त आधुनिकता की दौड़ और पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण से इतनी सारी विसंगतियाँ पनपी हैं, जिनसे हमारे समाज की सदियों से स्थापित प्रतिष्ठा पर कुठाराघात हो रहा है। जो मारवाडी समाज मिलनसारिता और उदारता का पर्याय माना जाता था उसमें अब द्वेश और संकीर्णता की सोच का विस्तार हुआ है। निसन्देह यह बड़ी चिन्ता का विषय है। हमारे पूर्वजों ने भारत के विभिन्न नगरों में उपार्जन के लिए जाकर धैर्यशीलता, कठोर परिश्रम, व्यवहार कुशलता से व्यवसाय क्षेत्र में उन्नति और प्रतिष्ठा प्राप्त की तो साथ ही पर भूमि में लोकोपकार हेतु ना–ना तरह के सेवा प्रकल्प स्थापित व संचालित कर अपनी सहिष्णुता का परिचय देते हुए जो यश व ख्याति अर्जित की आज की पीढ़ी की उच्छश्रृंखलता ने उसको प्रश्नवाचक में खड़ा कर दिया है। नतीजतन समाज में अन्तर्जातीय विवाह, तलाक, वधू हत्या, दहेज उत्पीड़न, कन्या भ्रूण–हत्या की घटनाओं में दिनों–दिन वृद्धि ही हो रही हैं।

इसी कड़ी में परिवार के टूटने का आधार अथवा कारण बन रहे है – वृद्धाश्रम। जो समाज स्कूल, धर्मशाला, अस्पताल, मंदिर, कूंए–बावड़ी आदि बनवाने के लिए प्रसिद्ध रहा है, वही समाज अब वृद्धाश्रम की स्थापना कर रहा है, उनको संचालित कर रहा है। अगर देखा और सोचा जाए तो हर कोण से एक क्रूर सामाजिक विसंगति है– वृद्धाश्रम। हमारी संस्कृति, परम्परा और सामाजिक ढांचे में आये इस बदलाव को क्या कहा जाए? इस पर आज पूरे समाज को गहराई से विचार करना चाहिए।

हमारे धर्मग्रन्थों और एतिहासिक ग्रन्थों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है, जहाँ सन्तान ने माँ–बाप की सेवा करने, उनकी आज्ञा पालन में सम्पूर्ण जीवन अर्पित किया है, लेकिन कहीं ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है कि किसी पुत्र ने पिता को घर से निकाला हो और खुद गृहस्वामी बन गया हो। यह परम्परा तो मुगल शासनकाल की रही है कि पुत्र ने पिता को कैद किया और खुद राजा बन गया। ऐसी दारुण दु:खदायक परम्परा हमारे समाज का हिस्सा कैसे बन गई यह भी विचार करने वाली बात है। साथ ही इस बात पर भी विचार किया जाना बहुत जरूरी है कि घर के बुजुर्ग को वृद्धाश्रम में भेजने की दोषी क्या केवल आज की संतानें ही है? जहाँ तक मेरा मत है कि कोई भी सन्तान कभी भी यह नहीं चाहेगी कि उसका जनक उससे अलग हो जाए। तो फिर उनको वृद्धाश्रम में क्यूं जाना पड़ रहा है? इसके मूल में मुख्य रूप से दो बातें हो सकतीं हैं।

१. हर पिता अपने बच्चों को संस्कारिक करने के लिए उन्हें पूर्णरूप से अनुशासन में पालना चाहता है। बाल्यावस्था तक तो यह अनुशासनीय अंकुश चल सकता है पर जब पिता के कद के बराबर पुत्र का कद हो जाता है उस समय भी पिता अगर यही चाहे कि आज भी पुत्र से कहूं उठ तो उठे और बैठ तो वह बैठे तो इस आधुनिक युग में पुत्र इसे स्वीकार नहीं कर पाता है। यह तकनीकी युग है। जीवन के मापदण्ड बदल गए हैं। हर बुजुर्ग अगर युग की मांग समझते हुए अपने पुत्र के साथ मित्रवत व्यवहार करे और उसकी व्यक्तिगत जिन्दगी में दखल न देकर केवल अपने अनुभवों से उसका मार्गदर्शन करते हुए उसे जीवन संघर्ष में विजयी होने की कला सिखाए तो घर में कभी भी ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं होगी कि औलाद अपने माता–पिता को घर से अलग कर वृद्धाश्रम भेज दें।

२. कहीं–कहीं इसके मूल में ऐसी बात भी हो सकती है कि घर में (जैसा कि आम तौर पर सुनने में आता है) सास–बहू की आपसी अनबन गृह–कलह का आधार बन जाती है। गृह कलह का रूप व्यापक हो जाने पर शान्ति से बाकी जीवन व्यतीत करने के लिए घर का बुजुर्ग स्वय ही वृद्धाश्रम में रहने का निर्णय ले लेता है।

संक्षेप में साफ–साफ यही कहा जा सकता है कि थोड़ी सी अह भावना से मतभेद हो जाता हैं फिर वही मतभेद उसे मन भेद तक ले आता है। किसी कवि ने कहा है–

रिश्तों का बतला रहा, कड़वा सत्य सखेद।
कहीं हुआ मतभेद तो, हुआ कहीं मन भेद।।

आपसी मतभेदों को मिटा देने पर स्नेह और अपनत्व का वातावरण घर में बनेगा जो परस्पर पारिवारिक जुड़ाव बनाए रखने में सहायक सिद्ध होगा, अहम भूमिका अदा करेगा। अगर ऐसा होता है तो घर के बुजुर्ग ससम्मान अपने घर में ही आनन्द के साथ अपनी जीवन–यात्रा पूर्ण करेंगे।

समाज ने अगर समय रहते इस पक्ष पर गंभीरता से ध्यान न दिया तो कुछ सालों बाद कदाचित् यह हालात हों कि हर छोटे–बड़े नगर में एक वृद्धाश्रम संचालित करना जरूरी हो जाएगा। अभी भी ज्यादा देर नहीं हुई है। हमको समाज की इस क्रूर विसंगति पर अब विराम लगाना है। अन्यथा आगत समय में यह विसंगति परिवारों को तितर–बितर तो करेगी ही, हमारी संस्कृति व परम्पराओं को न केवल गहन अन्धकार की गर्त में धकेल देगी बल्कि कलंकित कर देगी। आनेवाला समय पूरे मारवाड़ी समाज को शंसय की दृष्टि से देखेगा। अत: हमें अविलम्ब वृद्धाश्रमों की परम्परा पर रोक कर घर के बड़ों को घर में ही आदरयुक्त स्थान देकर उनके आशीषों के हाथ अपने शीश पर रखने की सोच को विकसित करना है। इसी में समाज का हित है, गरिमा भी।◆

सम्मेलन के एक वर्ष व्यापी कार्यक्रमों की झलक

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार की रिपोर्ट

दिनांक 4 जुलाई 09 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की द्वितीय बैठक कॉनक्लेभ हॉल में

सर्वप्रथम मैं सम्मेलन के सभी माननीय सदस्यों को आने वाले वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का वर्तमान सत्र अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा द्वारा दिल्ली में २०–२१ दिसम्बर २००८ को पदभार ग्रहण करने एवं नये पदाधिकारियों का मनोनयन करने के साथ हुआ। तब से लेकर अभी तक एक वर्ष व्यापी सम्मेलन के कार्यों का लेखा–जोखा मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय के आह्वान पर सम्मेलन की सांगठनिक और आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए सदस्यता बढ़ाओ अभियान शुरु किया गया। जिसके तहत सम्मेलन के अब तक नये ११३ संरक्षक, ११० आजीवन, १२४ नये विशिष्ठ सदस्य बने हैं। सम्मेलन के संविधान के अनुसार, संरक्षक व आजीवन सदस्यों से प्राप्त राशि में से ६४ लाख ५० हजार रुपयों को विभिन्न बैंकों में फिक्स डिपाजिट करा दिया गया है।

गत १ फरवरी २००९ को सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारण अखिल भारतीय समिति की बैठक उड़ीसा के सम्बलपुर में स्थित दुर्गा मंगलम् सभागार में **उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के सफल आतिथ्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पूर्व सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ को सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने दुपट्टा व पगड़ी पहनाकर पदभार ग्रहण करवाया। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मेलन के अधिवेशन में पारित सदस्यता सम्बन्धी संवैधानिक संशोधनों के संदर्भ में सभी प्रांतीय सम्मेलनों से अपने–अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने की अपील की।

गत् २ मार्च २००९ को नव गठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक कोलकाता चेम्बर ऑफ कॉमर्स सभागार, पार्क स्ट्रीट में सम्पन्न हुई। उक्त बैठक में अध्यक्ष श्री रुँगटा ने सम्मेन की स्थायी कमेटी २० लोगों के नामों की घोषणा की। इसके अलावा परामर्शदात्री, उच्च शिक्षा, सदस्यता, राजनैतिक चेतना तथा राजस्थानी भाषा कमेटी के अध्यक्षों के नामों की भी घोषणा की गई।

२० मार्च २००९ को नव गठित स्थायी समिति की प्रथम बैठक सम्मेलन भवन, कोलकाता में हुई। बैठक में अध्यक्ष श्री रुँगटा ने केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत, सम्मेलन को सुचरू रूप से चलाने हेतु फण्ड संग्रह, सदस्यता अभियान चलाने पर जोर दिया। इसके अलावा उन्होंने उपस्थित सदस्यों से आग्रह किया कि प्रत्येक माह समाज सुधार से सम्बन्धित कार्यक्रम व गोष्ठियां आयोजित की जाएं ताकि समाज में जागरूकता आये।

१९ अप्रैल २००९ को सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा सम्मेलन भवन, कोलकाता में सम्पन्न हुई। जिसमें सम्मेलन के वित्तीय वर्ष २००६–२००७ तथा २००७–२००८ के आय–व्यय का ब्यौरा सर्वसम्मति से पास किया गया। इस मौके पर लेखा परीक्षक की नियुक्ति भी की गई।

३० अप्रैल २००९ को महाराष्ट्र सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री एवं **महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के अध्यक्ष श्री रमेश चन्द गोपीकिशन बंग के सम्मान में गोष्ठी एवं अपरान्ह भोज का आयोजन 'तीज', रसल स्ट्रीट, कोलकाता में किया गया।

३० मई २००९ को स्थायी समिति की द्वितीय बैठक सम्मेलन भवन, कोलकाता में हुई।

सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति के सदस्यों के चुनाव हेतु १३ जून २००९ को सम्मेलन भवन में चुनाव अधिकारी सीए संजीव कड़ेल की देखरेख में मतों की गणना हुई और उपस्थित सदस्यों के बीच चुनावी नतीजे घोषित किये गये।

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की द्वितीय बैठक ४ जुलाई २००९ को कान्क्लेव, आचार्य जगदीश चन्द्र बोस रोड, कोलकाता–१७ में सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष ने बदलते समय के अनुसार सम्मेलन के संविधान में भी संशोधन पर बल दिया। संविधान संशोधन हेतु श्री नन्दलाल सिंघानिया की अध्यक्षता में एक कमेटी भी बनाई गई, जिसमें सर्वसम्मति से श्री सीताराम शर्मा, श्री रतन शाह, श्री गोपाल अग्रवाल, श्री गोविन्द डालमिया, श्री कमल नोपानी, डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका का नाम कमेटी हेतु प्रस्तावित व पारित हुआ। यह कमेटी संविधान संशोधन पर अपनी रिपोर्ट देगी।

समाज में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से ११जुलाई २००९ को **''दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी लिमिटेड हॉल, कोलकाता''** में **''अन्तर्जातीय विवाह–कुछ अनुभव''** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अन्तर्जातीय विवाहित जोडों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये। सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा रविवार, २६ जुलाई २००९ को मर्चेण्ट ऑफ कामर्स, कोलकाता में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन का २००८–२००९ का वार्षिक लेखा–जोखा, जो कि हिसाब परीक्षक द्वारा जांचा गया था को सर्वसम्मत्ति से पास किया गया इसके अलावा हिसाब परीक्षक के रूप में श्री पी. के लिल्हा की फिर से नियुक्ति की गई।

८ अगस्त २००९ को स्थायी समिति की तृतीय बैठक राष्ट्रीय महामंत्री के ब्रोबर्न रोड स्थित कार्यालय में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में व्यापक विचार–विमर्श के पश्चात सम्मेलन कार्यालय में नि:शुल्क आँख परीक्षण, दवा व चश्मा वितरण तथा जरूरतमंदों का नि:शुल्क आँख ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया गया।

२२ अगस्त २००९ को सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय, कोलकाता में **''उभरती प्रतिभाएं–गिरते मूल्य, किसको श्रेय–कौन दोषी''** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सम्मेलन के पदाधिकारियों के अलावा स्कूल के पदाधिकारियों, प्रधानाध्यापक, शिक्षिका तथा छात्राओं ने अपने विचार रखे।

६ सितम्बर २००९ को सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में प्रथम नि:शुल्क आँख परीक्षण शिविर लगाया गया जहाँ २७२लोगों का नेत्र परीक्षण डॉ. रजनी सराफ एवं उनकी टीम ने किया। शिविर में ६० लोगों के नि:शुल्क दवा दी गई एवं ऑपरेशन योग्य पाये गये करीब ६० लोगों का ईसीजी, ब्लड शुगर तथा प्रेशर जाँच कर उनकी आँखों का नि:शुल्क ऑपरेशन डॉ. रजनी सराफ के निजी नर्सिंग होम में कराया गया। इसके अलावा १८ सितम्बर को १५०लोगों को नि:शुल्क चश्मा प्रदान किया गया।

सम्मेलन के वर्तमान सत्र की तृतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक बुधवार, ७ अक्टूबर २००९ को हिन्दुस्तान क्लब के गैलक्सी हॉल, कोलकाता में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा ने बताया कि एक–दो प्रान्तों को छोड़कर सभी जगह चुनाव हो गये है, जहां नहीं हुए है उन्हें पत्र भेजा गया है। कौस्तुभ जयंती के बजट एवं फण्ड के सम्बन्ध में आपने कहा कि बजट कार्यक्रमों के अनुसार तय होगा और इसके लिए समाज विकास में विज्ञापन रूपी सहयोग लिया जायेगा।

कौस्तुभ जयन्ती कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि २५ दिसम्बर २००९ से २५ दिसम्बर २०१० तक कौस्तुभ जयंती के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। आपने बताया कि कौस्तुभ जयंती वर्ष के दौरान राष्ट्रपति श्री मती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित करने तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट

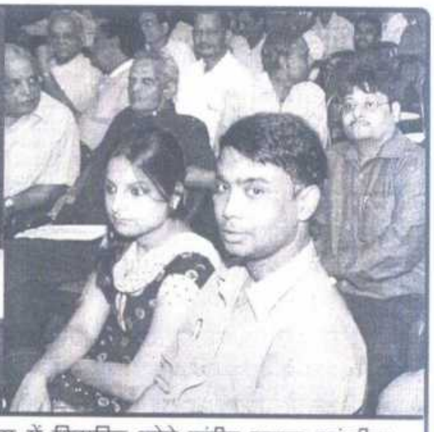

श्रीमती उमा झुनझुनवाला माइक पर अपने अनुभव रखती हुई, पास में विवाहित जोड़े संदीप बजाज एवं रीता बजाज (यादव)। सामने मंच पर दायें से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया।

सम्मेलन के पदाधिकारियों के साथ मानव अधिकार आयोग के चेयरमैन जस्टिस श्री श्यामल सेन ने बिहार बाढ़ राहत सामग्री भरी ट्रक की पहली खेप को हरी झंडी दिखाकर कोलकाता से त्रिवेणीगंज के लिये रवाना किया

व्यक्तियों का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान करने की योजना है।

१३ सितम्बर २००९ को अखिल भारतीय समिति की बैठक भारतीय सांस्कृतिक संसद सभागार, साल्टलेक, कोलकाता में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सफल आतिथ्य में सम्पन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मेलन को सांगठनिक व आर्थिक रूप से और मजबूती प्रदान करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि प्रत्येक मारवाड़ी परिवार से एक व्यक्ति को सम्मेलन से जुड़ना चाहिए। आपने राजस्थानी–हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष के प्रकाशन की इच्छा जताई। विवाह समारोह में मद्यपान, सड़कों पर नाच–गान, तलाक परिवारों में टूटन, शादी–विवाह में बढ़ते आडम्बर पर चिंता जताई और अंकुश लगाने की जरूरत पर बल दिया।

३० अक्टूबर २००९ को उच्च शिक्षा समिति की बैठक समिति के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल की अध्यक्षता में उनके कार्यालय में हुई। बैठक में उच्च शिक्षा के लिए सहयोग हेतु आये हुए तीनों आवेदनों पर विचार विमर्श किया गया। अंत में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि जो आवेदन आये हैं उनमें से कोई भी आवेदन विचार करने के योग्य नहीं हैं। आगामी दिनों में आने वाले आवेदनों हेतु सम्मेलन की भूमिका तय की गई तथा अपील की सार्थकता तय करने हेतु नियम तय किये गये। इसके अलावा उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों से ५ लाख २३ हजार रूपयों के सहयोग का आश्वासन प्राप्त हुआ।

बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि फिलहाल सम्मेलन उच्च शिक्षा का अपना कोई कोष नहीं बनायेगा और सहयोगी की भूमिका का निर्वाह करता रहेगा। बैठक में यह निर्णय हुआ कि उच्च शिक्षा से सम्बन्धित आवेदन आने और समिति की बैठक में उन आवेदनों के खरा उतरने पर कमिटमेंट किये सदस्यों से सम्पर्क कर आवेदनकर्ता को सम्मेलन के माध्यम से सहायता उपलब्ध करवाई जायेगी। जो आवेदन आयेंगे उनमें देखा जायेगा कि आवेदनकर्ता ने बैंक से लोन लिया है कि नहीं और अगर लिया है तो कितना लिया है, उसने अपने पास से कितने रूपये दिये है तथा क्या उसको वास्तव में इस हेतु रूपयों की जरूरत है। इसके अलावा इंस्टीच्यूशन, जहां छात्र या छात्रा ने दाखिला लिया है उसके सम्बन्ध में भी जांच पड़ताल की जायेगी।

आयला प्रभावित क्षेत्र (पश्चिम बंगाल) में मानवीय सहायता के लिए राहत सामग्री भेजने का निर्णय लिया गया एवं निर्णय के अनुसार नमक, चिड़वा गुड़, कपड़े, छाता आदि भरकर दो ट्रकों में लोड राहत सामग्री को निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर भारत सेवाश्रम संघ के कैम्प (सुन्दरवन) के लिए रवाना किया।

३० अक्टूबर को ही राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में स्थायी समिति की तृतीय बैठक आयोजित हुई।

३० अक्टूबर २००९ को वृद्धाश्रम एवं टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल, कोलकाता में किया गया। जिसमें अध्यक्ष ने हमारे समाज की संस्कृति में वृद्धाश्रम की सोच को नकारा।

२१ नवम्बर २००९ को होटल विक्ट्रैप, १बी, विक्टोरिया टैरेस, कोलकाता–१७ में **संविधान संशोधन कमेटी** की बैठक कमेटी के अध्यक्ष श्री नन्दलाल सिंहानिया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार व श्री संजय हरलालका, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, **बिहार प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन** के अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, **पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन** के अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर हरलालका, उत्कल प्रदेशिक मारवाडी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ व सचिव श्री विजय केड़िया, **पश्चिम बंग प्रदेशिक मारवाडी सम्मेलन** के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह सहित कमेटी के अन्य सदस्य उपस्थित थे। बैठक में एकल सदस्यता, सभी प्रान्तों में अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन के नाम से कार्य करने सहित संविधान की अन्य कई धाराओं में संशोधन पर सदस्यों ने अपने विचार रखे।

गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस पर सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोडिया ने झंडोत्तोलन किया।

सम्मेलन के १३वें प्रान्त के रूप में **कर्नाटक प्रदेशिक मारवाडी सम्मेलन** के नाम से कर्नाटक शाखा का गठन ४ सितम्बर २००९ को हुआ।

कोलकाता नगर निगम में सम्मेलन भवन के पते २५ए और २५बी को लेकर जो समस्या थी उसका निराकरण हो गया है। निगम ने सम्मेलन भवन का नम्बर २५ए, आमहर्स्ट स्ट्रीट निर्धारित कर दिया है।

सम्मेलन को आयकर की धारा ८०जी का प्रमाणपत्र मिल गया है।◆

परिचर्चा :

वृद्धाश्रम एवं टूटते परिवार

बायें से राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया

गत् सप्ताह दिनांक ३१ अक्टूबर २००९ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने एक विचार गोष्ठी "वृद्धाश्रम एवं टूटते परिवार" का आयोजन कोलकाता स्थित 'दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी' के सभागार में किया गया। जिसके प्रमुख वक्ताओं में वृद्धाश्रम चलाने वाले श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार और 'राष्ट्रीय महानगर' के संपादक श्री प्रकाश चण्डालिया, वृद्धाश्रम में रहने वाले एक वक्ता श्री माता प्रसाद गुप्ता एवम् लेडी ब्रबोन कॉलेज की छात्रा सुश्री शैली शाह जिसने इस क्षेत्र पर एक प्रोजेक्ट तैयार किया था, ने भी भाग लिया। विषय प्रवर्तन किया श्री सीताराम शर्मा ने। श्री शर्मा ने कहा कि कुछ दिन पूर्व एक मित्र ने उनसे कहा कि सम्मेलन हमेशा विवादित विषयों पर ही परिचर्चा क्यों करता है? पहले आपने अन्तर्जातीय विवाह पर भी परिचर्चा की। आज आप लोग वृद्धाश्रम पर करने जा रहे हैं तो हमने कहा कि सम्मेलन जब जिस विषय पर प्रश्न उठाता है वे प्रश्न वर्तमान में विवादित हो सकते हैं परन्तु ये समस्या समाज के साथ जुड़ चुकी है। जिसे समाज न चाहते हुए भी स्वीकर करने लगा है। बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा जैसे कई विवादित विषय सम्मेलन ने पिछले समय में उठाये थे, जिस समय सम्मेलन ने इन बातों की चर्चा की उस समय उसका काफी विरोध हुआ, परन्तु आज ये बातें समाज ने स्वीकार कर ली। आज ये प्रश्न विवादित नहीं रहे।

आपने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि इसी प्रकार सम्मेलन आज जिन प्रश्नों पर बातचीत कर रहा है इसके परिणाम आनेवाली पीढ़ी तय करेगी। हमारे यहाँ दहेज का, तलाक का प्रश्न आया। समाज में जब हम मानते हैं कि यह प्रश्न विवादित है तो सम्मेलन की यह शुरु से ही मान्यता रही है कि विवादित विषयों पर खुलकर चर्चा होनी चाहिये। हम किसी भी प्रश्न पर जब मारवाड़ी सम्मेलन के मंच से बात करते हैं तो यह सिर्फ मारवाड़ी समाज से नहीं, वरन समस्त भारतीय समाज पर लागू होता है। सम्मेलन समाज का एक मात्र ऐसा मंच है जिसमें समाज

बायें से श्री कैलासपति तोदी, रा.महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया एवं सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा वक्तव्य देते हुए।

बायें से संयुक्त मंत्री संजय हरलालका, रा. महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार वक्तव्य देते हुए, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया।

न सिर्फ अपनी प्रशंसा की बात करता है साथ ही समाज की कमियों की भी चर्चा करता रहा है। आज का जो विषय हमने लिया है इसमें समाज के नैतिक मूल्यों में हो रहे ह्रास के साथ–साथ समाज की जरूरत की ओर हमने ध्यान लाने के लिये किया है।

इस अवसर पर 'श्री मानव सेवा ट्रस्ट–अपना आशियाना' के ट्रस्टी **श्री चिरंजीलाल अग्रवाल** ने कहा कि लाचार माता–पिता जिनके परिवार छोटे हो गये हैं अर्थात एकल परिवार हैं उनके जब आराम करने का समय (बुढ़ापा) आता है तो बच्चे उनको छोड़कर किसी दूसरी जगह कमाने चले जाते हैं। बच्चों के सामने एक तरफ अपना भविष्य तो दूसरी तरफ अपने बूढ़े माता–पिता में से एक का चुनाव करने का विकल्प रहता है। साथ ही एकल परिवार परम्परा के कारण उनको भी माता–पिता खलने लगते हैं, वे भी एकान्त चाहते हैं ऐसी समस्या समाज में आम होती जा रही है। यह समस्या समय के साथ बढ़ने वाली ही है, कम होने का कोई मार्ग समझ में नहीं आ रहा है। 'अपना आशियाना' तो मात्र एक विकल्प है समाधान नहीं।

वहीं समाज के वरिष्ठ पत्रकार **श्री प्रकाश चण्डालिया** ने इस विकल्प का जोरदार विरोध करते हुए 'श्रवण कुमार' का उदाहरण देते हुए कहा बच्चों को अपने बूढ़े माँ–बाप का सहारा बनना चाहिये परन्तु आज बच्चों के पास समय का अभाव है। मैं सोचता हूँ कि अब संविधान में यह संशोधन कर देना चाहिये कि बेटे की कमाई का एक हिस्सा उनके माता–पिता को दे दिया जाय। जब बेटा अपने माता–पिता की संपत्ति का हिस्सा ले सकता है तो उसके कमाये धन में माता–पिता का हिस्सा कानूनी हक बनता है। परन्तु मेरी समझ से वर्तमान में जो कानून बना है वह यथेष्ट नहीं है। इसमें संसोधन पर बल देते हुए आपने आगे कहा कि मुश्किल यह है कि हम सोचते हैं कि हमारा समाज शिक्षित है परन्तु मुझे लगता है कि आज का समाज शिक्षित मूर्ख है। शिक्षित होने का अर्थ होता है कि जब माता–पिता की सेवा का अवसर आता है तो उसे वृद्धाश्रम भेज दिया जाय या उसे वृद्धाश्रम की बात सोचनी पड़े यह किसी भी प्रकार से शिक्षित होने का मापदंड नहीं हो सकता। एक समय हमारी माता अनपढ़ हुआ करती थी परन्तु उनकी शिक्षा किसी कुलपति या कुलाधिपति से कहीं बड़ी मानी जायेगी। भले ही हम शिक्षित होकर अपने काम में व्यस्त हो जाते हों परन्तु यह बात सत्य है कि कुछ घरों में यह भावना पैदा हो गयी है कि माँ–बाप से सस्ता कोई नौकर नहीं है। शिक्षित समाज जो अपनों को, अपने साथ रख नहीं सकता तो उससे बड़ा अशिक्षित कोई नहीं है। मेरे मित्र श्री प्रमोद शाह प्रायः मुझे चूरू के मंसूर साहेब का एक गीत सुनाया करते हैं–

एक कोने में गाय का छप्पर, एक कोने में नीम खड़ा था।
पहले मेरे घर का आंगन, बहुत बड़ा था, बहुत बड़ा था।।

मैं सोचता हूँ मारवाड़ी सम्मेलन ने बहुत ज्वलंत विषय को उठाया है। जिस परिवार के पास कोई साधन नहीं उनके माता–पिता के लिये वृद्धाश्रम जैसी जगह उपयोगी ही नही सुरक्षित भी मानी जायेगी परन्तु यदि समर्थ परिवार का कोई सदस्य जिसके दो–चार बेटे हैं उन परिवार से यदि किसी माँ–बाप को यह दिन देखना पड़ता है तो यह समाज के लिये सोचने की बात है।

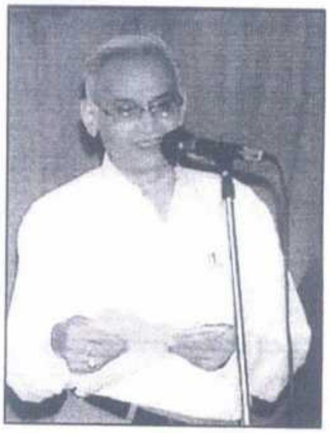

इस अवसर पर तीसरे वक्ता थे **श्री माता प्रसाद गुप्ता**, जो खुद वृद्धाश्रम में रहते हैं। आपने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि वृद्धाश्रम में हर तरह कि सुविधा उपलब्ध रहते हुए भी हर पल, हर सदस्य, परिवार की चिन्ता से ग्रस्त है मन में कहीं न कहीं एक हीन भावना दिखाई देती है। जब हम आपस में बातचीत करते है तो उसमें बस बच्चे के व्यवहार की बात ही ज्यादा छायी रहती है। पहले जो शिक्षा प्रणाली थी उसमें माता–पिता, दादा–दादी का स्थान था, आज की शिक्षा में सिर्फ लड़का–लड़की का स्थान रह गया है। विवाह होते ही बच्चा सीमित दायरे में सोचने लगता है। माता–पिता की सोच से उनके काफी मतांतर रहते हैं जिसे पलभर में अलग कर दिया जाता है जबकि एक समय था कि परिवार के भीतर कितना ही मतांतर होता था कोई अलग से घर बसाने की बात करना तो दूर, कल्पना तक नहीं कर सकता था। आपने आज की शिक्षा प्रणाली को दोषपूर्ण बताते हुए कहा कि जिन परिवारों के माता–पिता बच्चों के व्यवहार के चलते कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, यदि वे वृद्धाश्रम में रहने की बात कहते हैं तो बच्चे उनको यह कहते नजर आते हैं कि उनके परिवार के रिश्तेदारों को यह बात पता चलेगी तो वे लोग क्या सोचेंगे? हमें इस सोच को बदलना होगा ताकि समाज का कमजोर अंग अपने जीवन का अन्तिम समय शांति से गुजार सके।

लेडी ब्रबोन कॉलेज की एक छात्रा **सुश्री शैली शाह** ने अपने प्रोजेक्ट के अनुभवों को बताते हुई कहती है कि उसने ५० ऐसे व्यक्तियों से मिलकर उनके मन की भावना को जानने का प्रयास किया है जिसमे २५ लोग जो वृद्धाश्रम में रहते हैं उनसे और २५ जो अपने बच्चों के साथ रहते है। उसने बताया कि कुछ सदस्य अपने बुढ़ापे के जिस तनाव को कम करने के लिये वृद्धाश्रम में रहने के लिये आये उनका तनाव घटने के बदले बढ़ने लगता है। वे एक साथ दो–दो तनाव के बीच जीवन यापन करने लगते हैं। कुछ सदस्य बच्चों के व्यवहार से नाखुश रहने के चलते वृद्धाश्रम में रहने चले आये। जबकि कुछ लोग किसी अनजान जगह जाकर रहना पसंद करते हैं।

विदेशों में यह व्यवस्था बहुत पुरानी हो चुकी है। वहाँ वृद्धाश्रम जैसी जगह में बच्चे अपने माँ–बाप को रखना एक प्रतिष्ठा पूर्ण बात समझते हैं। आपने बताया कि भारत में दो साल पहले इस तरह के आशियानों की संख्या ३५१ थी जो आज वर्ष २००९ में बढ़कर १९०० के आंकड़े को पार कर चुकी है। मैं सोचती हूँ कि धीरे–धीरे यह समाज की जरूरत बन जायेगी।

इस अवसर पर **श्री नवल जोशी** ने कहा कि यह ध्रुव सत्य है कि यह समस्या समाज की जरूरत बन गई है। आपने अपनी बात को कवि अशोक चन्द्र की कविता से कहने का प्रयास किया–

"मुझसे अलग रहकर मेरे बच्चे ने क्या रिश्ता बनाया
मैं जाता हूँ मिलने को,
तो मुझे मुलाकाती समझते हैं"

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने की आपने अपने सारगर्भित भाषण में कहा कि इस विषय को दो अलग–अलग रूप में देखना होगा। जहाँ एक तरफ हम समाज में इसकी जरूरत को नजरंदाज नहीं कर सकते, वहीं समाज के नैतिक पतन की ओर यह व्यवस्था हमारा ध्यान आकर्षित करती है। शायद इससे बड़ी त्रासदी समाज में और नहीं हो सकती है। आपने कहा कि भले ही यह समस्या हमारे सामने है परन्तु मेरी मानसिकता इस तरह के आश्रम के बढ़ावे को बल नहीं देती है। हम चाईबासा जैसे छोटे से गांव से आते हैं गांव का वातावरण अभी इतना दूषित नहीं हुआ है जितना शहर का हो चुका है। महानगर में रहने वाले लोग भले ही अपने आपको असुरक्षित समझते हों परन्तु गाँव में आस–पास रहने वाला बूढ़े दम्पति के साथ हमारे पारिवारिक जैसे संबंध बन जाते हैं, वे हमारे सुख–दुख में सम्मलित होते हैं और हम भी उनके सुख–दुख में साथ देते है कहीं ऐसा लगता ही नहीं कि वे पराये है। हाँ! यह समस्या सिर्फ हमारे समाज की नहीं यह सर्व भारतीय समाज की ज्वलंत समस्या बनकर उभरी है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता।

कार्यक्रम की शुरुआत में सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सभी का स्वागत किया। संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने सभा का संचालन किया और धन्यवाद दिया कार्यक्रम के संयोजक श्री कैलाशपति तोदी ने। इस अवसर पर सभा में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, सचिव श्री राम गोपाल बागला, श्री प्रमोद शाह, श्री नन्दलाल सिंघानिया, श्री जयप्रकाश सेठिया, श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री रामनिवास चोटिया भी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सहयोग प्रदान किया सह–संयोजक श्री दिलीप गोयनका ने।◆

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

152-B, MAHATMA GANDHI ROAD, KOLKATA - 700 007

PLATINUM JUBILEE CELEBRATION COMMITTEE (2008-10)

Sri Sitaram Sharma, Immediate Past President
Sri Nandlal Rungta, Chaibasa
Sri Ramavtar Poddar, Kolkata
Sri Sanjay Harlalka, Kolkata
Sri Omprakash Poddar, Kolkata
Sri Atmaram Sonthalia, Kolkata
Sri Nand Kishore Jalan, Past President
Sri Hari Shankar Singhania, Past President
Sri Hanuman Prasad Saraogi, Past President
Sri Mohanlal Tulsian, Past President
Dr. Ram Bilash Saboo, Andhra Pradesh
Sri Onkarmal Agarwal, Assam
Sri Vijay Kumar Manglunia, Assam
Smt. Pushpa Chopra, Bihar
Sri Ram Dayal Maskara, Bihar
Sri Dasrath Gupta, Bihar
Sri Dwarka Prasad Todi, Bihar
Sri Ram Avtar Poddar, Bihar
Sri Santosh Agarwal, Chattisgarh
Sri Shyam Soni, Delhi
Sri Basudeo Budhia, Jharkhand
Sri Bhagchand Poddar, Jharkhand
Sri Murlidhar Kedia, Jharkhand
Sri Prahladrai Agarwal, Kolkata
Sri Hari Prasad Budhia, Kolkata
Sri Bishwambher Dayal Sureka, Kolkata
Sri Sajjan Bhajanka, Kolkata
Sri Chiranjilal Agarwal, Kolkata
Sri Santosh Saraf, Kolkata
Sri Rajendra Khandelwal, Kolkata
Sri Dwarka Prasad Dabriwal, Kolkata
Sri Ratan Shah, Kolkata
Sri B.R. Sureka, Kolkata
Sri Dharam Chand Agarwal, Kolkata
Sri Inder Chand Sancheti, Kolkata
Sri Pradip Dhedia, Kolkata
Sri Ramesh Gopikishan Bang, Maharashtra
Sri Raj K. Purohit, Maharastra
Sri Mukunddas Maheshwari, Madhya Pradesh
Sri Maujiram Jain, Orissa
Sri Balkrishna Goenka, Tamilnadu
Sri Ramesh Morolia, Uttar Pradesh
Sri Anil Jajodia, Uttar Pradesh
Sri Bishwanath Bhuwalka, West Bengal
Sri Surya Prakash Bagla, Kolkata
Sri Ravindra Kumar Ladia &
Ex-Officio Member, Office-bearers of All India Marwari Federation & President & General Secretary of State Committee

With Best Compliments From

Sri Binod Agarwal

DHANBAD FUELS LTD.

13, Elgin Road, 4th Floor
Room No.4C, Kolkata - 700 020

With Best Compliments From

Sri Bhagawati Pd. Jalan

M/s. Ganpati Industries Pvt. Ltd.

2, Hair Street (Nicco House)
3rd Floor, Kolkata - 700 001

बच्चा बड़ा होने से डरता है

– भानीराम सुरेका, पूर्व महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

बच्चे परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य होते हैं। इसलिए उन्हें सुरक्षित, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित और सदाचारी बनाने पर सर्वाधिक जोर दिया जाता है ताकि आगे चलकर वे अपने सद्कर्मों से परिवार, समाज और राष्ट्र का नाम रोशन करें।

जिस देश के बच्चे सुशिक्षित, सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित और सदाचारी हों उस देश की प्रगति को कोई रोक नहीं सकता। लेकिन यदि बच्चों में उसके विपरीत गुणों का समावेश हो जाए तो धीरे–धीरे परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति का रथ अवरोधित होता जाता है।

पिछले वर्षों में पूरी दुनिया में बच्चों को लेकर जोरदार बहस चलती रही है और यह आज भी जारी है। बौद्धिकों की राय है कि सभ्यता के विकास क्रम में मनुष्य समाज आधुनिकता के पायदान पर तो आ पहुंचा है पर इस विकास का स्वरूप इतना एकांगी, विकृत और स्वकेन्द्रित है कि समग्र समाज के उत्थान की बातें गौण होती जा रही हैं। 'खाओ, पीओ, मौज करो' की अवधारणा के जोर पकड़ते जाने से एक अस्वस्थ प्रतियोगिता का जन्म हुआ है जिसमें सामर्थ्यवान हर कीमत पर सिर्फ अपने सुख के संसाधन जुटाने में लगे हैं। धन उपार्जन करके सुख की सारी शर्तें पूरी करने की मानसिकता इतनी प्रबल है कि जीवन के अन्य सारे पहलू उपेक्षित हो रहे हैं। बच्चों का समुचित विकास भी उनमें से एक है।

हमारी भारतीय व्यवस्था में आदिकाल से ही बच्चों के समुचित विकास की बात कही गई है एवं उनमें संस्कारों के बीजारोपण को सर्वोपरि माना गया है। गुरुकुल व्यवस्था में बच्चों को सुयोग्य नागरिक बनाने का दारोमदार गुरुओं पर होता था। बच्चो को गुरुओं के आश्रम में रहकर ही विद्याध्ययन करना होता था। विद्याध्ययन के साथ–साथ आश्रम की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्हें आवश्यक उपाय भी करने पड़ते थे जिनमें गुरु की गायों को चराना, भिक्षाटन करके अन्न की व्यवस्था करना, जंगल से लकड़ी काटकर लाना एवं खेती करना भी शामिल था। आश्रम में राजा और रंक का भेद नहीं होता था। श्री कृष्ण और सुदामा एक ही गुरु के आश्रम में रहकर एक सी विद्या प्राप्त करने को स्वतंत्र थे।

गुरुकुल व्यवस्था में किताबी ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान को भी प्रमुखता मिलती थी, जिससे आगे चलकर जीवन के संघर्ष में डटे रहने की मनोवृत्ति का विकास होता था।

कालांतर में शिक्षण की पद्धति बदली, शिक्षण संस्थानों का स्वरूप बदला और बदल गई शिक्षा की उपादेयता।

आज शिक्षा का उद्देश्य महज धन कमाने की योग्यता अर्जित करना रह गया है। शिक्षा के साथ संस्कार की बात भुला दी गई है। शिक्षण संस्थान व्यवसायिक संस्थान के ढर्रे पर चलाये जा रहे हैं जहां हर बात को रकम के तराजू पर तौलकर देखा जाता है।

शिक्षण संस्थान भी आर्थिक हैसियत के आधार पर बंट गये हैं। आधुनिक शिक्षा की उपलब्धता उन्हीं के लिए है जिनके पास रकम है। आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए न तो सरकारी और न ही गैर सरकारी स्तर पर उल्लेखनीय प्रयास अब हो रहे हैं। इससे जहां समाज में गैरबराबरी बढी है वहीं बच्चों में कुंठा घर करती जा रही है।

दूरदर्शन और संचार माध्यमो में क्रांतिकारी परिवर्तनों तथा इंटरनेट के प्रादुर्भाव ने जहां एक ओर ज्ञान–विज्ञान की नई क्षितिज का रास्ता खोला है वहीं विकृति के एक नये संसार को भी घर–घर तक पहुंचा दिया है। उन्मुक्त संस्कृति के नाम पर जिस नग्न संस्कृति को बढावा दिया जा रहा है नई पीढी उसके पीछे पागल है।

पारिवारिक, सामाजिक संरचना में व्यापक बदलाव के चलते विकृतियों पर लगाम कसना संभव नहीं है। संयुक्त परिवार की व्यवस्था में माता–पिता की व्यस्तता के बावजूद बच्चों को संस्कारित करने में घर के बड़े–बूढ़ों की जो भूमिका थी वह अब खत्म हो चुकी है। आज माता पिता की व्यस्त दिनचर्या में बच्चा या तो नौकरों की देखरेख में पलता है या फिर टी.वी.इंटरनेट के सहारे या दादा दादी की जगह नाना नानी के घर। अच्छे–बुरे की परख नहीं होने से उसमें बुराइयों की प्रवृति ज्यादा पनपती है और वह शिक्षागत योग्यता प्राप्त करने के बाद भी संस्कारगत मामलों में पिछड़ जाता है।

यूं तो बच्चों को परंपरागत मूल्यों, आदर्शों के पथ पर संचालित करने की बातें बहुत होती हैं पर वास्तव में बच्चों की भावना को समझकर उसके अनुरूप दिशानिर्देश की कोशिश कम है। यूं कहने को भारतीय प्रतिभा ने पूरी दुनिया में अपना सिक्का जमा रखा है पर यह भी सच है कि जिन मूल्यों, आदर्शों के लिए भारतीय समाजों की पहचान थी उनका तीव्र ह्रास हो रहा है।

पिछले दिनों **कवि राजेश रेड्डी** की दो पंक्तियों ने मुझे गहरे प्रभावित किया था – **मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम सा बच्चा** बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है।

वस्तुतः बच्चे अपने बड़ों को देखकर ही उसका अनुकरण करते हैं। अगर बच्चों में संस्कार भरने है तो पहले बड़ो को अपने आचरण में बदलाव लाना होगा। बच्चों की एकरसता को खत्म कर उनमें सामाजिकता, मानवीयता के बीज बोने होंगे। कदम–कदम पर उनका मार्गदर्शन करना होगा। यह कार्य कठिन जरूर है पर अपने भविष्य के लिए इस चुनौती को स्वीकारना आज आवश्यक हो गया है।

बच्चों को भी फास्ट फूड प्रवृति को त्याग कर बड़ा बनना होगा और बड़ा बड़ी मुश्किल से बनता है, बड़ा बनाने के लिए पहले दाल को भीजाना पड़ेगा, फिर चक्की में पीसकर उसमें लाल–हरी मीरच–नमक आदि को डालकर गरम गरम तेल में तलना पड़ेगा, फिर जाकर बड़ा बनेगा, इतने कष्टों से गुजरना होगा बच्चों, Student life is not Bed of rosses सो स्वस्थ मस्तिष्क रखकर सफलता का मूलमंत्र पढ़ते रहो और बड़े बनो।◆

With Best Compliments From :

KANDOI TRANSPORT LIMITED

SERVICE SINCE 1976

Professionally Managed Company with an 30 Yr. Experience in Handling. :

- IRON ORE
- CHROME ORE
- COKE
- COAL
- SPONGE IRON
- STEEL
- ALUMINIUM
- FERTILISERS
- VARIOUS OTHER MINERALS

REGD. OFFICE:-

KANDOI HOUSE
Matha Sahi, Chauliaganj,
Near O.M.P. Square
Cuttack-753 003
Ph. : 0671-2442222 / 2445366 / 2445399
E-mail : kandoi transport@yahoo.com

BRANCHES:-

BHUBANESWAR-(0674)2571326, 2571336
BELAR'-09901555273
BELPAHAR-(0645) 250276, 9437053276
CHANDIKHOL- (06725) 329523
DUBURI-(06726) 245707, 9437073068
JALANA-09922793162
JODA-(06767) 272140, 9437021179, 9437075297
KOLKATA-(033) 25776658, 25770789, 9831002918
MANGULI- (0671) 2492552
MERAMUNDULI- 9437076029, 9437076027
PARADEEP-(06722) 222539, 9437074167, 9437075334
RAIGARH-09827464098
RAIPUR-09301351164
ROURKELA-9437075326
VISHAKHAPATNA-09348995400

"कल आज और कल" - अपनी बात

- विश्वनाथ मारोठिया

कल माने १९३५ आज २००९ और कल २०१० है। आपां बिता हुआ काल २५ दिसम्बर १९३५ याद करता हुयां स्थापना दिवस मनावां। स्थापना शब्द में इतनी शक्ति और जोर ताकत है कि एक साथ कई विचार आव है। आपां हर कोई न स्थापित कोनी करां स्थापित करतां ही उनको मान सम्मान एवं स्थापित वस्तु या प्राणी क प्रति आपनी श्रद्धा आस्था बढ़ जाव है। मारवाड़ी सम्मेलन को मारवाड़ी सामाज के वास्त वो स्थान है जो स्थान शरीर में रक्त खून या लहू कुछ भी बोल ल्यो को है। आपां शुरु क बर्षा की बात करां तो सम्मेलन स्यूँ जुड़्या हुआ व्यक्ति को समाज में एक अलग मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा को लोग सम्मेलन का कार्य करता एवं पदाधिकारी को आदर करता। जी गांव में चल्या जाता गांव और गांव हाला खुद समझता आज सम्मेलन का पदाधिकारी जाव तो कोई ज्ञान गिनती कोनी आयो चल्योगया। लोग जमा भी कोनी होव। आपनै इक कारण पर विचार करनो चाये।

सम्मेलन द्वारा स्थिापित नियम कानून समाज सुधार न माननो होगो जद ही साधारण समाज का व्यक्ति उनको अनुसरण करैगा। काल की प्राथमिकता और थी एवं सम्मेलन उनान प्राप्त करन म सत प्रतिशत नहीं तो भी 70–75 प्रतिशत लक्ष प्राप्त कर्‌यो है। आज की समाजिक प्राथमिकता एवं आवश्यकता समय क अनुसार बदल गई है अतः सम्मेलन भी आज की एवं आनेवाला कल न ध्यान मं रख कर आपकी मंजिल निरघारित करनी चाये।

काल का म्हे बच्चा आज भी उस वक्त का सम्मेलन का पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता क वजह स प्रभावित होकर सम्मेलन स्यूँ जुड़्या एवं संस्था न समाज सुधार एवं संगठन के वास्त भौत काम कर्‌यो। स्थापना क ३०–४० वर्षा तक सम्मेलन का पदाधिकारियां की कथनी एवं करनी एक थी किन्तु आज बात अलग दूसरी है। आज कथनी और करनी एक कोनी मंच स्यूँ बोल दिया खुद बी बात को मान कर नी और बिपरित कर। यो खत विकार आ गयो है। इस वास्ते सम्मेलन का नियमा को पालन होव कोनी। आज मान और सोच है नियम तो बन ही तोड़न क वास्त अत: अगर आपां न सम्मेलन की मान्यता बढ़ानी है।

तो सम्मेलन द्वारा स्थिापित नियम कानून समाज सुधार न माननो होगो जद ही साधारण समाज का व्यक्ति उनको अनुसरण करैगा। काल की प्राथमिकता और थी एवं सम्मेलन उनान प्राप्त करन म सत प्रतिशत नहीं तो भी ७०–७५ प्रतिशत लक्ष प्राप्त कर्‌यो है। आज की समाजिक प्राथमिकता एवं आवश्यकता समय क अनुसार बदल गई है अत: सम्मेलन भी आज की एवं आनेवाला कल न ध्यान मं रख कर आपकी मंजिल निरधारित करनी चाये।

आज मारवाडी समाज में सम्मिलित परिवार टूट रह्‌या है। इन रोक सकनो मुश्किल है किन्तु टूटन का साथ आपसी प्रेम आदर भी खत्म हो रह्‌यो है। अत: परिवार विघटन या अलग होता हुआ आपसी भाई चारो बन्यों रवै अयां का नुस्खा खोजना चाए। आजकल समाज में विजातीय विवाह एवं विवाह विच्छेद बढ़ गया है। इ प्रश्न पर भी विचार करनो चाय। दोनूं ही रोग न आपां झेल रह्या हां। एवं लोग की जानकारी में अण स्यूं भी आपान कोई फर्क कोनी पड़ै। आज भी शक संका होता हुआ भी अछूत कोनी। पहली लोग इन छुपाता आज छुपान की आवश्यकता कोनी।

मेरे विचार स्यूं समाज मं जिकां का परिवार में विजातीय विवाह या विच्छेद की पीड़ा घटना घटे है परिवार उनका सदस्य की खुशी क वास्त इन स्वीकार कर लेव है और या अच्छी बात है। पहली कुछ वर्ष दूर राख कर परिवार उन अपनातो जयां छूत की बिमारी माय हुतो। अत: मं तो समझूं इ आज विस्तृत मारवाड़ी समाज नै आपसी विवाह सम्बन्ध क बार में सोचनो चाए। सुरूवात बानिया यथा अग्रवाल, माहेश्वरी, खण्डेलवाल, ओसवाल, जैन आदी में बेटी व्यवहार बढनो चाए। ब्राह्मण में गोड़ दायमा, खण्डेलवाल, पारिक, पुष्करना, इत्यादि न कम सु कम आपस मं सम्बन्ध करना चाए। यदि समभव होव तो इस्यूं आन बाणिया ब्राह्मण राजपुता मं होव तो और भी अच्छा रहव। यदि आज को नेतृत्व समाज सुफल एवं सफल मार्गदर्शन दे सकगो तो आप एवं आण वालो कल ध्यान याद करगो जिस तरां म्हे म्हारा काल का नेतृत्व न याद करां हां। जो कुछ चोखो करनु चाव है तो पैली तूं खद कर । जनता तेरी देख सफलता लेशी चढ़ाय तन शिर।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि **हर तदबीर के पहले खुदा बन्दे से ये पूछे बता तेरी रजा क्या है।**

जय भारत, गर्व से कहो हम मारवाड़ी हैं।◆

समाज में फैले सामाजिक समरसता

– संजय हरलालका
संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

किसी भी सामाजिक संस्था का ७४ वर्षों तक चलते रहना इस बात का द्योतक है कि संस्था की नींव काफी मजबूत है तथा उसके विचारों व कार्यों में पारदर्शिता है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन भी आज उन्हीं में से एक है। ७४ वर्षों के इस दीर्घ सफर में सम्मेलन के बैनर तले अनेकों सामाजिक आन्दोलन सामाजिक बुराईयों के खिलाफ हुए और आज भी सम्मेलन इस दिशा में विचारों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा समाज में सामाजिक समरसता हेतु प्रयत्नशील रहता है।

आज प्रत्येक संस्थाओं में एक बात का जिक्र बार–बार आता है कि नये कार्यकर्ताओं का अभाव हो गया है। नयी पीढ़ी सामाजिक क्षेत्र में नहीं आना चाहती है। ऐसी बातें तो पदासीन हर व्यक्ति करता है किन्तु इसके मूल में जाने का प्रयास नहीं करता है। क्योंकि ऐसा करने से उनकी कुर्सी हिलने लगती है। वे कार्यकर्ताओं के अभाव का जिक्र कर अपनी कुर्सी पर जमे रहना चाहते है ताकि उनका वर्चस्व बना रहे। आज सम्मेलन को इस दिशा में भी गंभीरता से विचार करना चाहिए।

महाराज अग्रसेन, जहां से अग्रवाल समाज की उत्पत्ति हुई, उन्होंने एक रुपया–एक ईंट का जो सिद्धांत लागू किया था आज हम उसे भूल गये हैं। उनका मकसद सामाजिक समरसता से था। किन्तु हो आज उलट रहा है। आज के आर्थिक दौर में अधिकांश युवा जरूरतों एवं भौतिक सुख के लिए धनोपार्जन की अंधी दौड़ में शामिल हैं। उनके लिए न तो सामाजिक मूल्य कोई मायने रखते है और न ही सामाजिक बंधन। ऐसे में हम अगर उन्हें उचित मान–सम्मान भी न दें तो कैसे हम उनसे यह आशा कर सकते हैं वे इस आर्थिक युग में संस्थाओं से जुड़ेंगे। हम अपने घरों में ५ साल के छोटे से बच्चे को भी 'आप' कहकर बुलाने लगे हैं ताकि उसमें बचपन से ही अच्छे संस्कार पड़ें किन्तु इससे इतर समाज में आते ही हमारा यह रवैया बदल जाता है। एक उम्र के बाद पिता अपना व्यापार अपनी संतान को सौंप देता है किन्तु सामाजिक क्षेत्र में वह हमारे राजनेताओं की तरह कभी रिटायर नहीं होना चाहता। हां, यह जरूरी है जिस तरह हम व्यापार में अपनी संतान को पारंगत करते हैं, रिटायर होने के बाद भी मांगने पर उचित सलाह देते हैं और कुछ गलत दिखने पर मार्गदर्शन देते हैं उसी तरह संस्थाओं में भी वरिष्ठ लोगों को अपने मातहत ऐसे लोगों को तैयार करना चाहिए और समय के साथ–साथ उसकी जिम्मेदारी उसे सौंप देनी चाहिए और स्वयं को ईमानदारी से 'पिता' की भूमिका में आ जाना चाहिए। तब तो वे भी जिम्मेदारी के बोझ तले कुछ करने के लायक होंगे और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। वरना बंधुआ मजदूरों की तरह काम कराने की लालसा पालने की प्रवृत्ति से सामाजिक क्षेत्र में शून्य की ही स्थिति पैदा होगी। सम्मेलन के कार्यकारिणी सदस्य एवं विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े आदरणीय बाबूजी श्री चिरंजीलालजी अग्रवाल से जब भी सामाजिक संस्थाओं के बारे में बात होती है तो वे यह बात जरूर कहते हैं कि नये लोगों को सम्मान व पद के साथ संस्थाओं में लाना होगा तभी सामाजिक संस्थाओं का भविष्य सुरक्षित रहेगा। ऐसी सोच को पनपाने हेतु सम्मेलन को प्रयास करना होगा। मारवाड़ी समाज की पहचान या तो वणिक के रूप में हुई या फिर समाजसेवा के माध्यम से समाज के लोगों ने अपना झंडा गाड़ा है। कार्यकर्ताओं के अभाव में अगर हम अपनी यह पहचान खो बैठे तो न सिर्फ हम अपना तथा समाज का नुकसान करेंगे बल्कि हमारे हाथों लाभ प्राप्त कर रहे लाखों–करोड़ों लोग भी इससे वंचित हो जायेंगे।

इस संदर्भ में हम देखते हैं कि सम्मेलन के विचारों में काफी पारदर्शिता है तभी तो आज से ७४ वर्ष पूर्व सम्मेलन के संस्थापकों ने संविधान बनाते समय इस बात का उल्लेख कर दिया था कि एक पद पर कोई भी व्यक्ति दो टर्म (चार साल) से अधिक नहीं रह सकता है। इसका मकसद ही यही रहा होगा कि नये–नये लोग आगे आयें और समाज को अपनी सेवाएं दें। धन्य है हमारे पूर्वजों की सोच। उनकी दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि संवैधानिक नियमों के तहत ७४ वर्षों के बाद भी सम्मेलन आज भी इसी परिपाटी पर चल रहा है। वर्तमान में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार आदि जो पदाधिकारी हैं वे इसी सोच के आधार पर काम करते नजर आते हैं। अतः अब हमें इस सोच को सम्मेलन के माध्यम से और अधिक व्यापक रूप देना होगा। समाज के अधिक से अधिक लोगों को सम्मेलन से जोड़ने के लिए तो यह जरूरी है ही, साथ ही समाज हित में भी आज इसकी जरूरत है। सम्मेलन ने हमेशा से आत्मंथन कर स्वयं में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है जो कि अमूमन कहीं नहीं होता है। कोई भी स्वयं को गलत कभी नहीं बताता है लेकिन सम्मेलन अपने मंचों के माध्यम से अपने ही समाज की बुराइयों को उजागर कर उन्हें दूर करने का प्रयास करता है। यही भगीरथ प्रयास सम्मेलन की सफलता का मूल मंत्र है।◆

सुनी सुनायी

[We Keep God in debt]

– स्वराज्यमणि अग्रवाल

गर्मी की ऋतु थीं प्यास से व्याकुल होकर चातक के बच्चे ने अपनी बूढी माँ से कहा, माँ मैं प्यास के कारण मर जाऊँगा। मेरा गला सूखा जा रहा है मेरे प्राण प्यास से व्याकुल हो रहे हैं। मैं क्या करूं कहाँ जाऊँ? न जाने स्वाती मेघ कब बरसेंगे?

माँ ने उत्तर दिया, बेटा ! कोई भी चातक का बच्चा गर्मी में पानी नहीं पीता। केवल स्वाती बूँद ही उसकी प्यास बुझा सकती है, और कोई पानी नहीं। बच्चे ने कहा, माँ ! तुम बूढी हो गई हो। संसार के सारे जीव, पशु पक्षी, जहाँ मिलता है वहीं पानी पीते हैं। नदी है, तालाब है, सरिता है, झरना है। दुनियां में इफरात पानी है पीने को सभी पीते हैं। फिर मैं क्यों नहीं पी सकता? माँ तुम पागल हो गई हो, मैं अब और प्यासा नहीं रह सकता। मैं तुम्हें छोड़ कर जा रहा हूँ।

माँ ने उसे देखा और चुप हो गई।

बच्चा उड़ चला। शाम तक एक गांव में पहुंचा। गांव में दो चार झोंपड़े थे। सुनसान था, दूर–दूर तक पानी का निशान नहीं था। बच्चा थक कर एक वृक्ष की डाल पर बैठ गया। उसने देखा कि एक वृक्ष के नीचे एक बूढ़ा बैठा हुआ था। वह किसी का इंतजार कर रहा था। थोड़ी–थोड़ी देर में कहता था, अभी तक आया नहीं, सूरज डूब गया, अंधेरा हो गया, अभी तक आया नहीं। पास की झोंपड़ी के अंदर से आवाज आई,आ जाएगा। धीरज रखो। गाँव में सन्नाटा छा रहा था–अंधेरा हो गया था। बूढ़ा वहीं वृक्ष के नीचे बैठा –बैठा कह रहा था– अभी तक आया नहीं। अभी तक आया नहीं, आ जाएगा अंदर से आवाज आई।

तभी बेटा आ गया – बूढ़ा बोला – बेटा, आज बहुत देर कर दी, क्या खेत में ज्यादा काम निकल आया था?

बेटे ने कहा – पिताजी मैं तो आ रहा था। रास्ते में देखा कि घोड़े पर सवार एक बटोही कुएं से पानी खींच रहा था – पर उससे बन नहीं रहा था। वह बहुत प्यासा था। मैंने कुएं से पानी निकाल कर उसे पानी पिलाया उसकी प्यास बुझाई। वह बटोही मुझे आशीर्वाद देता हुआ चला गया। तभी मैंने देखा, कुएँ की मेड़ पर एक थैली पड़ी हुई थी। उसमें रुपये भरे हुए थे। ये रुपये निश्चय ही उस बटोही के होंगे। अब मैं उस थैली को उसके पास कैसे पहुँचाऊँ? वह तो घोड़े पर सवार कहीं दूर निकल गया होगा। फिर भी मैंने हिम्मत न हारी दौड़ लगा दी। शक्ति भर दौड़ता रहा। आगे जाकर देखा कि बटोही एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था। वहीं उसका घोड़ा बंधा हुआ था मैंने उसके रूपये की थैली उसको लौटा दी और कहा कि यह आप कुएं की मेड़ पर भूल आए थे। थैली देख कर बटोही बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, बेटे ये तुमने बहुत अच्छा काम किया। ये रुपये गरीबों को बाँटने के लिए इकट्ठा किया था। अगर उन्हें न मिलता तो वे निराश हो जाते।

बेटे ने कहा, पिताजी! बहुत दूर तक जाना पड़ा वहाँ से लौटते में देर हो गई क्षमा करें!

बूढ़े ने अपने बेटे को छाती से लगाते हुए कहा, बेटा! आज मेरा जीवन सफल हो गया। जीना तो उसी को कहते हैं जो दूसरों के लिए जीता है। चातक पक्षी का बेटा यह देख रहा था, सुन रहा था। वह अपनी माँ के पास वापस लौट आया। माँ ने कहा बेटा ! ईश्वर ने सबको अलग–अलग काम के लिए पैदा किया है। दूसरों को जिलाए रखने के लिए ही हम जीते हैं, भले ही हम मर जाएं। हमारी छोटी सी तपस्या से सारे विश्व को जल मिलता है। अगर हम भी नदी तालाब का जल पीने लगें तो मेघ स्वाती जल क्यों बरसाएंगे? ये धरा सूखी रह जाएगी। इसीलिए उसका ही जीवन सार्थक है जो दूसरों के लिए जीता है। ईश्वर उनका ऋणी हो जाता है।

We keep god in debt.

मेरा धर्म (क्या है?)

– ओम लड़िया

इंसान का इंसान से, हो भाई चारा ।
मानव धर्म हमारा, यही है धर्म हमारा ।।

हमने अपने जन्म के अधार पर विभिन्न धर्मों में ईश्वर को बाँट लिया है जैसे हिन्दू, इस्लाम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी आदि–आदि। आपको यह जानकर क्या आश्चर्य नहीं होगा कि जिस धर्म के नाम पर विशाल मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे बनाए गए हैं उस धर्म का कोई शब्दार्थ नहीं है–ऐसा क्यो? भारतीय चिन्तन में धर्म को परिभाषित करते हुए कहा गया है।

''या धारायिते सोऽति धर्मः''

अर्थात जो धारण किया जाए वही धर्म है। तो क्या हम धर्म को सही मायने में समझ पाए हैं? क्या हम धर्म को जिस रूप में धारण कर रहे हैं वह ठीक है? या फिर इसके विपरीत अज्ञानतावश भ्रमित होकर हम अपने आपको गुमराह कर रहे हैं।

पंडित, मौलवी, पादरी ने हमें भ्रमित किया। आडम्बर युक्त भक्ति का गलत मार्ग दिखाया। पुण्य और मोक्ष के नाम पर हमारा दोहन किया। भला ईश्वर को इन भौतिक वस्तुओं से क्या लेना देना। वह तो भावना के भूखे हैं।

हमने तो धर्म को अपना परलोक सुधारने का माध्यम समझ रखा है। अगले जन्म की चिन्ता में इस जन्म को ही भुला बैठे हैं। हमें तो अपने कर्मों का फल इसी जन्म में भोगना है। हमारा कर्म ही हमारा धर्म है। मनुष्यमात्र बंधु है इसे ध्यान में रखते हुए बिना किसी भेदभाव के लोकोपकार के कार्यों में जुट जाएं। प्रेमपूर्वक दूसरों की सेवा का ही नाम भक्ति है। श्रद्धा और प्रेम इसके आवश्यक तत्व हैं। स्वार्थ एवं अहंकार का त्याग भक्ति–भावना की प्रथम आवश्यकता है।

अंधविश्वास के तहत और भयग्रस्त होकर हम गोदान, अन्नदान, वस्त्रदान, वस्तुदान करते हैं, यह धन खर्च का माध्यम तो हो सकता है किन्तु पुण्य प्राप्ति का साधन नहीं। इसकी जगह सेवामूलक कार्य, गरीब, अनाथ, रोगी, भूखेजन के लिए कुछ किया गया होता तो वही सच्चा धार्मिक कृत्य होता।

एक और दृश्य आपके ध्यान में लाना चाहूँगा। आपके विवाह की रजत जयंती मनाई जा रही है। पांच सितारा होटल में नाच–गान, भव्य भोजन का आयोजन किया गया है। मूल्यवान उपहारों का आदान–प्रदान होता है और इस समारोह में लाखों रुपये खर्च होते हैं। दूसरी तरफ आपका एक निर्धन भाई धनाभाव के कारण अपनी बड़ी उम्र की कन्या का विवाह नहीं कर पाता। क्या आपका यह धर्म नहीं बनता कि आगे बढ़कर अपने एक निर्धन भाई की कन्या का विवाह संपन्न करा दें?

आप गृहस्वामिनी हैं आपको किसी सत्संग, प्रवचन, मंगलपाठ या भागवत कथा में समय पर पहुँचना था, उठने में देरी होने से सजने संवरने में काफी समय व्यतीत हो गया। आप जल्दी–जल्दी में घर में बैठी वृद्धा सासू माँ को भी भूल बैठी और जाते जाते महरी को आदेश देती हैं कि माँजी के लिये बाजार से पूड़ी–कचौड़ी ला देना–क्या धर्म यही है? मुझे किसी काम से उस परिवार में मिलने जाना था–देखता हूँ कि वृद्ध माँ झर–झर आँसू बहा रही है।

हमने अभिषेक का आयोजन किया है सवा मण (५० सेर) दूध चढ़ाया है क्या यह दूध (प्रसाद के रूप में) किसी के पेट में नहीं जाना चाहिए?

बड़े प्यार से मिलना सबसे, दुनियाँ में इंसान रे।
ना जाने किस वेश में बाबा, मिल जाए भगवान रे।।

हमें हृदय पर हाथ रख कर विचार करना होगा कि धर्म का सही मार्ग क्या है ? धार्मिक अनुष्ठानों में अंधाधुंध अपव्यय कर देने मात्र से ही पुण्य लाभ नहीं होगा। रामायण या भागवत पुराण का प्रवचन सुन लेने से ही कुछ नहीं होगा। प्रवचन के समारोह में भाग लेने से पिकनिक का आमोद–प्रमोद भले ही हो जाये, ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। अपने समय और सुविधानुसार उन धार्मिक पुस्तकों का गहन अध्ययन करना होगा, तब कोई ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

साथ ही साथ धर्म का व्यवसायीकरण न हो इस दिशा में हमें सचेतन होना होगा। जिस द्रुतगति से हर गली, मुहल्ले, पथिक राह (Foothpath) पर छोटे–छोटे मंदिर निर्मित हो रहे हैं यह किसी धार्मिक भावना के तहत तो नहीं हो सकता, हाँ आमदनी का जरिया जरूर बन जाता है। ऐसे ही आजकल नये–नये कथावाचकों की बाढ़ सी आ रही है और ऐसा लगता है यह एक आमदनी का नया पेशा (Profession) बन गया है। जो CA / MBA की शिक्षा से भी अधिक आकर्षक है। धर्म के नाम पर धन का दुरुपयोग असहनीय है।

हमारे और ईश्वर के बीच धर्म सीधा सम्पर्क बनाता है अतः धर्म पूर्णतया हमारा निजी मामला है इसमें किसी अन्य का दखल मान्य नहीं। धर्म के नाम पर किसी पंडा, पुजारी, शास्त्री, धर्म गुरु या दलाल की कतई जरूरत नहीं। किसी पुजारी को 'संकल्प' देने से कोई सफलता मिलने वाली नहीं–हाँ ठगाई तो होगी ही। अतः विश्वास के साथ, पूर्णतया समर्पित होकर एकाग्रता पूर्वक अपने आराध्य देव की आराधना करें और उसी में अपना अगाध प्रेम, श्रद्धा, भक्ति अर्पित कर दें। इससे आपको अपार शान्ति, सुख, सन्तोष एवं सफलता प्राप्त होगी। यही एक मात्र सच्ची ईश्वर भक्ति है।

न मंदिर में, न मथुरा में, न काशी, कैलाश में।
न मूरत में, न तीरथ में, मैं तो तेरे पास हूँ।।

– 138, कैनिंग स्ट्रीट, चौथा तल्ला, रुम.नं. – 436 कोलकाता–1

मारवाड़ी शब्द का जन्म

– मौजीराम जैन

मारवाड़ी शब्द मारवाड़ राजस्थान का एक साधारण हिस्सा को मारवाड़ कहते है। दुष्काल की मार से सर्वप्रथम मारवाड़ से लोग निकले। इसलिए उन्हें मारवाड़ी नाम पड़ गया। राजस्थान बहुत बड़ा है, बहुत सारी बोलियां है राजस्थान में, मारवाड़ से निकले मारवाड़ी अपने साथ में दया, धर्म को साथ में लेकर निकले और जहाँ भी गए जो भी कमाया, उसमें से धर्म के नाम पर कुछ पैसा जरूर खर्च करते थे। उनमें कुछ लोगों का व्यापार ब्याज का रहा, यह धंधा अच्छा नहीं था, इसलिए मारवाड़ी समाज कुछ बदमाम भी हुआ। मारवाड़ी नाम में कहीं कहीं कुछ नुकसान किया तो इससे एकता में बंधने का अच्छा फल भी मिला। मारवाड़ी शब्द इतना व्यापक बना गया कि राजस्थान, हरियाणा, पंजाब का कुछ हिस्सा, दिल्ली। उत्तर प्रदेश का कुछ हिस्सा और मारवाड़, इतने खेमे से जो व्यक्ति निकले वे सब मारवाड़ी कहलाए। इनकी बोली अलग–अलग थी उन सबको जोड़ने वाली एक भाषा हिन्दी ही हो सकी है। मारवाड़ी समाज प्रथम तो एकता सूत्र में बंधा इससे सबको फायदा भी बहुत हुआ और कुछ व्यक्तियों के कारण बदनाम भी।

मैं कोई लेखक नहीं हूँ जो मैं जानता हूँ वह सुक्ष्म रूप से लिखा है। जो लिखा है उस विषय में बहुत विस्तार से भी कभी लिखुंगा। इसमें कोई त्रुटि रही हो तो क्षमा करना।

सारे भारत वर्ष में यह समाज फैला, धर्मशालाएँ, स्कूल, कुआँ, बावड़ी बनायें। देखा जाए तो मारवाड़ी समाज एक ऐसा समाज है जो देश के हर अंचल में लोक हितकर कार्य किया है जबकि इत्तर समाज का कहीं पर भी ऐसे लोक हितकर कार्य नहीं देखने को मिलते।

मारवाड़ी समाज में ऐसे वीर भी हुए लाला लाजपतराय, राममनोहर लोहिया और भामा साह जैसे महादानी व्यक्ति भी इस समाज ने दिए और भी अनेक लोग हुए है, बहुत समय तक मारवाड़ी समाज एक सूत्र में बंधा रहा समाज के मान्यता प्राप्त व्यक्ति थे उनके निर्णय सारे समाज को मान्य थे, उस निर्णय से बाहर कोई नहीं जाता है, धीरे धीरे यह बंधन टूटता गया, लोग अपने मन के हिसाब से कार्य करने लगे जिससे समाज का बहुत अहित हुआ।

मारवाड़ी समाज का आजादी की लड़ाई में भी बहुत बड़ा योगदान रहा जिसको विस्तार से लिखने से एक बहुत बड़ा ग्रंथ हो सकता है फिर कभी इसके ऊपर प्रकाश डालने की चेष्टा करूंगा।

यह समाज साधारण से साधारण व्यापार करके अपना निर्वाह करता रहा, धीरे धीरे समय बदला, समाज विभिन्न क्षेत्र में बिखरता गया, जिसमें बहुत से अच्छे कार्य भी हुए पढ़ाई के प्रति आकर्षण, अच्छी नौकरी के प्रति आकर्षण, कल–कारखाने लगाए और भी अनेक क्षेत्र में गए मेरा मानना है अभी और कुछ क्षेत्र हैं जहाँ भी समाज का वर्चस्व बनना चाहिए, बनाया जाना चाहिए।

समाज का संतुलन भी बिगड़ा, कुछ लोग अति धनी हो गए और कुछ लोग अति गरीब भी हुए समाज का संतुलन बिगड़ गया, समाज का बंधन टूट गया लोग मनमानी करने लगे जिसमें फिजूलखर्ची, प्रदर्शन जिससे इत्तर समाज के आक्रोश का भी कारण बने। समाज का बोलकर कुछ रहा नहीं समाज का बंधन पूरा पूरा टूट गया। मनमाना काम करते रहे इस फिजूलखर्ची से समाज के साधारण लोगों को बहुत परेशानी हुई।

विवाह जैसे पवित्र बंधन में भी पैसे का वर्चस्व बढ़ गया, जहाँ समाज की मान्यता थी शादी हुई माने जीवन भर निभाना है। अभी शादी के बाद भी बहुत से संबंध बिगड़ने लगे। इससे कुछ अच्छे कार्य भी हुए जैसे विधवा विवाह, बिगड़े हुए संबंध को दूसरी जगह संबंध बनना आदी अच्छे कार्य भी हुए। समाज को आजाद देश में राजनिति में कोशिश करके आना चाहिए जिसका अभाव है, फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से समाज कुछ अच्छे कार्य कर रहा है, जो टूटा फूटा बंधन है उससे लोग जनहितकर कार्य में लगे हुए हैं और वह कार्य हो रहे हैं।

मारवाड़ी समाज के लोग जहां भी गए वहाँ के होकर रह गए वहां के लोगों के साथ एक रिश्ता बनाया, उनके दुःख, सुख के साथी बने बहुत से मारवाड़ी तो जो छोटे गांव में रहते है वे अपनी भाषा ही भूल गए वहां की भाषा से ओत–प्रोत हो गए। वहा समाज हित में जनसाधारण के सुविधा के कुछ कार्य जरूर किए है।

मारवाड़ी समाज का बाहर निकलना प्रायः चार सौ साल का इतिहास मिलता है। देश के दूर दराज क्षेत्र में गए। साधारण भाषा में कहा जाता है–जहां न जाए बैलगाड़ी, वहां जाए मारवाड़ी।

मैं कोई लेखक नहीं हूँ जो मैं जानता हूँ वह सुक्ष्म रूप से लिखा है। जो लिखा है उस विषय में बहुत विस्तार से भी कभी लिखुंगा। इसमें कोई त्रुटि रही हो तो क्षमा करना।◆

– पो. काटाबांजी – 767036
जिला–बलांगीर (उड़ीसा)

राजस्थानी नाटक 'टूँटिया'

(महिलाओं का, के लिए, के द्वारा)

– डॉ. पूर्णिमा केडिया 'अन्नपूर्णा'

लड़के का विवाह ! घर के सारे पुरुष चले गये बारात ! घर में केवल महिलाओं का झुण्ड – यहाँ रहनेवाली भी और विवाह में सम्मिलित होने आयी रिश्तेदार महिलाएँ भी। सारे गाँव में न्योता जा चुका है। अँधेरा घिरते ही गाँव की महिलाएँ भी दो–दो, चार–चार कर आकर इकट्ठी होने लगी हैं। उनमें अभिनय करनेवाली भी हैं और देखनेवाली भी। घर के आँगन में दरी बिछ चुकी है। आँगन के मध्य खेले जायेंगे नाटक और चारों ओर बैठेंगी दर्शक। उधर लड़की के यहां हो रही होगी शादी और यहाँ छोटे–छोटे प्रहसनों का मंचन !

सबसे पहले विवाह का अभिनय । वर की बहन बनी है बींद (दुलहा) और वर की भाभी बीनणी (दुलहन) बाकायदा फेरे हो रहे हैं। हँसी–मजाक चल रहा है।

अब मिश्रानी जी धोती की लाँग टाँगकर, कमीज पहनकर पाण्डेजी बनकर आयी हैं। ये पाण्डे जी असली विवाह की कल्पित खबरें लाये हैं। घड़े के मुँह पर मुँह रखकर अपनी आवाज गुँजा रहे हैं, विवाह अच्छी तरह हो गया है। बढ़िया खातिरदारी हुई। चोखो दान–दायजो दियो। आदि–आदि। पतियों के नाम ले–लेकर उनकी पत्नियों को छेड़ा जा रहा है कि आपके पति ने आपके लिए ये संदेशा भेजा है और वो। फिर मणिहारी बनी महिला बारात गये पुरुषों की स्त्रियों को चूड़ा पहनाने का अभिनय करती है। गीत चलता है, अमुक जी री पोल्याँ बोल्यो रे मणिहार लला, बहू अमुक पैरण बैठी जी मणिहार लला। बानअ हरयो ई चूड़ो, गुलाबी चूड़ो पहरायो जी मणिहार लला।

किशोरियाँ, बच्चियाँ ऊबने लगती हैं, ओहो, हँसी–मजाक वाले नाटक कब होंगे?

अरे–अरे, हो गयी चालू हास्य–रस की फुहार ! लड़का बना पात्र झोलाभर सामान लाता है और माँ बनी महिला से कहता है, बींद की माँ कहती है कि मैं चोर हूँ, क्या मैं चोर हूँ माँ?

फिर झोले से एक चमचा निकालकर माँ को देता हुआ धीरे से कहता है, ले–लो इसे छिपाकर रख लो, मैं उठा लाया। माँ जल्दी से उसे पीढ़े के नीचे या अपने पीछे छिपा देती है। लड़का फिर जोर से बोलता है, क्या मैं चोर हूँ?

जा बेटा, तू चोर नहीं है। इसी तरह झोले से बेलन, चाकू, चिमटा, कटोरी, गिलास आदि सामान निकलता रहता है और छिपता रहता है। हर बार क्या मैं चोर हूँ?, ना बेटा, तू चोर नहीं है। वाक्यों के साथ टूँटिया देखनेवालियों के ठहाके गूँजते रहते हैं।

फिर रूई धुनने का कष्टसाध्य अभिनय, मालिन बनकर सब्जी बेचना, जूँ निकालना, हर करतब इस तरह से किया जा रहा है कि सब हँस–हँस कर लोट–पोट हो रही हैं। किसी–किसी प्रहसन से शिक्षा भी देने का प्रयास है। जैसे कि जेठजी छोटे भाई की पुत्री के विवाह में नहीं आना चाहते, वे किसी बात पर रूठे हुए हैं। एक महिला जेठ बनकर कुर्सी या पीढ़े पर एक ओर बैठ जाती है। छोटे भाई की पत्नी बनी महिला उसे मनाने आती है, जेठजी बेटी का ब्याह है, आपको आना पड़ेगा, आपके बिना शोभा नहीं।

पर जेठजी नकारात्मक सिर हिलाते हैं और मुँह फेरकर बैठ जाते हैं। वह बार–बार नाटक–स्थान का एक गोलाकार चक्कर लगाकर आती और अलग–अलग वाक्य दुहराती, अब गणेश–पूजा है, चलिए, अब हल्दी की रश्म है, चलिए, अब बारात आ गयी, चलिए, अब शादी रश्म है, चलिए, अब विदाई है, चलिए, वह हर बार खूब आग्रह करती, पर जेठजी हर बार सिर हिला देते और मुँह फेरकर बैठ जाते।

अन्त में वह शादी की मिठाई लेकर आती है, तब जेठजी मिठाई लेने के लिए जल्दी से धोती का पल्ला पसार देते हैं। पर वह मिठाई नहीं देती और ठोसा ल्यो कहकर दोनों हाथों के अंगूठे दिखलाकर चली जाती है। हँसते–हँसते सबके पेट में बल तो पड़ते ही हैं साथ ही यह सीख भी मिलती है कि विवाह–शादी किसी के लिए रुकते नहीं, वरन् रुठनेवाले रिश्तेदार की ही हेठी होती है। जो लोग बार–बार बुलाने पर भी विवाह में न आकर अपना महत्व दिखलाना चाहते हैं, उल्टे वे ही निन्दा और उपहास के पात्र बनते हैं।

ऐसे छोटे–छोटे अनेक नाटक होते हैं। इनमें हास्य, मनोरंजन, शिक्षा, और महिलाओं का एक दिन आजादी मनाने का भाव तो है ही, साथ ही विवाहवाले घर की इस तरह से जगकर चोर–डाकुओं से सुरक्षा करने की भावना भी है।

लेकिन बड़े दुःख की बात है कि सदियों से चली आ रही यह टूँटिया नाटक की परम्परा अब समाप्ति के कगार पर है। कारण कि अब बैठे ब्याह का प्रचलन बढता जा रहा है, जिसमें कन्या और वर, दोनों पक्ष एक ही शहर में आ जाते हैं। तब महिलाएँ भी विवाह–सुख देखने से वंचित क्यों रहें, वे भी बारात में आ जाती हैं। शगुन के रूप में विवाह की रात वरपक्ष की महिलाओं द्वारा बस चूड़ा पहनने की रश्म कर ली जाती है।

लेकिन हमें रंगीले राजस्थान की इस कलात्मक परम्परा को यों नष्ट न होने देना चाहिए। इसका उपाय यो, कर सकते हैं कि गीत–संध्या के अवसर पर हम टूँटिया करें। इसमें घर के बच्चे–बड़े हास्य रस के शिक्षाप्रद नाटक खेले और स्त्री–पुरुष सब मिलकर नाटक–दर्शन का आनन्द लें। इस तरह से हम जीवन्त रख सकते हैं अपने पूर्वजों की यह धरोहर।

– 105, फिकॉन पैलेस, जे.सी.रोड, लालपुर
राँची–834001 'झारखण्ड'

SYNDICATE
Jewellers (P) Ltd.

With

Best

Compliments

From

SJ
SYNDICATE

22, Camac Street, Block-A, 1st Floor, Kolkata-700016 , Phone: 033-2281 4137/3596,
E.mail : syndicate@syndicatejewellers.com

KOLKATA | RANCHI | VISAKHAPATNAM | BHUBANESWAR | BERHAMPUR

संरक्षक सदस्य

1

श्री अतुल चुड़ीवाल

2

श्री चिरंजीलाल अग्रवाल

3

श्री श्याम सुन्दर कानोड़िया

4

श्री मुकुन्द रूँगटा

5

श्री हेमन्त कनोड़िया

6

श्री हर्षवर्द्धन नेवटिया

7

श्री अनिल सोन्थलिया

8

श्री अमित शर्मा

9

श्री संतोष सराफ

10

श्री राजेश पौद्दार

11

श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल

12

श्री राजेन्द्र खंडेलवाल

13

श्री विवेक गुप्त

14

श्री सज्जन भजनका

15

श्री रामचन्द्र रूँगटा

16

श्री सीताराम अग्रवाल

17

श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका

18

श्री महेश कुमार अग्रवाल

19

श्री विमल कुमार पाटनी

20

श्री हरिप्रसाद अग्रवाल

21

श्री महेश पेरिवाल

22

श्री राज कुमार शाह

23

श्री अशोक कुमार पटवारी

24

श्री संजय अग्रवाल

25

श्री मुरारी लाल सरावगी

मामराज अग्रवाल फाउंडेशन

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में 23 मार्च' 09 को
मवमहिम प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के कर कमलों से पदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार

— एक चित्रमयी झांकी —

महामहिम राष्ट्रपति कर स्वागत करते हुए श्री मामराज अग्रवाल।

श्री मामराज अग्रवाल राष्ट्रपति को स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए।

समारोह कक्ष में आगमन पर महामहिम का अभिवादन करते हुए श्री मामराज अग्रवाल, श्री रामगोपाल अग्रवाल, श्री ब्रम्हानन्द अग्रवाल एवं श्री श्याम अग्रवाल।

फाउंडेशन की अन्य गतिविधियां

स्कूली बच्चों में परिधान वितरण, छात्रवृत्ति, प्रतिवर्ष कोलकाता एवं जयपुर में विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण शीर्ष छात्र-छात्राओं का राजभवन में राज्यपाल के कर कमलों से सम्मान आदि।

न्यायमूर्ति श्यामल कुमार सेन पूर्व राज्यपाल, प.बंगाल (ऊपर) एवं न्यायमूर्ति अंशुमान सिंह, पूर्व राज्यपाल, राजस्थान (नीचे) को राष्ट्रपति राष्ट्रीय ज्ञानोदयम् सम्मान प्रदान करते हुए।

उत्कृष्ट समाजसेवा हेतु महामहिम के कर कमलों से राष्ट्रीय सेवा रत्नम् सम्मान ग्रहण करते हुए (ऊपर) मनोविकास केन्द्र की श्रीमती शारदा फतेहपुरिया एवं (नीचे) अ.भा. मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती अलका बांगड़।

संरक्षक सदस्य

26

श्री विजय शारदा

27

श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया

28

श्री जगदीश प्रसाद चौधरी

29
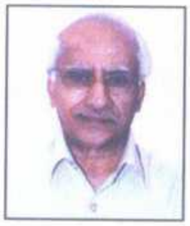
श्री हरि किशन अग्रवाल

30

श्री प्रवीन अग्रवाल

31

श्री हरीचरण गुप्ता

32

श्री हरि प्रसाद बुधिया

33

श्री पदम कुमार जैन

34

श्री अजय कुमार बजाज

35

श्री मनोज धनधरिया

36

श्री धर्म चन्द अग्रवाल

37

श्री बसन्त कुमार अग्रवाला

38

श्री अरूण अग्रवाल

39

श्री संतोष सरावगी

40

श्री रविन्द्र चमडीया

41

श्री विनोद कुमार अग्रवाल

42

श्री कमल कुमार अग्रवाल

43

श्री अजय सराफ

44

श्री बजरंग अग्रवाल

45

श्री संजीब कुमार पटवारी

46

श्री संजय सुरेका

47

श्री हरि कृष्ण चौधरी

48

श्री गणेश प्रसाद कन्दोई

49

श्री रामस्वरूप रूँगटा

50

श्री प्रमोद कुमार नेवटिया

संरक्षक सदस्य

51

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल

52

श्री राज कुमार दाधीच

53

श्री मधुसुदन डालमिया

54

श्री नारायण प्रसाद डालमिया

55

श्री घनश्यामदास अग्रवाल

56

श्री प्रहलाद राय अग्रवाल

57

श्री दिलीप कुमार गोयल

58

श्री शंकर लाल अग्रवाल

59

श्री भगवती प्रसाद जालान

60

श्री संजय सुरेका

61

श्री प्रमोद कुमार शर्मा

62

श्री बजरंग लाल मित्तल

63

श्री जगदीश चन्द्र अग्रवाल

64

श्री भगत राम गुप्ता

65

श्री आनन्द कुमार अग्रवाल

66

श्री मदनलाल अग्रवाल

67

श्री राधेश्याम अग्रवाल

68

श्री राजेन्द्र तोसावड

69

श्री कमल किशोर सारडा

70

श्री रामनाथ झुनझुनवाला

71

श्री बनवारीलाल मित्तल

72

श्री आशिष अग्रवाल

73

श्री रघु हरि डालमिया

74

श्री दशरथ कुमार गुप्ता

75

श्री नीतिन महेश्वरी

संरक्षक सदस्य

76

श्री राजकुमार अग्रवाल

77

श्री जगदीश प्रसाद पाडिया

78

श्री संदीप काबरा

79

श्री दीनदयाल पोद्दार

80

श्री अमित बरलिया

81

श्री संजीव कुमार डाबड़ीवाल

82

श्री प्रेम कुमार लिहला

83

श्री सज्जन कुमार सराफ

84

श्री विनोद कुमार अग्रवाल

85

श्री दाऊ दयाल अग्रवाल

86

श्री नन्द किशोर अग्रवाल

87

श्री बनवारीलाल शर्मा

88

श्री विजय कुमार हरलालका

89

श्री मनीष डोकानिया

90

श्री सुबीर पोद्दार

91

श्री जगदीश चन्द्र एन. मूंदड़ा

92

श्री रामानन्द अग्रवाल

93

श्री जे.के. सराफ

94

श्री अंजनी कुमार गोयल

95

श्री महावीर अग्रवाल

96

श्री अखिलेश कुमार जैन

97

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल

98

श्री निरंजन कुमार अग्रवाल

99

श्री सुभाष कुमार अग्रवाल

100

श्री विजय गुजरवासिया (अग्रवाल)

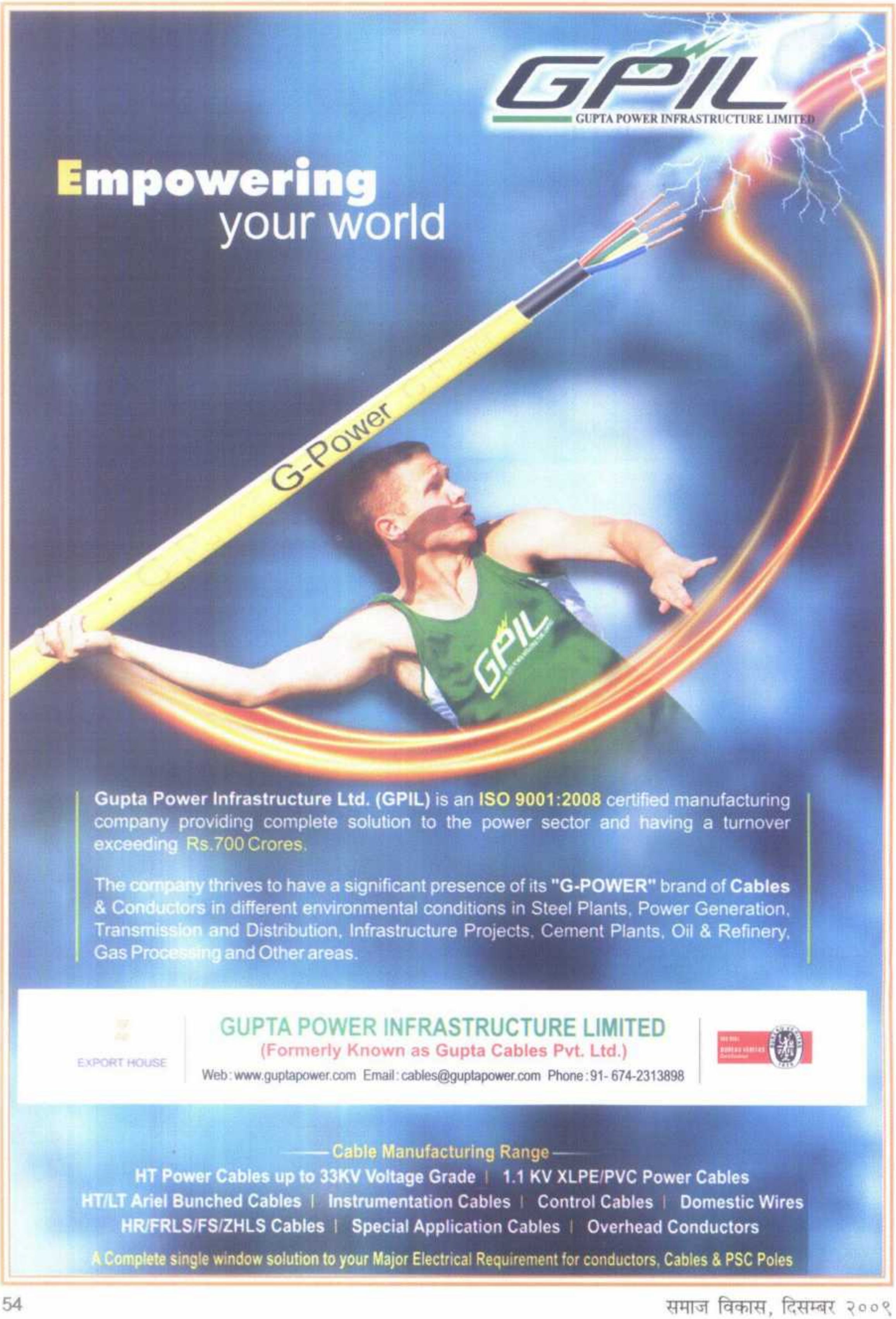
GPIL
GUPTA POWER INFRASTRUCTURE LIMITED
Empowering
your world
G-Power
Gupta Power Infrastructure Ltd. (GPIL) is an ISO 9001:2008 certified manufacturing company providing complete solution to the power sector and having a turnover exceeding Rs.700 Crores.
The company thrives to have a significant presence of its "G-POWER" brand of Cables & Conductors in different environmental conditions in Steel Plants, Power Generation, Transmission and Distribution, Infrastructure Projects, Cement Plants, Oil & Refinery, Gas Processing and Other areas.
EXPORT HOUSE
GUPTA POWER INFRASTRUCTURE LIMITED
(Formerly Known as Gupta Cables Pvt. Ltd.)
Web: www.guptapower.com Email: cables@guptapower.com Phone: 91- 674-2313898
Cable Manufacturing Range
HT Power Cables up to 33KV Voltage Grade | 1.1 KV XLPE/PVC Power Cables
HT/LT Ariel Bunched Cables | Instrumentation Cables | Control Cables | Domestic Wires
HR/FRLS/FS/ZHLS Cables | Special Application Cables | Overhead Conductors
A Complete single window solution to your Major Electrical Requirement for conductors, Cables & PSC Poles

संरक्षक सदस्य

101

श्री मामराज अग्रवाल

102

श्री नवल किशोर राजगड़िया

103

श्री रमेश चन्द गोयल

104

श्री अजित चन्द बोथरा

105

श्री श्रवण कुमार तोदी

106

श्री राजेन्द्र कुमार वच्छावत

107

श्री श्याम सुन्दर बेरीवाल

108

श्री सुशील कुमार केडिया

109

श्री बृज भूषण अग्रवाल

110

श्री चम्पालाल सरावगी

111

श्री अरूण कुमार गुप्ता

112

श्री साधुराम बंसल

113

श्री श्याम लाल डोकानिया

114

श्री मोहन गोयनका

115

श्री आदित्य अग्रवाल

116

श्री दिलीप कुमार राजगड़िया

117

श्री सूर्य प्रकाश बागला

118

श्री नवल कुमार कानोडिया

119

श्री किशन कुमार केजड़ीवाल

120

श्री बनवारीलाल नेवटिया

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

आतिथ्य : मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा

आपको सूचित करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है कि पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का त्रयोदश अधिवेशनः 9 व 10 जनवरी, 2010 *स्थान :* माँ कामाख्या के आंचल में ब्रह्मपुत्र नद के किनारे बसे गुवाहाटी महानगर में चेतना पर्व – 2010, उद्घोष सूत्र वाक्य के साथ सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा के आतिथ्य में सामाजिक महाकुंभ अनुष्ठित होने जा रहा है। आपका स्वागत है।

:: स्वागताध्यक्ष ::	:: स्वागत मंत्री ::	:: शाखाध्यक्ष ::	:: शाखा मंत्री ::
माणिक चन्द जालान	विजय सिंह डागा	कैलाश चन्द्र लोहिया	ललित धानुका
9954066155	9435043690	9435062555	9435019298

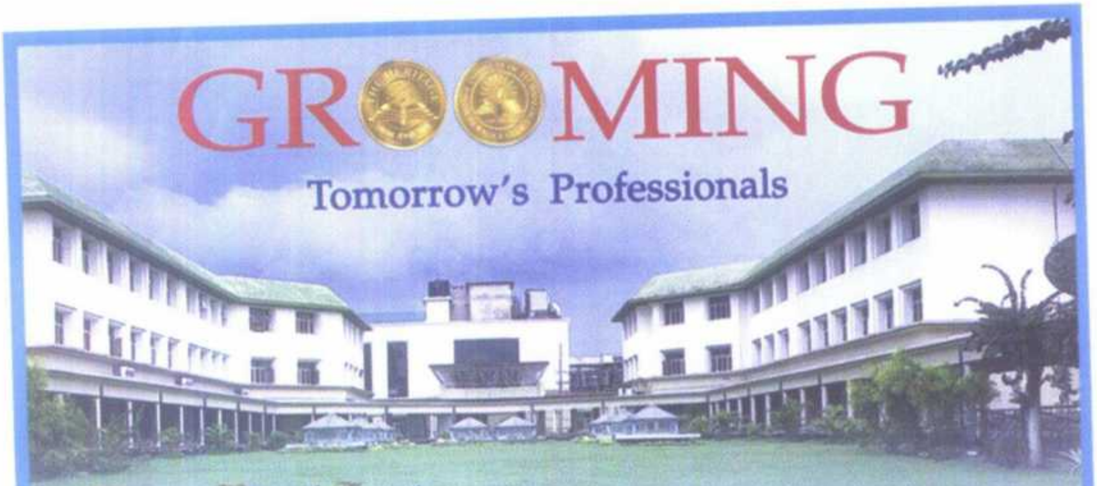

Kalyan Bharti Trust

Kalyan Bharti Trust comprises noted philanthropic industrialists with a zeal to serve the country, particularly West Bengal. The two wings of the Trust - The Heritage School & the Heritage Institute of Technology - are today synonymous with excellence. The Heritage School is affiliated to The Council for Indian School Certificate Examinations, New Delhi while the various courses offered by the Heritage Institute of Technology are affiliated to West Bengal University of Technology (WBUT), duly approved by All India Council for Technical Education (AICTE), New Delhi. The Trust has recently established 'The Heritage Academy' to offer further higher educational courses. The Trust also runs 'Suryakiran', a free evening school and 'Kalyani', a charitable health-care centre for disadvantaged sections of society. Future plans of the Trust include setting up of a Medical & Dental College and an Institute of Law.

Heritage Institute of Technology

B.Tech courses

Applied Electronics & Instrumentation Engg.*
Biotechnology*
Computer Science & Engg.
Chemical Engg.
Electronics & Communication Engg.*
Information Technology*

M.Tech courses

Applied Electronics & Instrumentation Engg.
Biotechnology
Computer Science & Engg.
Chemical Engg.
Electronics & Communication Engg.

*Duly accredited by NBA-AICTE

Management Education Centre

MBA (Day & Evening)
MCA

The Heritage Academy

BBA (H)
BCA (H)

Future Plans

Bachelor of Media Science
Bachelor of Animation & Film Technology
Bachelor of Law
Real Estate & Construction Management
Fashion Technology

Other Salient Features

• Well equipped spacious air-conditioned classrooms & labs • Air-conditioned library automated with LIBSYS and OPAC • Wi-Fi Campus • Hostel accommodation • Highly competent faculty • Excellent Placement

The Heritage School

Chowbaga Road, Anandapur, P.O.: East Kolkata Township,
Kolkata-700107, INDIA
Ph: +91 33 24430448-52
Fax: +91 33 24430453
Email: admin@theheritageschool.org
www.theheritageschool.org

INFO DESK # 9830022250

Heritage Institute of Technology

Chowbaga Road, Anandapur, P.O.: East Kolkata Township
Kolkata-700107, INDIA
Ph: +91 33 24430454/56/57, 24431255-58
Fax: +91 33 24430455/1259
Email: admin@heritageit.edu
www.heritageit.edu

INFO DESK # 9830281234

व्यक्ति, समाज और संस्था के निहितार्थ

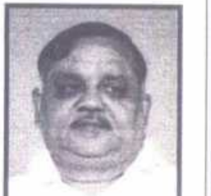

– सोम प्रकाश गोयनका
प्रदेश अध्यक्ष (उ.प्र.)
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

किसी सामाजिक ज्वलंत समस्या पर कुछ लिखना, बोलना या उसे विषय–बद्ध करना मात्र एक औपचारिकता का निर्वाह करना होगा क्योंकि मेरा मानना है कि बिना अनुकूल समाधान प्रस्तुति के केवल समस्याओं का बखान उचित नहीं है। किसी दार्शनिक ने सच ही कहा है कि (If you have no solution to the problem, you are yourself problem to the solution) यानी यदि आपके पास समस्या का समाधान नहीं है तो आप स्वयं ही उसके समाधान में समस्या हैं।

जब सामाजिक समस्या पर कुछ विचार व्यक्त करने की बात हो तो यह समझ में आना चाहिये कि वहाँ एक व्यक्ति की समस्या की बात नहीं है, अनेकों व्यक्तियों के समस्याओं की बात है। क्योंकि व्यक्ति से परिवार और परिवारों के समूह को समाज कहा जाता है। वह भी विशेष कर एक खास समाज। जब ऐसे कई भिन्न प्रकार के समाज अपनी आंचलिकता के आधार पर किसी संस्थागत परिवेश को उभारकर क्रियाशील होते हैं तो उत्पन्न होने वाली समस्यायें या तो बहुसामाजिक होती हैं या फिर संस्थागत होती हैं। इनसे बचा नहीं जा सकता। ये अवश्यसम्भावी हैं। कारण जब व्यक्ति को, जीवन ही समस्याओं से जूझते हुये जीना पड़ता है तो उसके द्वारा निर्मित समाज कैसे अछूता रह सकता है। केवल आवश्यकता है उनके साथ सामंजस्य रखते हुये, समझदारीपूर्ण तरीके से उसके प्रतिकूल प्रभाव से बचकर तनावहीन आनन्दित जीवन जीने की विद्या अपनाना। इसी को सुखी होना कहा जाता है। इसीलिये कहा गया है कि वही सुखी है, जिसमें सुखी रहने का भाव है। यही व्यक्ति का निर्दिष्ट लक्ष्य होना चाहिये। जब व्यक्ति सुखी होगा तो समाज सुखी होगा और उसके द्वारा निर्मित सभी निकाय भी स्वस्थ और समस्याहीन होंगे।

संस्थागत कार्यकलापों में पदों को स्वेच्छा से वरण करने वाले लोगों का भाव व्यक्ति से परे व्यष्टि भाव का होना चाहिये। नेतृत्व की चादर ओढ़ने के पहले उसे स्वयं में आश्वस्त होना चाहिये कि क्या अपनी समस्याओं के समाधान के साथ–साथ उसमें समिष्टिगत समस्याओं के समाधान की क्षमता है कि नहीं? ऐसी गहरी दूरदर्शिता वाला व्यक्ति तो सामाजिक समस्याओं को पैदा होने से पहले ही सीमाबद्ध कर देगा इसी को कहते है (Prevention is better then cure) यानी इलाज से पहले मर्ज की रोकथाम ही बेहतर है। संस्था की स्तर से निवेदित कार्यकलापों का फल, समाज में समाहित होता हुआ, व्यक्ति तक पहुँचता है, तभी संस्था की सार्थकता का बोध जनता को होता है।

संस्थायें कैसे संचालित होती हैं? इसके भिन्न अवयव क्या है? नेतृत्व की क्या भूमिका है? यह बड़ा विषय है किन्तु बहुत ही सूक्ष्म रूप में आपके अवलोकनार्थ कुछ विचार बिन्दु निम्न भाँति उधृत है।

किसी भी संस्था के सफलतम् आयाम हेतु निम्न कुछ बिन्दु परम प्रयोजनीय है। जिन्हें आधारभूत स्तम्भ समझना चाहिये। ये है :– नेतृत्व, सौहार्दता, आर्थिक शक्ति, नारी शक्ति, युवा शक्ति, बौद्धिक शक्ति।

1. सही नेतृत्व : वर्तमान में सभी संस्थाओं के नेतृत्व का आरोपण होता है। वरण की प्रक्रिया कहीं भी नहीं है। यह विधमान राजनीति के प्रदूषण से प्रभावित है। फलतरू निर्वाचन प्रक्रिया के दौर से ही सौहार्दता का आधार कमजोर होने लगता है।

2. सौहर्दता : दूरदर्शी नेतृत्व का यह कर्तव्य होना चाहिये कि पद ग्रहण के पश्चात् सभी समाज सेवियों का सहयोग उन्हें मिले तथा आपसी सौहार्दता किसी भी अवस्था में खण्डित न हो। आखिर संस्था ही संगठन है और संगठन में ही शक्ति है, जिसमें समाविष्ट है सभी शक्तियाँ। चाहे वे आर्थिक शक्ति हो, नारी शक्ति हो, युवा शक्ति हो या बौद्धिक शक्ति।

3. आर्थिक शक्ति : समाज में कतिपय लोग ही इस धरातल पर क्षमतावान व सम्पन्न होते हैं। अतः उनके वांक्षित आर्थिक सहयोग को उभारना नेतृत्व के सेवा निवेदन भाव व चारित्रिकता पर निर्भर करता है। उनके द्वारा धन संग्रह तभी आश्वस्त हो सकता है जब जनता का मन भरे कि प्रदत्त राशि का सही उपयोग होगा तथा वित्तीय लेखा–जोखा भी विश्वसनीय ढंग से रखा जायेगा।

4. नारीशक्ति : भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है। अतः नारीयों की उपेक्षायें व्यवहारगत रूप में हो जाया करती हैं। नया समय नारियों के सशक्तिकरण का है। और उनमें तदनुकूल क्षमतायें भी बढ रही हैं। संख्यागत भी उनका समाज में पचास प्रतिशत होना माना जाना चाहिये। उनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। विशेषकर इस सन्दर्भ को ध्यान में रखकर कि एक माँ एक सौ गुरू के बराबर होती है और पिता दस गुरूओं के बराबर। संस्था ही नहीं हमारी सम्पूर्ण सन्तति के निखार का श्रोत है नारी। अतः इस शक्ति का संयोजन नेतृत्व को अवश्यमेव आश्वस्त करना चाहिये।

5. युवा शक्ति : भारतभूमि का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि यहाँ के युवाओं की तासीर, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक धरातलों पर विद्यमान विसंगतियों को आमूल नष्ट करने हेतु अल्हादित नहीं है। महान दार्शनिक ओशो ने एक जगह कहा है वह "**युवक कैसे, जिसके भीतर विद्रोह न हो, रिवोल्यूशन न हो? युवक होने का मतलब क्या हुआ उसके भीतर? गलती के सामने झुक जाता हो, उसको युवक कैसे कहें?**" नेतृत्व में युवक के उस रूप को झेलने और मर्यादित करने का माद्दा होना चाहिये। क्या पर्याप्त योग्यता के बिना नेतृत्व का ऐसा करना सम्भव है?

6. बौद्धिक शक्ति : देखा जाता है कि समाज और संस्थाओं में बुद्धिजीवियों का वर्ग मुख्य धारा में समाहित नहीं होता। प्रश्न होता है ऐसा क्यों? शायद,कार्य–कलापों में शकून नहीं मिलता और न ही मिलता है पर्याप्त सम्मान। यदि कुछ उनसे प्राप्त करना है तो नेतृत्व को उनकी अनुकूलता का ख्याल रखना चाहिये। क्योंकि अच्छी सोच और योजना उन्नयन की दिशायें खोल देती है।

समस्यायें और निदान सम्भवतः दोनों ही इस आलेख द्वारा प्रस्तुत है। किन्तु अमल निश्चित ही दुसाध्य प्रतीत होता है। अतः समस्याओं के साथ ही निर्वाह करते हुये सामंजस्य और सहजता के सहारे सुख का अनुभव करना ही हमारी नियति है।◆

बालक हैं उपहार : अच्छे हों संस्कार

:: सरोज गिड़िया ::
उत्तर लखीमपुर – 787001 (असम)

भारतीय परम्परा में संतों की सन्निधि जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी गयी है। संतों की वाणी के साथ हम अपनी संस्कृति का सत्कार करते हैं। भारत भूमि की सुरक्षा एवं ऐतिहासिकता का कारण तप, त्याग व संयम बना है इसलिए भारतीय संस्कृति की जीवन्तता बनी हुई है। जहाँ संस्कृति की जीवन्तता बनी रहती है, वहाँ संस्कारों का बीजारोपण अपने आप हो जाता है। संस्कार एक ऐसी अमूल्य धरोहर है जिसको अपनाने से उजड़ा जीवन आबाद हो जाता है।

संस्कारों से सुरक्षित है संस्कृति : अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिए संस्कारों का बीजारोपण करना अति आवश्यक है। हमारे समाज में अध्यात्म, धर्म संस्कार, परम्पराएं उपेक्षित हो रही हैं। बच्चे का जीवन सफेद कागज के तुल्य होता है, इन पर जैसा चित्र उकेरा जाता है, वह चित्रित हो जाता है। अच्छे संस्कारों को आत्मसात करने वाला स्वयं सुखी होगा व औरों को भी सुख की राह दिखाएगा। अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखना है तो बच्चों को अध्यात्म की घुट्टी देना आवश्यक है।

जीवन में संस्कार निर्माण का समय : मकान की नींव मजबूत होगी तभी मकान मजबूत होगा, इसी प्रकार अगर बच्चों की नींव सुदृढ होगी तभी उनका भविष्य उज्जवल होगा। बालक आंगन की किलकारी है, माँ की ममता का कलश है, समता की शोभा व देश का भविष्य है। घर में माता–पिता व स्कूलों में शिक्षकगण संस्कृति को सुरक्षित रखने के संस्कार दें तो बच्चे संस्कारी बन सकते हैं। गर्भस्थ बालक भी संस्कारों को ग्रहण करने में सक्षम होता है। वैसे बालकों में संस्कार निर्माण का समय पांच से पंद्रह वर्ष की आयु माना गया है।

अगली पीढी में संस्कारों की विरासत सौंपें : प्रत्येक व्यक्ति अपना विकास चाहता है, ज्ञान के द्वारा ही विकास संभव है। सिर्फ बाहर का ज्ञान ही नहीं अपितु आत्मिक ज्ञान भी जरूरी है। बहुत जरूरी है कि बड़े लोग बच्चों को सिर्फ सुख सुविधाओं के संसाधन ही विरासत में सौंपने की चिन्ता न करें, अगली पीढी को संस्कारों की पूंजी विरासत में सौंपें। बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो ये तीनों बातें जीवन को आदर्श बनाती हैं। अच्छे बच्चे की पहचान के ये तीन पैरामीटर हैं–विनय, सहनशीलता व दयालुता।

माँ बच्चे की प्रथम पाठशाला : बच्चे राष्ट्र की अनमोल निधि हैं, इन भावी कर्णधारों को सुसंस्कारी बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका होती है–माता की। पूरे परिवार में माता ही बालक के सबसे करीब होती है। महिलाएं परिवार की रीढ होती हैं, पारीवारिक हर परिस्थिति को समझने–परखने और उसे हैंडल करने का तरीका महिला ही समझ कर परिवार को एक डोर में बांधे रख सकती है। मातृ शक्ति को जागरुक रहना जरूरी है, उनका प्रमुख दायित्व बन जाता है कि परिवार में विकृति को न घुसने दें। उनके बच्चे कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, कैसे दोस्तों के साथ रहते हैं, इसकी पूरी चौकसी रखें तभी संस्कार सुरक्षित रह सकते हैं।

जीवन में लक्ष्य बनाएं : जीवन में हरदम स्वस्थ रहें, ऐसा लक्ष्य बनाएं कहा भी है पहला सुख, निरोगी काया। व्यक्तित्व निर्माण में सद्संस्कारों का विशिष्ट योगदान है। सुघड़ व्यवहार एवं उदात्त विचार व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हैं। शरीर को मजबूत व स्वस्थ रखने के लिए पहली आवश्यकता है–आहार। हम एक दिन भी आहार नही करें तो शरीर में कमजोरी आ जाती है। हमें अपने शरीर की स्वस्थता को कायम रखने के लिए, आहार की तरफ विशेष ध्यान देकर, उसमें सुधार लाना आवश्यक है। शरीर के पोषण का आधार आहार है, भोजन का अभाव व अतिभाव दोनों ही व्यक्ति के लिए कठिनाई पैदा कर सकते हैं। व्यक्ति भोजन के लिए न जीए, बल्कि जीने के लिए भोजन का प्रयोग करे। स्वास्थ्य के प्रतिकूल खाद्य नहीं लेना चाहिए। सदाचार, सहनशीलता, विनय नम्रता जैसे गुणों का जीवन में होना बहुत जरुरी है, इसका ध्यान रखें।

प्रेरणा के द्वारा स्वभाव बदला जा सकता है : घर के वातावरण का जीवन पर बहुत प्रभाव पडता है। किसी सदस्य को व्यसन या नशा करने की आदत है तो महिलाएं पुरुषों व बच्चों में प्रेरणा के दुवारा उन आदतों को सुधरवा सकती हैं। वर्तमान में विद्यार्थी छोटी सी बातों से तनाव में आ जाते हैं, इसलिए सभी सदस्य ध्यान रखें कि घर का वातावरण तनावग्रस्त न हो, खुशनुमा माहौल हो। एक–दूसरे की छोटी–छोटी गलतियों को नजर अंदाज करें। नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलने की कोशिश करें। वे माता–पिता बच्चों के शत्रु हैं, जो अपने बच्चों को शिक्षित व संस्कारी नहीं करते।

योग से रोग मुक्ति : समाज का दर्पण है जीवन शैली, उस समाज में जीनेवाले व्यक्तियों की जीवनचर्या से उसकी स्वस्थता का अंदाजा लगाया जा सकता है। जीवन सुखमय बीते इसके लिए शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य का होना अति आवश्यक है। तनाव, डिप्रेशन, थाइराइड, गर्दन की बिमारी, ब्लड प्रेशर आदी अनेक

बिमारियां तो योग के कुछ दिन के प्रयोग से ही ठीक हो जाती हैं। योग स्वस्थ परिवार का अमृत है, जो व्यक्ति स्वस्थ रहेगा वही कुछ कर सकता है। स्वस्थ मन से मन के विचारों में पवित्रता आती है, भावना अच्छी आती है। शुद्ध भावना से व्यक्ति अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है। निरंतर योग के प्रयोग से क्रोध को भी विफल किया जा सकता है। बच्चों का जीवन कच्ची मिट्टी की तरह होता है, जिसे जैसा चाहें वैसे घट का आकार प्रदान किया जा सकता है। आवश्यकता है उन्हें सत्ससंस्कार देने की। प्रेक्षा (यानि ध्यान में देखना) एक प्रयोग है। प्रेक्षा चिकित्सा, जिससे बिना औषध के आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग से समस्याओं का समाधान होता है। शारीरिक रोग, तनाव मुक्ति, शरीर का हल्कापन आंतरिक पवित्रता आदि में इनके नियमित अभ्यास से बहुत लाभ मिलता है।

संस्कार निर्माण शिविरों से बच्चों में प्रेरणा : बचपन के पल बडे स्वर्णिम होते हैं, निर्माण की इस धरा पर जैसा बीज बोया जाएगा– वैसा ही फल प्राप्त होगा। शिविरों के माध्यम से बच्चों के कोमल मन की उर्वरा धरती में बोए गए संस्कार के बीज ही विस्तार पाकर एक दिन विशाल वट वृक्ष रूप में कामयाब होंगे। शिविर, जीवन निर्माण के लिए जीवन को मजबूती देते हैं, स्वस्थता, सहयोग , समानता, सहानुभूति आदि गुण देते हैं।

हमें बच्चों को बहुत ही प्रेम से शिक्षा देनी चाहिए। शिविरों का आयोजन इसलिए होता है कि बच्चों में बुरे संस्कार न आएं, वे आपस में गाली गलौज न करें, अगर उनमें कोई दुर्गुण घर कर गया है तो उसे छोड कर अच्छे विद्यार्थी बनें। उन्हें कुशल मार्गदर्शन दे सकें। क्रोध को शांत करने के उपाय, व्यक्तित्व विकास के सहयोगी सूत्र, अपनी सफाई रख कर बिमारियों से दूर रहने की शिक्षा, नैतिक अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणाएं, दूरदर्शन का सम्यक दर्शन आदि के बारे में बताया जाए। मनोरंजन व स्मृति विकास के लिए प्रतियोगिताएं करवायी जाएं।

यादाश्त बढाने के लिए सुझाव : ज्ञान मुद्रा व 'ॐ ऐं ॐ' मंत्र का उच्चारण, भ्रामरी प्राणायाम आदि शिविरों में करवाने से स्मरण शक्ति बढ सकती है। सही तरीके से बैठने व सोने की क्रिया बच्चों को समझाएं । उन्हें बताएं कि भूख से ज्यादा नही खाना, खाने के तुरंत बाद पानी नहीं पीना, बार–बार नहीं खाना। टी.वी. देखते हुए खाना नहीं खाना आदि बातों का भी ज्ञान शिविरों में बच्चों को दे। आहार का संयम, इन्द्रियों का संयम सबके तन–मन को प्रभावित करना है एवं स्वस्थ रखता है। स्वस्थ परिवार से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। यह सब बातें सिखाना, संस्कार निर्माण शिविरों का बार–बार आयोजन करके ही संभव कर सकते हैं।

इसलिए मारवाड़ी महिला मंच, लखीमपुर बच्चों के लिए ऐसे शिविर, निरंतर करने की कोशिश करे। ऐसी हमारी भविष्य की योजना है।◆

With Best Compliments From

कोलकाता से 26 साल से नियमित निकलनेवाला एकमात्र सान्ध्य अखबार

खबरें श्रेष्ठ

सबसे बेस्ट

सेवासंसार

-: प्रधान कार्यालय :-

42, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोलकाता-6 (प. बं.), भारत

फोन : 3296 0578, 98300 83119, 98041 54115

फैक्स : 2259 4049, e-mail: sevasansar@gmail.com

-: वर्द्धवान जिला कार्यालय :-

सेवा सदन

जी. टी. रोड, पानागढ़ बाजार

जिला : दुर्गापुर (प. बं.), भारत

समाज तब और अब

– राधाकृष्ण माहेश्वरी

हमारे पूर्वजों की जीवनशैली पर यदि नजर दौड़ाएं तो हमें यह अहसास होगा कि उनके हृदय में सामाजिक सद्भावना का विशाल भण्डार था। जो समय–समय पर एक दूसरे से मिलने पर प्रकट होता था। समाज में उच्चवर्ग–धनाढ्य, मध्यवर्ग–दाल रोटी वाले, कमजोर वर्ग–अभाव ग्रस्त पहले भी थे, आज भी हैं।

उस समय इन वर्गों में आपस में कटुता इतनी नहीं थी जितनी आज देखने में आती है। उस समय भी वर्चस्व धनाढ्य वर्ग का ही रहता था। पर वे कमजोर एवं मध्यम वर्ग से इतने कटे हुए नहीं थे जितने आज हैं। व्यवस्था कैसी भी रही हो, वे समाज में अनुशासन को महत्व देते थे। धनी व्यक्ति अकसर अभावग्रस्तों के घर पर स्वयं जाकर उनका हाल चाल पूछता था तथा उनकी जरूरतों को पूरा करने की इच्छा रखता था। शादी व्याह में, बीमारी में तथा संकट की घड़ियों में वह उनकी आर्थिक मदद करता था। इसलिए वह सेठ कहलाता था। सेठ का अर्थ है श्रेष्ठ उस जमाने में समाज कल्याण की भावना से सेठ लोगों ने देश में अनेक मन्दिर, धर्मशालाओं, भवन, स्कूल, दवाखाने बनाये जो आज भी उनकी विशालता, उदारता, उपकारिता तथा सामाजिकता के प्रतीक बने उनकी सहृदयता का परिचय दे रहे हैं।

वर्तमान में समाज अपने पूर्वजों के उच्च आदर्शों को भुला बैठा है। आज उच्चवर्ग का संपन्न व्यक्ति अपने आपको इतना उच्च समझने लगा है कि वह अपने गरीब सजातीय बंधु से मिलने में शर्म महसूस करता है। कोई सामान्य व्यक्ति अपनी विपन्नता बयान करने के लिए चाहने पर भी, किसी धनपति से मिल नहीं सकता क्योंकि उसके बंगले पर तैनात गार्ड उसे गेट के अन्दर घुसने ही नहीं देते। किसी भी प्रकार से धन कमाना तथा अनुत्पादक मदों में उसे खर्च करके अपने वैभव का प्रदर्शन करना ही उनका ध्येय रह गया है। अनेक सामाजिक संस्थाओं में इन्हीं लोगों का दबदबा है। संस्थाओं के कार्यक्रमों में अधिकतर धन व समय नेताओं/पदाधिकारियों के स्वागत समारोहों में तथा दावतों में ही खर्च हो जाता है। संस्थाओं में समाज के पीड़ित तथा अभावग्रस्तों की मदद हेतु कोई विशेष योजना नहीं बनती।

महेशनवमी के पर्व पर, दीपावली स्नेह मिलन के अवसर पर पहले सामाजिक चिंतन होता था, समाज सुधार पर चर्चा होती थी, कल्याणकारी योजनाएँ बनती थी, अनावश्यक खर्चे तथा रूढ़ियों के शमन हेतु उचित कदम उठाए जाते थे। आज केवल मनोरंजन व स्वादिष्ट व्यंजनों पर ही लोगों का ध्यान केन्द्रित है।

आजकल ऊँचे प्रतिष्ठित लोगों के शादी समारोह शहर से मीलों दूर किसी गार्डन, रिसोर्ट में होते हैं जहाँ लाखों करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। ऐसे स्थलों पर केवल मोटर वाले और स्कूटर वाले ही पहुँच सकते है। किसी गरीब रिश्तेदार के लिए ये स्थल पहुँच के बाहर हैं। सामाजिक नियमों की धज्जियाँ उड़ाने में धनी लोगों का ही नाम प्रमुख रहता है। ऐसी परिस्थिति में गरीब व अमीर में दूरियाँ बढ़ेगी नहीं तो क्या होगी। इस प्रकार समाज में विषमताएँ बढ़ रही हैं तथा हमारे पूर्वजों की गौरवमयी परंपराओं को गहरी चोट पहुँच रही है। आजकल शादियों में पचास–साठ प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं जबकि पूर्वकाल में अधिक से अधिक दस–ग्यारह व्यंजन ही हुआ करते थे। शादियों में भव्य स्टेज सजावट, आर्केस्ट्रा, फोटू विडियों, कानफोड़ू पटाखों का प्रचलन अधिक हो गया है। यह केवल एक दिन का शो है, फिजूलखर्ची है।

इन खर्चों को बचाकर गरीबों की मदद की जा सकती है। हमारे पूर्वज मितव्ययी थे अनुशासित थे। ये गुण आज के लोगों में कहाँ, विवाह संबंधों को जुड़ाने का कार्य पहले बुजुर्ग लोग ही किया करते थे। उनकी बात मानी जाती थी। आज रिश्ते जमाना काफी कठिन हो गया है। इस कार्य में सहयोग करने वालों की समाज में भारी कमी है। विवाह सहयोग केन्द्रों में, परिचय सम्मेलनों में लड़कों के बायोडेटा ही अधिक आते हैं। लड़कियों के बायोडेटा बहुत कम आते हैं। अब एक हाथ से ताली कैसे बजे?

समाज में तलाक की घटनाएँ बढ़ रही हैं। अन्तर्जातीय विवाह धड़ल्ले से हो रहे हैं। आज समाज ने, नाखुशी से ही सही, ऐसे विवाहों को मान्यता प्रदान कर दी है। अब दहेज का मुद्दा कम हो गया है तलाक की समस्या बढ़ गई है। विवाह सुधार तथा समाज सुधार पर समाज में चिंतन करने की आवश्यकता है जिसके प्रति समाज का नेतृत्व उदासीन है। आज के नेतृत्व के बारे में यही कहा जा सकता है कि समाज में अधिकतर नेताओं का कार्य समाज सेवा का मुखौटा ओढ़कर अहं का प्रदर्शन करना, बिना कुछ किये पद से चिपके रहना, ग्रुप बनाकर चुनाव जीतना अखबारों में अपने फोटू छपवाना तथा विवाहों में फिजूलखर्ची करते हुए नकली उदारता दिखाना ही रह गया है। इनसे पूछा जा सकता है कि क्या फिजूलखर्ची समाज सेवा है, क्या बड़ी–बड़ी दावतों का आयोजन समाज सेवा है, क्या विवाह के अवसर पर स्टेज पर या सड़कों पर नृत्य संस्कृति को बढावा देना समाज सेवा है? इन से यह भी पूछा जा सकता है कि क्या नेतृत्व सम्भालने के बाद, हमारे पूर्वजों की भांति इन्होंने गरीब परिवार के घर जाकर उनके दुख–सुख के बारे में पूछताछ कर उनकी समस्याओं का समाधान किया है, क्या हमारे पूर्वज नासमझ थे जो मितव्ययिता तथा सादगी का पाठ पढ़ाते थे? सामाजिक सद्भाव की जड़ें तो सहयोग, समर्पण तथा समत्व भाव से ही विकसित होती हैं। अनेक लोग अपने आपको समाज से अलग मानकर अपना डेढ़ चावल अलग पकाने में ही संतोष मानते हैं। कुछ अपने आप में ही मस्त रहते है, स्वयं की प्रतिष्ठा तथा नाम को ही महत्व देते हैं।

व्यक्ति की पहचान तो समाज से होती है और प्रतिष्ठा सेवा कार्यों से बनती है। अत: निस्वार्थ भाव से समाज सेवा में लगे हुए व्यक्ति ही समाज के गौरव तथा देश की सम्पदा माने जायेंगे।

– 33, राजा संतोष रोड, कोलकाता – 700 027

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री रमेश चन्द सिंघल**
कार्यालय का पता :
शांति कॉटेज एण्ड इन प्रा. लि.
१२२, हरिसभा मट्ठ, ब्रह्मपुर
कोलकाता – ७०० ०८४
मोबाईल नं.–०९८३०७११६८३

नाम : **श्री बजरंग लाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एडवोकेट एण्ड टेक्स कांसलटेंट
डाकापट्टी, नवगांव–७८२००१, असम
मोबाईल नं.–०९४३५०६०५४६

नाम : **श्री सर्वेश सारस्वत**
कार्यालय का पता :
ई–४०, वैशाली नगर
गुप्ता स्टोर के पीछे
जयपुर – ३०२००३
मोबाईल नं.–०९८२९०६०७५९

नाम : **श्री प्रदीप कुमार चौधरी**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– अमित ट्रेडर्स
संजय चौक, सीराईकेला
झारखण्ड – ८३३२१९
मोबाईल नं.–०९३३४६०९७७६

नाम : **श्री लूणकरण सूरेका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– सूरेका वायर प्रा.लि.
९, ईनीपा एक्सचेंज प्लेस
कोलकाता – १
मोबाईल नं.–०९८३०५८५५५६

नाम : **श्री मनोज कुमार बारारिया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– जैन मेटल स्टोर
फ्युंट सोलिंग, भुटान
पो.बाक्स नं. – १२८
मोबाईल नं.–०९३३३४२५८९९

नाम : **श्री जे. एन. बावरी**
कार्यालय का पता :
बड़ाबाजार रोड
शिलांग, मेघालय–७९३००२
मोबाईल नं.–०९८६३०९७९००

नाम : **श्री बाल किशन गोयल**
कार्यालय का पता :
७ए, क्लाइव रो
कोलकाता – ७०० ००१
मोबाईल नं.–०९३३०८३७५८०

नाम : **श्री प्रियेश ओझा**
कार्यालय का पता :
१७२६–बी, स्कीम नं. ७१
रंजीत हनुमान मंदिर के पीछे
इंदौर – ४५२००९
दूरभाष –०७३१–४०५६५५१

नाम : **श्री विक्रम मोट**
कार्यालय का पता :
गोदावरी मेडिकल एण्ड प्रोविजन स्टोर
कुचामन रोड, चुंगी चौकी नं. १
सुभाष सर्किल, डीडवाना–३४१३०३(रा.)
मोबाईल नं.–०९८२९०३७५५३

नाम : **श्री योगराज गर्ग**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– विक्की ऑटो प्रा.लि.
५१, सेवक रोड, ज्ञान भवन
सीलीगुड़ी – ७३४००१
मोबाईल – ०९८००८११२२२

नाम : **श्री हरक चन्द जैन**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– मेघ मोटर्स
२९, कैंटनमेंट एरिया
शिलांग – ७९३००१ (मेघालय)
मोबाईल नं.–०९४३६१०१०४३

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री बिनोद कुमार भुवालका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– फाईबरटेक्स इंडस्ट्रीज (इण्डिया)
फ्लाट नं. – ८९, सेक्टर – ६
फरीदाबाद – १२१००६ (हरियाणा)
मोबाईल नं.–०९८११०२३१३४

नाम : **श्री प्रह्लाद कुमार चौधरी**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– लोहिया मातृ सेवा सदन
२९६बी, रविन्द्र सरणी
कोलकाता–७०० ००६
मोबाईल नं.–०९३३९३३७५२१

नाम : **श्री प्रेमचन्द अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
द्वारा– निमंत्रण कार्ड
१४७, अशोक नगर
भुवनेश्वर – ७५१००९, उड़ीसा
मोबाईल नं.– ०९८६१६८०४९०

नाम : **श्री ईश्वर दास अग्रवाल**
निवास का पता :
मेसर्स– जयगांव ग्लास हाउस
जयगांव ग्लास हाउस (जयगांव)
जलपाईगुड़ी

नाम : **श्री प्रीतम कुमार मोरवानी**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– जेमीनी टावर एण्ड ट्रैवल्स
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बिल्डिंग आर.पी. सेंटर
.जयगांव, पोस्ट–जलपाईगुड़ी–७३६१८२ (प.बं)
मोबाईल नं.–०९२३३७६९८६१

नाम : **श्री सुरेश कुमार बंसल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– श्री संगम
एम. जी. रोड,
सिलीगुड़ी – ७३४४०५
मोबाईल नं.–०९४३४०४४५२५

नाम : **श्री जय कुमार जैन**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– कोनार्क इण्डस्ट्रियल इक्यूपमेंट
एम.जी. रोड, जेयपुर
कोरापुट – ७६४००१, उड़ीसा
मोबाईल नं.– ०९४३९०७७७७७

नाम : **श्री राजेश कुमार तोषनीवाल**
निवास का पता :
मेसर्स– तोषनीवाल राइस मिल्स
गांधी चौक, जेयपुर
कोरापुट–७६४००१, उड़ीसा
मोबाईल नं.–०९४३७०७६५००

नाम : **श्री मूलचन्द प्रजापति**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– प्रजापति क्लोथ स्टोर
डेली मार्केट, जेयपुर
कोरापुट–७६४००१, उड़ीसा
मोबाईल नं.–०९४३८३५१४३३

नाम : **श्री श्रवण कुमार ढ़ाका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एस.के. ढ़ाका
मील स्ट्रीट, जेयपुर
कोरापुट–७६४००१, उड़ीसा
मोबाईल नं.–०९४३७११८२९२

नाम : **श्री आनन्द कुमार चौखानी**
कार्यालय का पता :
ए. आर. टेक्सटाइल
जी. एस. रोड, शिलांग – ७९३००२
मोबाईल नं. – ०९४३६१०१४३५

नाम : **श्री कुँज बिहारी अजमेरा**
कार्यालय का पता :
अजमेरा मार्बल्स
२६ए, कैंट जी. एस. रोड
शिलांग – ७९३००१
मोबाईल नं.–०९४३६१००६५४

मारवाड़ी सम्मेलन की प्रासंगिकता

– डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका, प्रादेशिक अध्यक्ष
पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन,

मारवाड़ी सम्मेलन विचार मंच है और दूसरे रूप में समाज के लिए फायर ब्रिगेड भी है। जब–जब भी समाज पर इस प्रकार की कोई आपदा आई, तब–तब सम्मेलन सामने आया। चाहे वह घटना 1966 के खाद्य आन्दोलन की हो या 26 जनवरी 1968 अथवा सितम्बर 1973 में इम्फाल में घटित घटना या फिर 1990–91 के दौरान हुई हिंसात्मक घटना में सम्मेलन पूरे समाज के साथ था।

कलियुगे संगठने शक्ति : यह उद्‌घोष हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में दिया गया है। हकीकत भी है कि संगठन में ही शक्ति होती है। जैसा कि कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। आज के परिप्रेक्ष्य में जब हम अपने चारों ओर देखते हैं, तो पाते हैं कि हर जगह संगठनों का ही बोलबाला है और जीत भी उन्हीं की होती है। अकेला व्यक्ति या समाज छिन्न–भिन्न है, उसका अपना कोई वजूद या अस्तित्व नहीं है और ना ही उसकी मान–मर्यादा। जब हम अतीत की ओर देखते हैं तो पाते है कि एक समय मारवाड़ी समाज संगठित था, लेकिन आज की तरह विभिन्न जातियों–उपजातियों के बीच बँटा हुआ था। समाज में अग्रवाल, ब्राह्मण, जैन, माहेश्वरी, ओसवाल, जाट, माली, प्रजापत इत्यादि छोटे–मोटे जातीय संगठन थे, जो केवल एक घटक विशेष के उद्देश्यों की पूर्ति करते थे। वृहतर स्वार्थ की सिद्धि इन संगठनों से नहीं होती थी और इनकी इतनी क्षमता भी नहीं थी कि वे पूरे मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व कर अपने हितों की लड़ाई लड़ सके।

प्रसंगवश हम यहाँ यह बताना समीचीन समझते हैं कि आजादी के पहले अर्थात–सन् १९३५ में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने आम भारतीय नागरिकों को मताधिकार देने की योजना बनायी। उस समय अंग्रेजी सरकार के सामने यह समस्या आई कि किसी भी मूल प्रदेश में इत्तर राज्यों से आकर प्रवास करनेवाले नागरिकों को मताधिकार दिया जाय अथवा नहीं। उच्च स्तरीय विचार–विमर्श के पश्चात सरकार ने निर्णय लिया कि प्रवासियों को मताधिकार नहीं दिया जाना चाहिए। सरकार के इस फैसले का चारों ओर जोरदार विरोध हुआ। चूंकि उन दिनों बृहद मारवाड़ी समाज का कोई सशक्त सामाजिक संगठन नहीं था, केवल कुछ एक व्यापारिक संगठन थे, जैसे मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स अथवा मारवाड़ी व्यापार मंडल आदि आदि। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार के इस फैसले का विरोध करने के लिए मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म हुआ। हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि सम्मेलन रूपी इस अखिल भारतीय संस्था का जन्म असम के प्रसिद्ध एवं सामाजिक क्रान्तिकारी कहे जानेवाले शहर डिब्रुगढ़ में हुआ। असम प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से जन्मे इस संगठन का पहला अधिवेशन डिब्रुगढ़ शहर में नवम्बर १९३५ को स्वनामधन्य एवं प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी तथा शालीसीटर प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन में सरकार के फैसले का विरोध करने का निर्णय लिया गया। मारवाड़ी समाज के विरोध के अलावा अन्य कई संगठनों ने भी पुरजोर विरोध किया। फलस्वरूप सरकार ने तत्कालीन कमिश्नर मि.हेमण्ड के नेतृत्व में एक कमीशन का गठन किया, जो यह पता लगाएगा कि प्रवासी नागरिकों को मताधिकार दिया जाए अथवा नहीं। असम में मारवाड़ी समाज की ओर से प्रसिद्ध समाज सेवी और प्रथम मारवाड़ी वकील श्रद्धेय केदारमलजी ब्राह्मण के नेतृत्व में समाज का एक प्रतिनिधि मंडल हेमण्ड कमिशन से मिला और उन्हें मताधिकार दिलाए जाने के सन्दर्भ में एक ज्ञापन दिया। इसी प्रकार का एक ज्ञापन असम डोमीसाइल्ड सेटलर्स एसोसियेशन की ओर से धुबड़ी के प्रसिद्ध अधिवक्ता कालीचरण सेन के नेतृत्व में भी ज्ञापन देकर मताधिकार की मांग की गई। फलस्वरूप अंग्रेज सरकार को बाध्य होकर प्रवासी नागरिकों को मताधिकार देने पर सहमत होना पड़ा और ब्रिटिश इण्डिया एक्ट १९३५ के माध्यम से इसे लागू किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि संगठन की क्या महत्ता है। मारवाड़ी सम्मेलन की यह सबसे बड़ी और पहली एतिहासिक विजय रही है।

अब हम मूल विषय पर आते हैं कि सम्मेलन की समाज के प्रति क्या भूमिका होनी चाहिए और उसे किस प्रकार के कार्य सम्पादित करने चाहिए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं कि जनकल्याणकारी और समाज सेवा जैसे कार्य करने के लिए अनेकों छोटे–बड़े संगठन और क्लब हैं, जिनकी बदौलत वे सीमित दायरे में जन सेवा के कार्य कर रहे हैं। कुछ ऐसे संगठन भी हैं जो जाति–उपजाति अथवा गांव–नगर विशेष के नाम से बने अपने हितों के लिए कार्य कर रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद प्रश्न यह है कि जब इतने संगठन हैं, तो फिर मारवाड़ी सम्मेलन की क्या आवश्यकता है?

With Best Compliments From

कौस्तुभ जयंती पर हमारी तरफ से शुभकामनाएँ

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

DINODIYA WELFARE TRUST

White House, 119, Park Street,
Kolkata - 700 016
Phone No. 22290037 / 45

बंधुओं ! आवश्यकता है। आज समाज में जितने भी संगठन हैं वे सभी जाति–उपजाति के दायरे में बंधे हुए हैं और वे पूरे मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करते। जब भी पूरे मारवाड़ी समाज पर कोई आपदा–विपत्ति आई, तब–तब मारवाड़ी सम्मेलन, युवा मंच और महिला सम्मेलन ही सामने आया और उसने मुसीबतों का सामना कर समाज को राहत पहुंचाई। उस वक्त ये घटक संगठन कहीं भी विरोध करने की स्थिति में नहीं रहते। वास्तविकता भी यह है कि जब भी हमारे ऊपर कोई असामाजिक तत्वों का अत्याचार अथवा हिंसा होती है तो वह केवल मारवाड़ी के नाम पर ही होती है, न कि ब्राह्मण, अग्रवाल, जैन और महेश्वरी इत्यादि के नाम पर।

मारवाड़ी सम्मेलन विचार मंच है और दूसरे रूप में समाज के लिए फायर ब्रिगेड भी है। जब–जब भी समाज पर इस प्रकार की कोई आपदा आई, तब–तब सम्मेलन सामने आया। चाहे वह घटना १९६६ के खाद्य आन्दोलन की हो या २६ जनवरी १९६८ अथवा सितम्बर १९७३ में इम्फाल में घटित घटना या फिर १९९०–९१ के दौरान हुई हिंसात्मक घटना में सम्मेलन पूरे समाज के साथ था। यह कहना अधिक समीचीन होगा कि मारवाड़ी सम्मेलन एक विचार प्रधान संस्था है न कि जन सेवी संगठन। हालांकि सम्मेलन की शाखाएं इस क्षेत्र में स्वतंत्र हैं और वे जन सेवा के कार्य भी कर रही हैं, जो कि एक सुखद संकेत है। मारवाड़ी युवा मंच व महिला सम्मेलन ने भी समाज सेवा के अनेको प्रकल्प हाथों में ले रखे हैं।

सम्मेलन ने प्रारंभ काल से मृतक भोज, परदा प्रथा, दहेज आदि सामाजिक कुरीतियों के विरोध में अनेक लड़ाइयाँ लडी हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार, महिला स–शक्तिकरण के लिए सम्मेलन ने पुरजोर प्रयास किया है, जिसका सुखद परिणाम आज हमारे सामने है। व्यापार जगत में भी समाज के व्यक्तियों को जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए सम्मेलन ने सार्थक एवं अहम भुमिका निभाई है। सम्मेलन ने युवा और महिला वर्ग, मुनीम–गुमास्ते, हरिजन आदि वर्गों के लिए निरन्तर एक विचार मंच का सृजन कर उनकी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। सम्मेलन की छत्रछाया के नीचे अनेकों बड़े–बड़े कार्यों को सफलता का अंजाम दिया है। आंतक की लडाई हो या इतर समाज के साथ हिंसा या सरकारी जुल्म हो, सम्मेलन सदैव एक अहम भूमिका निभाते चला आ रहा है। समाज के सभी वर्ग अग्रवाल, ओसवाल, जैन, ब्राह्मण, माहेश्वरी, जाट, माली राजपूत आदि वर्गों को एक छत्र के नीचे लाकर उनकी समस्याओं पर प्रकाश डाला है व विकट स्थिति में हर स्तर पर सम्मेलन ने प्रतिनिधित्व किया है।

गत ४० वर्षों से मैं सम्मेलन से सक्रिय रूप से जुडा हुआ हूँ और देख रहा हूँ कि समाज को इस संगठन से बहुत सी अपेक्षाएं हैं। यद्यपि व्यक्ति विशेष का कोई योगदान नहीं है या न्यूनतम रहता है। नीचले स्तर पर नेतृत्व सम्भाले हुए व्यक्ति भी बहुत बडी अपेक्षा रखते हैं, यद्यपि वे धन, समय व शक्ति का कोई योगदान नहीं देते हैं।

– ''हरलालका बिल्डिंग''
ए.टी. रोड, कुमारपाड़ा, एस.सी. रोड
गुवाहाटी – 781001
मोबाईल न.–9435042247

With Best Compliments From

Bal Krishna Maheshwari

33, RAJA SANTOSH ROAD,
(FRONT BLOCK) FLAT NO.3-B, ALIPORE
KOLKATA - 700027

PHONE : 2479-5412

दहेज, दहेज पर बने कानून का दुरुपयोग आखिर क्यों?

– राजेश बजाज, कोषाध्यक्ष
बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

विगत कई दशकों से हम सभी सामाजिक संगठन को सुदृढ़ करने के प्रयत्न में लगे हैं। भाषण–अभिभाषण और वादों इरादों का दौर निरन्तर बढ़ता जा रहा है, पर लगता है हमारी प्रगति का रथ–चक्र रफ्तार नहीं पकड़ सका है। कथनी को करनी के रूप में परिवर्तन करने के लिए जिस भगीरथ प्रयास की जरूरत थी– उसमें कमी रह गयी है। इस तथ्य का प्रमाण है कि दहेज–दानव का आतंक यथावत है। हम दहेज उत्पीड़न की घटनाओं से व्यथित हैं। हमारी बहनों, बेटियों की चीख–पुकार का असर न जाने क्यों हमारे समाज पर नहीं पड़ रहा है। इसके विरुद्ध आवाज उठाइये तो लोग कहेंगे– ''भाई बार–बार दहेज की बातें करने के फायदे कुछ आणी–जाणी बात कोनी। जिन जयाँ करणी है करण द्यो।'' अब आप ही सोचिये ऐसी बातें कहकर समाज की गम्भीर समस्या से मुँह मोड़ना क्या उचित है?

आज के इस वैज्ञानिक युग में भी रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, कुरीतियाँ एवं लोभ–लालच जैसी कुप्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। क्या यह अज्ञानता नहीं है? कोई भी संबंध प्रेम का होता है, फिर पैसे की बात कहाँ से आ गई। अपनी बेटी के लिए सुनहरे सपने संजोने वाले पिता, बहू के प्रति कठोर कैसे हो गये! धर्मराज युधिष्ठिर ने धर्म की परिभाषा बताते हुए कहा था कि– ''जैसे अपने लिए चाहते हो वैसा दूसरों के लिये चाहो– यही सच्चा धर्म है।'' पर अज्ञानतावश हम अपने लिए तो बहुत कुछ चाहने लगे, पर दूसरों की बात ही भुला बैठे। फलस्वरूप यह भी भूल बैठे कि बहू और बेटी में कोई फर्क नहीं होता। लोभ और लालच की वजह से पराये धन में ही मन रमने लगा।

धन्य है वे लोग जो अपनी उदारता और धार्मिक वृत्ति के कारण दूसरों का एक पैसा लेना भी अपराध समझते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे समाज में ऐसे उदार पुरुषों की संख्या बढ़े ताकि दहेज की आसुरी प्रवृत्ति का नाश संभव हो। अर्थाभाव में बहू के परिवार वाले आँसू बहाए और हम जश्न मनायें–यह कहाँ का न्याय है?

दहेज दानव को परास्त करने में हम अभी तक समर्थ तो नहीं हुए हैं। फिजूलखर्ची का आलम यह है कि भोज के नाम पर महाभोज की प्रथा चल पड़ी है। सहभोज के स्थान पर उत्सव का माहौल बड़े–बड़े होटलों के हाल में रंग ला रहा है। केले के पत्ते पर शुद्ध शाकाहारी व्यंजन की जगह हजार–हजार रुपये की प्लेट के गरिष्ठ भोजन से पेट को पेटी बना रहे हैं। रुपये को पानी की तरह बहाने वाले बाह्याडम्बरी समाज का निर्माण हमारा उद्देश्य नहीं है। यदि हमारा समाज शुद्ध सात्विक रीति से शादी ब्याह की परम्परा की शुरुआत करे और समाज की बेटियों के विवाह में आर्थिक सहयोग करे तो निश्चय ही दहेज–दानव का विनाश हो सकता है।

हमारे ऋषि–मनीषियों ने दानशीलता को मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ सद्गुण बताया है परन्तु सामाजिक कुरीतियों के पचड़े में पड़कर हम याचक बन गये हैं। सोना, चाँदी, आभूषण, कार जैसी वस्तुओं के लिए घिघियाते हैं और बहू के पैसे पर गुलछर्रे उड़ाने की नकली रस्म पर इतराते हैं। इस अज्ञानता के कारण दो परिवार के प्रेम सम्बन्ध से मिठास समाप्त हो गयी है और खटास आ गई यही खटास पति–पत्नी के बीच भेद पैदा करती है और बात सम्बन्ध–विच्छेद (तलाक) तक पहुँच जाती है। इस मन–मुटाव की जड़ में है दहेज–जिसके अभिशाप से मुक्त होने के लिए हमारे समाज के हजारों घर–परिवार के सदस्यगण छटपटा रहे हैं।

हम दहेज एवं दहेज के लिए बहू को प्रताड़ित करने का विरोध करते हैं। दहेज समाज का अभिशाप है और इसके लिए बहू को प्रताड़ित करना, जलाना आदि महापाप है। इसे रोकने के लिये सरकार ने बड़े कड़े कानून बनाये है। इस कानून के अन्तर्गत लड़की वालों को बहुत छूट दी गई है। लड़की वालों के पक्ष को काफी मजबूत किया गया है। इस कानून के अन्तर्गत कोई भी लड़का वाला, अपनी बहू या लड़की वालों को ज्यादा तंग नहीं कर सकता।

मगर बहुत जगह देखा जा रहा है कि लड़की वाले इस कानून के अन्तर्गत मिले अधिकार का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। वे इस कानून का सहारा लेकर लड़के वालों पर नजायज रूप से दबाव डाल रहे हैं। उन्हें ब्लेकमेल कर रहे हैं तथा उनसे अनाप–सनाप पैसा वसूल रहे हैं।

शादी एक पवित्र बंधन है इससे दो परिवारों का मिलन होता है। जिससे समाज के सभी बराती एवं सराती गवाह होते हैं। इसलिए दोनों परिवारों का यह दायित्व हो जाता है कि इस सामाजिक बंधन का निर्वाह अच्छे ढंग से करें।

लड़के वाले दहेज के लिये लड़की वालों को तंग या परेशान न करें तो लड़की वाले भी कानून का नाजायज फायदा नहीं उठायें। इससे आगे चल कर दोनों परिवारों को तकलीफ नहीं होगी तथा परस्पर सम्बन्ध में मधुरता और प्रेम का संचार होता रहेगा।

आज हमारे पूरे समाज का यह दायित्व हो जाता है कि समाज इसे रोकने का प्रयास करे।◆

समाज, संगठन और राजनीति

– कमल नोपानी, अध्यक्ष
बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज से मतलब मारवाड़ी समाज से है। सेवा धर्म शिक्षा सभी जगह हमारे समाज की अग्रणी भूमिका रहती है। चाहे कोई भी सेवा कार्य हो किसी भी संस्था के द्वारा या व्यक्तिगत स्तर पर हो हर जगह हमारे समाज का अच्छा योगदान रहता है।

मारवाड़ी समाज एक प्रबुद्ध समाज है। यह गतिशील तथा क्रियाशील समाज है। अपने–अपने अथक परिश्रम द्वारा आजीविका अर्जित करता है। अपनी बुद्धि और विवेक से जीवन की सुख–सुविधा जुटाने में सक्षम हुआ है। मारवाड़ी समाज हर क्षेत्र में आगे आ रहा है।

संगठन समाज की तथा समाज व्यक्ति की शक्ति है। व्यक्ति और समाज में अन्योन्याश्रय सम्बंध है। समाज में रह कर ही व्यक्ति अपनी जरूरतों की पूर्ति करता है जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसे हर पल समाज की आवश्यकता पड़ती है। समाज के सहयोग के बिना वह कुछ नहीं कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति समाज से सहयोग ले और समाज को सहयोग दे तभी संगठन मजबूत होगा। एक–दूसरे के सुख–दुःख में साथ दे। प्रेम एवं आदर की भावना रखें। व्यक्ति को चाहिए कि निःस्वार्थभाव से समाज की सेवा करे तो संगठन अवश्य सुदृढ़ होगा।

समाज में समर्पित कार्यकर्ताओं का अभाव है। उन्हें समाज एवं राष्ट्र के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं है। जब समर्पित लोग आगे आयेंगे तभी संगठन मजबूत होगा। समाज का प्रत्येक तबका धनाढ्य, मध्य एवं कमजोर वर्ग मिलकर संगठित हो जाये तो निश्चित ही सामाजिक संगठन लक्ष्य एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा।

हमारा संगठन यानी मारवाड़ी समाज उतना संगठित नहीं हो पाया है, जितनी आवश्यकता है। हम अलग–अलग ढेरो सेवा एवं धर्म के कार्य कर रहे है मगर हम अलग–अलग संस्थाओं के बैनरों तले यह कार्य करते हैं। अगर हम सब इक्कठे होकर एक बैनर तले कार्य करें, समाज के हर व्यक्ति को संगठन से जोड़ें तो हमारा संगठन चट्टान की तरह मजबूत होगा और हर जगह हमारी पहचान बनेगी।

हम संगठित हो जायेंगे तब सभी राजनैतिक पार्टियाँ हमारे महत्व को समझेंगी। आज वे हमारे ही सहयोग से चुनाव लड़कर जितते हैं। हम संगठित हो जायें तो सभी राजनीतिक पार्टियाँ हमारे लोगों को प्राथमिकता देंगी। सभी जगह हमारा समाज पूरी लगन, निष्ठा एवं सद्भावना के साथ रह रहा है वो जितना कमाता है, उसका बहुत बड़ा हिस्सा वहीं पर सेवा कार्य में खर्च भी करता है। अब जरूरत है तो केवल इस बात की कि वो संगठित हो तथा जो भी कार्य करे उससे कुछ कार्य अपने संगठन को मजबूत बनाने के लिए जरूर करें, ऐसा करने से वो दिन दूर नहीं जब राजनीति में अपने आप हमारी भागीदारी बढ़ जायेगी। हमारे बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं कर पायेगा।

सभी जगह हमारा समाज पूरी लगन, निष्ठा एवं सद्भावना के साथ रह रहा है वो जितना कमाता है, उसका बहुत बड़ा हिस्सा वहीं पर सेवा कार्य में खर्च भी करता है। अब जरूरत है तो केवल इस बात की कि वो संगठित हो तथा जो भी कार्य करे उससे कुछ कार्य अपने संगठन को मजबूत बनाने के लिए जरूर करें, ऐसा करने से वो दिन दूर नहीं जब राजनीति में अपने आप हमारी भागीदारी बढ़ जायेगी। हमारे बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं कर पायेगा।

राजनीति में भागीदारी बढ़े इसके लिए आवश्यक है कि समाज के सभी वयस्क भाई–बहनों का नाम मतदाता सूची में अवश्य दर्ज करायें तथा मतदान के दिन अपना मतदान अवश्य करें। समाज का कोई भी व्यक्ति चुनाव में खड़ा होता है तो उन्हें विजयी बनाने हेतु सहयोग करें।◆

– 205, शांति बिहार अपार्टमेंट, पटना

जाने कहां गये वे लोग?

– गोविन्द प्रसाद शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संस्थापकों में से एक तथा उसके प्रथम सभापति स्वर्गीय रायबहादुर रामदेवजी चोखानी से मेरी पहली मुलाकात सन् १९५३–५४ में हुई। वस्तुत: उन्हीं की अंगुली पकड़ कर मैं मारवाड़ी सम्मेलन में प्रविष्ठ हुआ। उनके स्वर्गारोहण तक प्राय: नियमित उनसे मिलकर उनकी सन्निधि में राजस्थान, राजस्थानी भाषा–साहित्य और मारवाड़ी समाज के उत्थान और विकास की उनकी भावना से परिचित और प्रेरित हुआ। रायबहादुर रामदेवजी चोखानी एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न और अविश्रांत समाजहित चिन्तक के साथ एक संवेदनशील, परहित कातर सज्जन पुरुष थे। उनके अभिनन्दन समारोह के समय प्रकाश्य **''श्री रामदेव चोखानी'' ग्रंथ (जो बाद में स्मृति ग्रंथ बन गया) से वरिष्ठ साहित्यकार बनारसीदास चतुर्वेदी (सम्पादक विशाल भारत कलकत्ता) द्वारा समर्पित श्रद्धा सुमनों का आलेख** उद्धृत कर रहा हूँ।

चोखानीजी :

कोई तेईस–चौबीस वर्ष पहलेकी बात है। मैं उन दिनों 'विशाल भारत'' का सम्पादन करता था। एक दिन श्री रामदेवजी चोखानी ने, जिनसे मेरा कितने ही वर्ष पहले से–शायद सन् १९१४–१५ से–सम्बन्ध था मुझ से कहा, ''कृपाकर आज भोजन हमारे यहाँ ही कीजिये।'' मैंने पूछा भी कि क्या कोई विशेष अवसर है? उन्होंने कहा–''चौबों के लिए विशेष अवसर की क्या जरूरत है? और फिर आपसे तो बीस–बीस वर्ष से परिचय है, इसलिये आपके लिये तो हमारे यहाँ खुला निमंत्रण है।''

उपयुक्त समय पर मैं पहुँच गया। ऊपर के तल्ले में उन्होंने विधिवत् भोजन कराया और फिर अपने कमरे दिखलाये। कमरे खाली थे, लेकिन बहुत साफ, काफी लंबे–चौड़े। जब नीचे गद्दी पर आकर मैं लेट गया, तो चोखानीजी ने कहा– ''मेरी एक प्रार्थना है।'' मैंने कहा–''आज्ञा दीजिये। आप तो उम्र में बड़े हैं।''

उन्होंने कहा–''जब से मैंने सुना है कि आप पौने दो सौ रुपये में चौवालीस रुपये किराये के दे देते हैं, मुझे चिन्ता हो गई है। आप ऊपर के दो बड़े कमरे हमारे यहाँ ले लीजिए। वे आपके अर्पित हैं। आपका पैसा बच जायगा और हम लोग कुछ साहित्यिक काम भी कर सकेंगे।''

मैंने सोचा कि दक्षिणा में चौवालीस रुपये महीने का लाभ बुरा तो नहीं, पर मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। मैंने चोखानीजी को उनकी उदारता के लिये धन्यवाद दिया और कहा–''मेरे यहाँ सभी प्रकार के राजनैतिक व्यक्ति आते जाते रहते हैं और मेरी तलाशी चाहे जब हो सकती है! इस झगड़े में आप भी मेरे साथ व्यर्थ में फँस जायेंगे। यह मुझे स्वीकार नहीं, लेकिन आपकी उदारता का लाभ मैं दूसरे तौर पर उठाऊँगा।

चोखानी मेरी बात मान गये और फिर भाई श्रीरामजी के अग्रज श्री बाला प्रसादजी तथा बच्चों को उन्होंने अपने यहाँ स्थान दिया। तत्पश्चात् स्वर्गीय अवध उपाध्याय और उनकी पत्नी को भी।

कलकत्ते में हिन्दी भवन:

एक बार जब ''विशाल भारत'' छोड़ने के बाद मैं कलकत्ते गया, तो मुझे ''मार्डन रिव्यू'' ऑफिस के सबसे ऊपर के तल्ले में ठहरना पड़ा। वहाँ उस समय कुछ धूप आ रही थी और स्थान की भी कमी थी। चोखानीजी भोजन का निमंत्रण देने आये, तो उस स्थान को देखकर चिन्तित हो गये। फिर बोले– ''हम लोग कलकत्ते में कोई ऐसी जगह भी तो नहीं बना पाये, जहाँ बाहर से आनेवाले हिन्दी सेवकों को ठहरा सकें। औरों की बात तो रही अलग, पर आप तो हमारे यहाँ ठहर सकते हैं।

मैंने कहा–''तो आप हिन्दी–भवन क्यों नहीं बनवा देते?''

चोखानीजी को यह बात पसन्द आ गई। उन्होंने कहा–''यदि आप पन्द्रह दिन और ठहर जावें, तो कार्य का श्री गणेश तो हो ही जायगा।'' मैं पन्द्रह दिन ठहरा और चोखानीजी तथा श्री भगीरथ भाई कानोड़ियाजी की कृपा से चौदह हजार रुपये के वचन हिन्दी भवन के लिये एक दिन में ही मिल गये। पर मुझे अकस्मात् कलकत्ता छोड़ना पड़ा। फिर पैसा किसी ने उगाहा नहीं, दानियों के पास जहाँ का तहाँ पड़ा रहा! चोखानीजी इस बात से बड़े दुखित हुए कि हम लोगों का स्वप्न अधूरा ही रह गया। स्वयं उस यज्ञ में चोखानीजी ने दो–ढ़ाई हजार देने का वचन दिया था।

दान में विवेक:

यह मैंने अपने अनुभव से देखा कि चोखानीजी अपने दान में विवेक से काम लेते हैं। अधिक दान तो वे नहीं कर पाते, लेकिन अच्छे कार्यों के लिये वे यथाशक्ति कुछ न कुछ सहायता अवश्य देते हैं। एकाध बार उन्हें धोखा भी हुआ है। एक महाशय नें प्रवासी भारतीयों के कार्य के लिये उनसे पैसा ले लिया और काम कुछ भी नहीं किया। ऐसे कटु अनुभवों ने उन्हें सावधान कर दिया है।

सहनशीलता:

आमहर्स्ट स्ट्रीट कलकत्ते के मारवाड़ी अस्पताल के विरुद्ध मैंने 'विशाल भारत'' में एक नोट लिखा था और उसके संचालकों की प्रांतीयता की कठोर आलोचना की थी। मुझे मालूम था कि उक्त अस्पताल में चोखानीजी का पुराना सम्बन्ध था। उनके पूज्य पिताजी ने उसके लिये प्रचुर दान भी दिया था। चोखानीजी ने मेरे लेख को पढ़कर केवल इतना ही कहा कि वह कुछ इकतर्फा हो गया है। मैंने उनसे निवेदन किया कि वे खुद दूसरे पक्ष पर प्रकाश डालें। उन्होंने वैसा किया भी, पर मेरे प्रति उनकी सद्भावना ज्यों की त्यों कायम रही।

साहित्य सेवियों से मिलने और उनके प्रति श्रद्धा अर्पित करने के लिये चोखानी जी सदैव उद्यत रहते हैं। अच्छे ग्रंथों को खरीदकर

वे अपने पुस्तकालय में रखते हैं। ऐमर्सन की ग्रंथावली १५ पन्द्रह रुपये में खरीद लाये। मुझे उस ग्रंथावली का साइज पसन्द आ गया और मैंने उसकी तारीफ कर दी। चोखानीजी ने कहा– ''तब यह संस्करण आपकी भेंट है। मैं तो कभी–कभी ही इसे पढ़ूँगा। आप इसे स्वाध्याय के तौर पर पढ़ते हैं। मैं दूसरी प्रतियाँ खरीद लूँगा।'' वह ग्रंथावली मेरे पुस्तकालय में अब भी मौजूद है और कल जब मैं उसे पढ़ने लगा, तो मुझे उस घटना की याद आ गई। इसी प्रकार एक साठ रुपयावाला कैमरा भी उन्होंने मेरे लिये खरीद दिया, यद्यपि मैंने उसका प्रयोग कई वर्ष तक नहीं किया!

उन दिनों साहित्य सबन्धी मीटिंग तो प्राय: चोखानीजी की गद्दी पर ही हुआ करती थीं और कभी–कभी स्व. दुर्गाप्रसाद खेतान जी के यहाँ भी हो जाती थीं।

सामाजिक कार्यों में रुचि:

चोखानीजी राजनीति में राजर्षि गोखले से बहुत प्रभावित हुए थे और साहित्य में बाबू बालमुकुन्द गुप्ता से। वैसे दीनबन्धु एण्ड्रूज की वे सदा प्रशंसा करते रहे हैं और जब पियर्सन साहब फिजी गये, तो उनकी फिजी यात्रा के किराये का प्रबन्ध चोखानी जी ने ही कराया था। उनकी रिपोर्ट भी मारवाड़ी एसोशियेशन की ओर से उन्होंने ही छपाई थी।

कुली प्रथा के विरुद्ध कार्य:

यद्यपि चोखानीजी ने अनेक सामाजिक कार्यों में हिस्सा लिया है पर मेरी समझ मे उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। कुली – प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में भाग और दीनबन्धु एण्ड्रूज बराबर उनके सहयोग की प्रशंसा करते थे। चोखानीजी की यह इच्छा थी कि उस कार्य की एक रिपोर्ट पुस्तकाकार तैयार हो जाय। छपाने का भार वे स्वयं लेने को तैयार थे, पर वह कार्य हो नहीं सका।

धार्मिक मामलों में चोखानीजी प्राचीनतावादी हैं। ब्राह्मणों के विषय में–चाहे वह उनका रसोइया हो या दरबान ही क्यों न हो–उनके भाव सदा आदर के रहे हैं। सिनेमाओं की आधुनिक गति–विधि उनको बहुत अखरती है और वे आज कल के युवकों की प्रगतिशील रुचि को समझ ही नहीं पाते। पर चोखानी जीकी धार्मिकता दिखावटी नहीं, वह संकटों के अवसर पर सदैव खरी उतरी है।

उन पर जब भयंकर बज्रपात हुआ था, उस समय की बात मुझे अब भी स्मरण है। कितने धैर्य के साथ उन्होंने उसे सहन किया, यद्यपि उससे वे एक साथ वृद्ध हो गये, उनकी कमर सी टूट गई। फिर भी उनके नित्य प्रति के व्यवहार में त्रुटि नहीं आने पाई और अपने सांसारिक कर्तव्य वे ज्यों के त्यों पालन करते रहे और अब भी करते रहते हैं।

अपने कलकत्ते के दस वर्षों कि निवास में मुझे चोखानीजी के निकट सम्पर्क में आने के बीसियों अवसर मिले और मैंने उन्हें सदैव शिष्ट, संवेदनशील और जागरूक पाया। ऐसे अवसर पर जब कि कलकत्ते की जनता उनका अभिनन्दन कर रही है मैं भी एक चालीस वर्ष पुराने सहयोगी के नाते उनका अभिवादन करता हूँ।

– बनारसीदास चतुर्वेदी

बंटवारा

जगदीश चन्द्र एन. मुंदड़ा

आधुनिकता की चकाचौंध ने संयुक्त परिवार को छिन्न–भिन्न कर दिया है। एकल परिवार को प्रश्रय मिल रहा है। बंटवारा की जहां भी स्थिति बनती है पारिवारिक सदस्य मौन रूप से अपनी सहमति प्रदान करते हैं एक उद्यमी की उम्र ८० वर्ष से अधिक होने व अपने स्वास्थ्य के निरन्तर गिरते क्रम को देखकर उसने अपने तीनों पुत्रों को बुलाया और कहा कि मेरे जीते जी तुम लोग सम्पत्ति का बंटवारा कर लो और मैं बतौर वसियत उसकी स्वकृति दूंगा। बड़े व मझले भाई ने कहा कि पिताजी जो कुछ करना है आप ही कर दो। छोटा पुत्र जिद पर अड़ा रहा कि बंटवारा मैं ही करुंगा अन्यथा अनशन कर दूँगा। लोगों ने पिता को समझाया कि आपकी हालत खराब है, इसलिए छोटे को ही यह अधिकार दे दो और देखें जैसा वह कहता है कि बटवारा पूरी तरह से माकूल करुंगा। क्या वैसा करता है?

छोटे लड़के की बटंवारे की फेहरिश्त देखकर सभी दंग रह गये बाप को भी हैरानी हुई कि बंटवारे का इतना ज्ञान इसे कहां से आया। उसने २ करोड़ रुपयों का बंटवारा उम्र के अनुसार अर्थात बड़े भाई को ७२ लाख मझले भाई को ६० लाख व स्वयं को ४८ लाख तथा पुण्य व अन्य कार्यों के लिए पिताजी को २० लाख दिए। इसके अतिरिक्त बड़े व मझले भाई को अपने हिस्से से चार–चार लाख अतिरिक्त देने को कहा। इसी अनुपात में अन्य सम्पति का भी बंटवारा किया सभी विस्मित थे इस बंटवारे से। किसी की आपत्ती न देखकर पिता ने सभी की साक्षी में इस बंटवारे पर अपनी सहमति दे दी।

छोटे पुत्र से जब जानकारी ली तो उसने बताया कि मेरे पिता व भाइयों ने बड़ा कष्ट सहकर आज यह प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मेरा तो शुरुआती क्रम है, कमाना ही कमाना है। इनके सामने कई खर्चे है। ये अब कितने वर्ष कमा सकेंगे। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही मैंने परम्परागत लीक से हटकर यह बंटवारा किया है, ताकि यह आदर्श बन सके। इससे हमारे आपसी प्रेम में मजबूती आयेगी और कोई द्वन्द्व नहीं रहेगा। मुझे मालूम है कि अर्थप्रधान युग में बंटवारे की बातें जो अनिर्णित की जाती है। वह जीवन भर निर्णित नहीं हो पाती। कोई नट जाए तो फिर हाँ भरना कितना कठिन है। नटने वाले अपने फन में कितने पारंगत है, यह सभी जानते है। आज सम्पत्ति के बंटवारे में आपसी सम्बन्ध समाप्त होते जा रहे है। लम्बी–चौड़ी सम्पति मिलने के बाद भी सन्तुष्टि नहीं, त्याग और समर्पण नहीं यह देखने को कोई भी तैयार नहीं कि हमने यात्रा कहां से प्रारम्भ की थी।◆

– 7डी, लेंसडाउन हाइट्स
6, लेंसडाउन रोड, कोलकाता–700 020
मोबाईल – 9830047521

कुछ यादगार क्षण।

20–21 दिसंबर 2008 को दिल्ली में अधिवेशन का उद्घाटन भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत बायें से सम्मेलन के महामंत्री सर्वश्री राम अवतार पोद्दार, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, नर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा, दिल्ली प्रदेश के अध यक्ष श्री पन्नालाल बैद एवं राज के. पुरोहित

मंच पर बायें से सर्वश्री राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री संजय हरलालका, रा.उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया, रा.कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, सम्मेलन समापति श्री नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री राम अवतार पोद्दार, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, रा.उपाध्यक्ष ओमप्रकाश खण्डेलवाल एवं रा.उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया

कुछ यादगार क्षण

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

का दो दिवसीय 26वां प्रादेशिक अधिवेशन

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दो दिवसीय 26वां प्रादेशिक अधिवेशन 'जागृति–2009' 21–22 मार्च को महाराणा प्रताप भवन एवं श्री कृष्ण स्मारक भवन, पटना में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की पटना शाखा द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय अधिवेशन के प्रथम दिन प्रादेशिक सभा, महिला सत्र, युवा सत्र एवं विषय निर्वाचिनी की बैठक हुई। बैठकों व सत्रों में दहेज, दिखावा व प्रदर्शन, भ्रूण हत्या आदि विषयों पर गहन चिंतन हुआ और इन सामाजिक बुराइयों को रोकने हेतु प्रयास करने पर जोर दिया गया।

बंगाल प्रान्त के नवम् अधिवेशन

बंगाल प्रान्त के नवम् अधिवेशन के अवसर पर बोलते हुए सम्मेलन पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा साथ में मंच पर स्व. विश्वनाथ सुल्तानिया, श्री विजय गुजरवासिया, स्व.लोकनाथ डोकानिया, श्री रतन शाह, सांसद मो. सलीम

कुछ यादगार क्षण

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

उड़ीसा के 11वें प्रान्तीय अधिवेशन

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का 11वाँ अधिवेशन सम्बलपुर शाखा के आतिथ्य में दिनांक 31.1.09 एवं 1.2.09 को सम्बलपुर में अनुष्ठित हुआ, अधिवेशन में संगठन, सामाजिक संस्कार आदि विषय पर प्रस्ताव ग्रहण किए गये। श्री सुरेन्द्र लाठ (पूर्व राज्यसभा सांसद) ने प्रान्तीय अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण किया।

राजनीतिक कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री रमेश बंग मंच पर सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा, अ.भा.मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जाजोदिया विधायक श्री सुरेशदादा जैन, विधायक चैन सुख संचेती, विधायक गोवर्धन शर्मा, विधायक राजेंद्र पाटनी, विधायक गोपी किशन, बजोरिया, विधायक राज पुरोहित, ओमप्रकाश पाटनी, नंदलाल रुंगटा, हरिप्रसाद कानोड़िया, दिलीप कुमार गांधी, ललित गांधी, कल्पना मारू, और डॉ जयप्रकाश मूंधड़ा व अन्य पदाधिकारीगण।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106
Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379
E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

कुछ पुरानी यादें

सम्मेलन के महामंत्री श्री नन्दकिशोर जालान के समय सन् १९६१ में रजत समारोह का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ. विधानचंद्र राय। परिदर्शित हैं बायीं ओर से साहु शांति प्रसादजी जैन, उपसभापति ईश्वरदासजी जालान, सर बद्रीदासजी गोयनका, नवनिर्वाचित सभापति गजाधरजी सोमानी, सेठ गोविन्द दासजी एवं अनेक गणमान्य सदस्य।

1961 में मोहम्मद अली पार्क, कोलकाता में हुए ऐतिहासिक अधिवेशन के अवसर पर लिया गया चित्र बांये से गांधी टोपी में स्व. ईश्वरदास जालान, राधाकृष्ण कानोड़िया, गजाधर सोमानी, रघुनाथ प्रसाद खेतान और श्री नन्दकिशोर जालान

सम्मेलन के 8 फरवरी 86 को कलकत्ता में आयोजित स्वर्ण जयन्ती समारोह का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह, साथ में खड़े हैं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान।

कुछ यादगार छण

72वें स्थापना दिवस समारोह में
श्री बालकृष्ण गोयनका का सम्मान करते हुए
पश्चिम बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष हासिम
अब्दुल हलीम,
साथ में पदाधिकारीगण

73वें स्थापना दिवस समारोह में भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत जनचेतना के विप्लवी यायावर रचना धर्मी श्री ओंकार श्री राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार 2008 देते हुए। साथ में सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा व निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा

बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी से मुलाकात करते हुए सम्मेलन पदाधिकारीगण

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज के बारे में उद्‌गार

सम्मेलन 'मारवाड़ी समाज' का प्रतिनिधित्व कर पाने में सक्षम

– नन्दलाल रूँगटा, अध्यक्ष

सम्मेलन के ७४ साल के इतिहास का आंकलन करने से हमें चौंकाने वाले तथ्य सामने मिलते हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि सम्मेलन वह सब कर रहा है जो हम सोच भी नहीं सकते। सम्मेलन ने समाज को न सिर्फ सुरक्षा प्रदान की, एक समय जब समाज को उसके वोट से वंचित किया जा रहा था तो सम्मेलन के बैनेर के तले ही हमें अपने हक की लड़ाई लड़नी पड़ी थी। यह सही है कि सम्मेलन एक ऐसी संस्था है, जिसमें अन्य संस्थाओं की तरह मनोरंजन के कार्यक्रम नहीं लिये जाते, न ही किसी क्लब की तरह इस संस्था में कोई 'खाने-पीने' की किटी पार्टी का आयोजन ही किया जाता है। शायद कई बार कुछ लोग इस संस्था पर ये आरोप मढ़ते नजर आते हैं कि सम्मेलन सिर्फ "आये का स्वागत - गये की विदाई" आयोजन करने की संस्था बन कर रह गई है। जो कि बिलकुल गलत है। जबकि वास्तविकता यह है कि सम्मेलन ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो देश भर में मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व कर पाने में सक्षम है।◆

समय के साथ प्रश्न बदलते हैं।

– सीताराम शर्मा

मुझे 2002 का वाकया स्मरण हो आया जब हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा *'क्या अन्तर्जातीय विवाह उचित है'* विषयक एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। सम्मेलन के तत्कालीन महामंत्री के रूप में समापन वक्तव्य के लिये मुझे आमंत्रित किया गया था। करीबन एक घण्टे से अधिक विभिन्न महिला वक्ताओं को, जिनमें बुजुर्ग, वयस्क, युवतियाँ–विवाहित एवं अविवाहित सभी शामिल थी को सुना। विषय की समझ, वैचारिक परिपक्वता एवं स्पष्टवादिता ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। जब मेरे बोलने की बारी आयी तो मैंने सिर्फ इतना ही कहा कि "विषय के पक्ष या विपक्ष पर मैं नहीं बोलना चाहता, मुझे तो इस बात पर सन्तोष एवं गर्व है कि मारवाड़ी समाज की महिलायें जो कुछ दशक पहले तक पर्दे में रहती थीं, शिक्षा का अभाव था, वह मारवाड़ी महिला समाज आज मारवाड़ी सम्मेलन के बैनर के तले एकत्रित होकर इन विषयों पर खुलकर चर्चा कर रही हैं।"

मारवाड़ी सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है जो विचार परिवर्तन के माध्यम से समाज सुधार एवं समरसता का कार्य करती है। समाज के सम्मुख जो भी प्रश्न, समस्याएँ, कुरीतियाँ प्रस्तुत होती हैं उन पर सम्मेलन विचार कर समाज को उनसे आगाह करता है। विभिन्न समय पर विभिन्न सामाजिक प्रश्नों पर सम्मेलन ने कार्य किया है चाहे वह पर्दा प्रथा हो या मृत भोज, विधवा विवाह हो या तलाक, दहेज या दिखावा, समरसता या राजनीति में भागीदारी, टूटते परिवार या बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी– समय के साथ-साथ प्रश्न बदलते गये हैं।◆

समाज कैसे शक्तिशाली हो?

– आत्माराम सोंथलिया
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज अपनी भौगोलिक स्थिति तथा सांस्कृतिक सामाजिक जागरुकता के कारण सर्वदा प्रगतिशील– आस्थावान तथा विचारशील समुदाय के रूप में समादृत हुआ है। समाज के प्रबुद्ध जनों ने समाज की तत्कालीन दशा के अनुसार उसे दिशा देने का महत प्रयास किया है। अपनी अद्‌भुत हिम्मत और लगन से राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश से निकलकर पूरे देश ही नहीं सुदूर विदेशों तक अपनी कार्यक्षमता का डंका बजाते हुए अपना वाणिज्य–व्यवसाय फैलाने में समर्थ हुआ साथ ही अपने मूल उद्‌गम स्थल के प्रति अपने दायित्व को नहीं भूला। ये सारी विशेषतायें उसकी हस्ती को बरकरार रखे हुए हैं। सर्वोपरि हमारे समाज ने अपने सामाजिक सरोकारों को हमेशा प्राथमिकता दी है। समाज के लोग जहाँ भी गये वहाँ अपनी दानशील–धार्मिक वृत्ति के कारण जनहितकारी कार्यों में उन्मुक्त हाथ से अपना योगदान देने में कभी पीछे नहीं रहे। यही कारण है आज आसेतु–हिमाचल– कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कटक से अटक–पूरे देश में समाज की यश–सुरभि फैली हुई है।

इस सारी सामाजिक पृष्ठभूमि में एक ही विराट प्रश्न सारे समाज को ललकार रहा है। क्या इस घटाटोप का, अराजकता, अक्षमता को दूर करने का कोई उपाय है? मैं तो समझता हूँ कि जैसे पंच–पंचायत थी जिसका चिंतन, विचार और अंततोगत्वा निर्णय प्रभावी हुआ करता था–उसी प्रकार समाज के प्रबुद्ध विचारशील लोगों को इस गर्त से समाज को निकालकर उसे राहत देने का शुभ संकल्प क्रियान्वित करना ही होगा।

अपने उदार हृदय के साथ समाज ने अपनी व्यावहारिक दक्षता और जागरुकता को निरन्तर ध्यान में रखा है। समय के अनुसार और जिस क्षेत्र में रहे उस क्षेत्र के लोगों के साथ घुल मिलकर अपनी समरसता की भावना का परिदर्शन कराया–यही समाज की लोकप्रियता का रहस्य है। अपने परिवेश और प्रगति तथा परिवर्तन की लहरों को आत्मसात करते हुए युगानुकूल परिवर्तनशील बनने की चेष्टा की तथा समस्त समाज को अनुशासित एकताबद्ध इकाई के रूप में ढालने की भी पुरजोर कोशिश की।

एक समय पंचों–पंचायतों का महत्व था–बोलबाला था। समाज के लोग पंचो के निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर तद्‌नुसार कार्य करते थे क्योंकि पंचों को परमेश्वर का रूप माना जाता था। पर पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार तथा इतर समाजों–ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि समाज सुधार के आन्दोलनों और स्वातंत्र्योत्तर दृष्टिहीनता और ठोस कार्यक्रम अथवा निश्चित उद्देश्य के अभाव में समाज में एक प्रकार की विश्रृंखलता, अनुशासनहीनता और अराजकता आनी शुरु हो गयी। महायुद्ध के पश्चात् आये प्रचुर धनोपार्जन ने भी कतिपय धनपतियों ने भी बिना किसी की सुने अपनी मनमानी करने की अहं भावना को जन्म दिया। पंचायतें प्रभावहीन होती विलुप्त ही हो गयी। जिसके पास अनाप शनाप धन आया वह उसके भौंडे प्रदर्शन में अपनी शान समझने लगा। उसकी देखा–देखी अपनी सामाजिक बराबरी अथवा प्रतिष्ठा बचाने के लिए औसत मध्यम वर्ग के लोग भी अनावश्यक अपनी क्षमता के बाहर खर्च करने लगे। इस स्थिति को दहेज प्रथा ने और उग्र बना दिया।

इस सारी सामाजिक पृष्ठभूमि में एक ही विराट प्रश्न सारे समाज को ललकार रहा है। क्या इस घटाटोप का, अराजकता, अक्षमता को दूर करने का कोई उपाय है? मैं तो समझता हूँ कि जैसे पंच–पंचायत थी जिसका चिंतन, विचार और अंततोगत्वा निर्णय प्रभावी हुआ करता था–उसी प्रकार समाज के प्रबुद्ध विचारशील लोगों को इस गर्त से समाज को निकालकर उसे राहत देने का शुभ संकल्प क्रियान्वित करना ही होगा। 'संभवामि युगे युग' के अनुसार जनसाधारण को परित्राण दिलवाने का कठिन पर संभाव्य मार्ग निकालकर उसे प्रशस्त करना ही होगा। इस दिशा में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा एक मंच पर एकत्र कर चिंतन विचारमंथन कर प्रभावी, सर्वजन उपकारी सर्वमान्य हल निकालना होगा तथा तत्पश्चात उसे सभी को स्वीकार करना होगा। उसे आचार संहिता के रूप में प्रचारित प्रसारित कर उसके पालन करने करवाने के लिए प्रभावी नियम–दंडविधान का भी समावेश करना होगा। यही समाज देवता के प्रति हमारी सच्ची पूजा आराधना होगी।◆

With Best Compliments From

HOUSE OF IRON ORE SUPPLIERS

R. B. SETH SHREERAM NARSINGDAS

RBSSN

MINE OWNERS
POST BOX NO. 38, KARIGANUR POST,
HOSPET - 583 201, DIST. - BELLARY
KARNATAKA

PHONE (O) : (08394) 266011, 265825, 653888, 9900558001
FAX : (08394) 265424, 266188
E-mail Address :
ironorehospet@gmail.com
office@rbssn.com
admin@rbssn.com

LEADING SUPPLIER OF SUPER HIGH GRADE IRON ORE AND HIGH GRADE IRON ORE FINES.

We specialized in the supply of the following : -

1. Iron ore fines 0-90% and above - (-) 10 mm, %Fe 62 to 66
2. Calibratd Iron Ore : (+) 10 mm to (-) 40 mm in %Fe 62 to 65
3. Heavy Density Hematite Lumpas and Aggregates for Nuclear Power Plant.

Sister Concerns :-

M/S RAJLAKSHMI MINERALS
M/S RBSSN FERROUS INDUSTRIES PRIVATE LIMITED

समाज के लिए अभिशाप बनता जा रहा है दहेज एवं दिखावा

- विजय गुजरवासिया, अध्यक्ष
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

वर्षों पहले राजस्थान छोड़कर जो मारवाड़ी जहाँ गये वहाँ उन्होंने समाज का मान-शान बढाया है। गत कुछ वर्षों में शादी-विवाह के अवसर पर दिखावा, आडम्बर, दहेज का बोलबाला हो गया है। यह किसी खास व्यक्ति के लिए नहीं, समाज के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। सामाजिक बुराइयों के बारे में हम लम्बी-लम्बी बातें तो करते हैं लेकिन उनका खुद पालन नहीं करते। कहते हैं कि मारवाड़ी बोलते कम हैं सामाजिक कार्य ज्यादा करते हैं। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में उसके विपरीत बयानबाजी हमें सुनने को मिलती है। हमारे पूर्वज चौअन्नी, अठन्नी घर खर्चा से बचाकर स्कूल, कालेज, धर्मशाला आदि बनवाते आए हैं। आज भी हम पूर्वजों के बताये रास्ते पर चलें तो समाज की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाये जा सकते हैं। लेकिन पहले और अबकी समाजसेवा में काफी अन्तर आ चुका है। अब अधिकतर सामाजिक कार्य समूह रूप से हो रहे हैं लेकिन पहले ऐसी बात नहीं थी। कुछ वर्षों में जहाँ रहन-सहन में बदलाव आया है वहीं सामाजिक संस्थाओं में एक दूसरे के खिलाफ बयानबाजी एवं सीख देने की होड़ लगी है। सामाजिक कार्यों एवं सभाओं में हम सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने की बात करतें हैं, आश्चर्य की बात है कि जो इस तरह की बयानबाजी करते हैं वे खुद उसकी अनदेखी करते पाये जाते हैं। जिस तरह हम अपने पूर्वजों के बताए रास्ते को अपनाये हुए हैं उसी तरह हमारी भावी पीढ़ी हमारे रास्ते को अपनाएगी क्योंकि यह परंपरा सदा से चल रही है। भावी पीढी हमारा ही अनुसरण करेगी तो फिर समाज की क्या दशा होगी? आपसी मतभेद को भुलाकर एकजुटता से सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ हमें आवाज बुलंद करनी होगी। लम्बी-लम्बी बयानबाजी करनेवालों को कथनी करनी पर कायम रहना होगा। सामाजिक बुराइयां दूर करने में यदि हम सक्षम नहीं हैं तो हमें बड़ी-बड़ी बात करने का अधिकार भी नहीं है। इस तरह के बयान देने वाले खुद उसका उल्लंघन कर नयी पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहते हैं? सामाजिक एकजुटता के लिए छोटे-बड़े सभी को एक साथ लेने के बाद ही हम सशक्त हो सकते हैं। इनमें भिन्नता के कारण ही काफी पुरानी संस्था होने के बाद भी समाज के हर स्तर में हमारी पैठ नहीं हुई है। जब तक हम समाज के हर वर्ग को एक प्लेटफार्म पर नहीं लाऐंगे तब तक सम्मेलन को मजबूत करने में कामयाबी असंभव है। हमें इसके लिए ऊंच-नीच, छोटे-बड़े के विचार को त्यागना होगा। समाज की अबला कन्या को अपनी कन्या मानने का विचार जिस दिन हमारे मन में उत्पन्न हो जाएगा उस दिन छोटे-बड़े की भावना अपने आप समाप्त हो जाएगी।

गत दिनों लगन में कई विवाह कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला। अधिकतर कार्यक्रमों में आडम्बर का बोलबाला था। मात्र दिखावे में चंद घंटों के दौरान हमारे समाज प्रबुद्ध लोग करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। जब तक हम स्वयं यह निर्णय नहीं लेंगे कि फिजूलखर्च रोकना ही है, तब तक हम इस पर काबू नहीं पा सकेंगे। आइये हम समाज के प्रबुद्ध लोगों से अनुरोध करें कि फिजूलखर्च, दिखावा रोकने में हम सभी एकजूट होकर पहल करें।

गत दिनों लगन में कई विवाह कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला। अधिकतर कार्यक्रमों में आडम्बर का बोलबाला था। मात्र दिखावे में चंद घंटों के दौरान हमारे समाज प्रबुद्ध लोग करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। जब तक हम स्वयं यह निर्णय नहीं लेंगे कि फिजूलखर्च रोकना ही है, तब तक हम इस पर काबू नहीं पा सकेंगे। आइये हम समाज के प्रबुद्ध लोगों से अनुरोध करें कि फिजूलखर्च, दिखावा रोकने में हम सभी एकजूट होकर पहल करें। ◆

- 7, गणेश चन्द्र एवेन्यू
तीसरा तल्ला, कोलकाता-700 013

Dhanwantary

Chemist Shoppe

Kolkata's No.1 Retail Chain

क्या आप सहमत हैं? होना चाहिये

– बद्री प्रसाद भीमसरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन क्यों?

कई बन्धुओं के मन में प्रायः यह प्रश्न उठता है कि आज राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की जरूरत है तब अपने आपको मारवाड़ी, बिहारी, बंगाली जैसे प्रान्तीयता बोधक शब्दों से जोड़े रखने का क्या औचित्य है? सम्मेलन का उद्देश्य है, मानव कल्याण हेतु समाज का सर्वांगीण विकास। मैं समझता हूँ कि जहाँ मानव मात्र की भलाई का महान उद्देश्य लेकर हम चल रहे हैं व उसके लिए सम्मेलन के माध्यम से समाज को संगठित व विकसित कर रहे है तो भला इसमें किसी को भी क्या आपत्ति होगी।

सत्य यह है कि हम सब भारतीय हैं, भारत हम सब का देश है, हम जहाँ भी रहेंगे, भारतीय ही कहलायेंगे, लेकिन आज मारवाड़ी शब्द का केवल भौगोलिक महत्व नहीं रह गया है, अपितु यह एक संस्कृति का प्रतीक बन गया है। इसीलिए हम चाहे बिहार में हों या बंगाल में हों, आसाम में हों या आंध्र में, मारवाड़ी होकर भी उस प्रदेश के है। बिहार में रहते हैं, इसलिए पहले बिहारी हैं, फिर मारवाड़ी। क्योंकि मारवाड़ी शब्द हमारी संस्कृति का पर्याय है और हम यह छिपाना नहीं चाहते हैं कि हमें इस संस्कृतिक से प्यार है। हमारी हर धारणा, हर सोच, हर धड़कन में बस रही है यह मारवाड़ी संस्कृति और तब तक रमती रहेगी हमारे खून की हर बूँद में यह संस्कृति जब तक हम इसकी विशेषताओं से सराबोर रहेंगे।

क्या है मारवाड़ी संस्कृति

कोई पूछे कि क्या है यह मारवाड़ी संस्कृति। कठिन सवाल तो नहीं है, सीधा सा उत्तर है–जो शाकाहार में विश्वास रखे व सुरापान को बुरा माने वही मारवाड़ी। जो व्यापार में यथासंभव ईमानदारी बरते, जो दूसरों की रकम लेकर हड़प न जाय, जो नेकनीयता व भलमनसाहत से व्यापार करे, जो धोखाधड़ी न करे, जो सात्विक विचारों का पालन करे, जो अपनी कमाई से न केवल अपना पेट पाले अपितु औरों को खिलाकर खाये वह मारवाड़ी। समय पड़ने पर दानवीर, त्यागी, तपस्वी, राष्ट्र के लिए समर्पित हो इन गुणों से सुशोभित हो वह मारवाड़ी। छोटे से देहात से बड़े शहर तक जाकर चौबीसों घंटे मेहनत कर अपने अध्यवसाय एवं परिश्रम के बलबूते से अपना स्थान बना ले, वह है मारवाड़ी। जो भारत के कोने–कोने में धर्मशालाएँ, कुएँ, बावड़ी, अस्पताल, शिक्षालय, सार्वजनिक स्थान, वाचनालय, मंदिर, महात्माओं के लिए घर बनावे, वह है मारवाड़ी। जो राजस्थान से मात्र डोरी–लोटा लेकर, दर–दर जंगल–जंगल भटक कर, जहाँ जो बस गया वहाँ का होकर रह गया, वहीं रहकर अपने को हर विद्या में अग्रणी बना ले, वह है मारवाड़ी। जो आई.ए.एस. बनकर सरकारी पदाधिकारी होकर भ्रष्टाचार से दूर निष्पक्ष रह सके, वह है मारवाड़ी। जो उन्नति करने पर भी विनम्र बना रहे, जो सम्पन्न होकर विपन्न को न बिसराये, क्या ऐसे मारवाड़ी को कोई बिहारी कहाये जाने में आपत्ति करेगा, क्या कोई बंगाली ऐसे मारवाड़ी को बंगाली कहाये जाने में आपत्ति करेगा। हम समझते हैं कि जो ईर्ष्या से आक्रान्त नहीं है, जो प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना से ग्रस्त नहीं है, जो राष्ट्र को टुकड़े–टुकड़े में विघटित करने के षड्यंत्रकारी हथकंडों में साझेदार नहीं है, वही कदापि मारवाड़ी को अपने से अलग बताने की बात तो दूर, वह मारवाड़ी को अपने भाई से कम मानने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

अब एक बात पर हमें विचार करना है कि हम वास्तव में कितने मारवाड़ी हैं। क्या हमें मारवाड़ी की इन परिभाषाओं में आते हैं जो ऊपर कही गई हैं। शायद 'हाँ' मैं उत्तर देने में हमलोग कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। मारवाड़ी के रूप में जो हमारी पहचान है, वे लोग उपरोक्त जिन विशेषताओं की हमसे अपेक्षा करते हैं, वह हमसे लोप होती जा रही है। आज अपने ही समाज की बात नहीं, सारे देश की यही स्थिति है। कहा जाय, सम्पूर्ण मानवता के मूल्यों का ह्रास हुआ है। विज्ञान की उन्नति व विचारों की प्रगतिशीलता ने हमें भौतिक दृष्टि से जितना उन्नत बनाया है, नैतिक दृष्टि से हम गिरे हैं। भला मारवाड़ी समाज इससे अछूता कैसे रह सकता है। हम भी धीरे–धीरे अद्योपतन की ओर अभिमुख होते जा रहे हैं। हमें मारवाड़ी सम्मेलन के माध्यम से अपने को गिरती हुई स्थिति से बचाना है। यह कैसे हो सकता है, आईए इस पर चर्चा करें।

सर्वप्रथम यह मानस बनाना होगा कि सम्मेलन को महत्व देना आवश्यक है व समाज के लोगों की सुरक्षा बहुत कुछ सम्मेलन की मजबूरी से जुड़ी हुई है, इस तथ्य को स्वीकारना होगा। इसके लिए निम्न बिन्दु द्रष्टव्य हैं :

सामाजिक मान्यता :

जो व्यक्ति सामाजिक पदाधिकारी का दायित्व लेकर समाज के लिए समय देता है उसे यह सुखद अनुभूति होगी कि वह केवल मारवाड़ी सम्मेलन नाम की एक संस्था का औपचारिक रूप से अध्यक्ष या मंत्री नहीं है; अपितु मारवाड़ी समाज द्वारा वस्तुतः मान्यता प्राप्त संस्था का अधिकारी है एवं इस नाते उसकी अपनी कोई अहमियत है तथा वह जो समय समाज के लिए दे रहा है, उसकी समाज ने मान्यता प्रदान की है। इस तरह सम्पूर्ण समाज में एकरूपता का वातावरण उत्पन्न होगा, सम्मेलन की गतिविधियों में सक्रियता होगी। इससे समाज के सम्पन्न एवं बुद्धिजीवी वर्ग का समाज के असमर्थ भाइयों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो सकेगा तथा सही माने में समाज शब्द की सार्थकता के दर्शन होंगे। जब तक समाज के लोगों को समाज व समाज से सम्बन्धित संस्थाओं से लाभ नहीं मिलेगा, उनके प्रति आस्था नहीं बनेगी।

पदाधिकारी कैसे लाभ हों?

यद्यपि संविधान के अनुसार मारवाड़ी सम्मेलन का हर सदस्य सम्मेलन का पदाधिकारी हो सकता है; इस दृष्टि से समाज का प्रत्येक भाई–बहन सम्मेलन का छोटा–बड़ा सभी प्रकार का दायित्व सम्भालने के योग्य है। लेकिन उसके दायित्व कुछ बढ़ जाते हैं, यह मानकर उसे चलना होगा।

मारवाड़ी सम्मेलन एक सामाजिक संस्था है, इसलिए इसके अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य पदाधिकारियों से यह अपेक्षा है कि वे अपने व्यवहार को संयत्र और आदर्शयुक्त बनायें। यदि उन्होंने अपना व्यवहार हल्का व उच्छृंखल बनाया, यदि उन्होंने अपना खान–पान व अन्य व्यवहार खुले आम चर्चा का विषय बनाया तो समाज के लोगों के मन में सम्मेलन के प्रति सम्मान का भाव कम हो जाएगा। ऐसे पदाधिकारी अपना नुकसान करें या न करें, संस्था का नुकसान अवश्य हो जाएगा। सम्मेलन के पदाधिकारी जब तक सम्मेलन का दायित्व नहीं सम्भाले हुए थे उस समय तक उसका व्यक्तिगत आचरण जैसा भी रहा हो, मुझे कुछ नहीं कहना है लेकिन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के नाते मैं यह चाहूँगा, अपितु समाज के हर भाई–बहन की यह अपेक्षा हो सकती है कि उनकी संस्था का महत्वपूर्ण दायित्व सम्भालने वाले व्यक्ति का आचरण यथा सम्भव निन्दा का कारण न बने।

मैं इस मत से सहमत नहीं हूँ कि पदाधिकारियों के व्यक्तिगत आचरण से संस्था को क्या लेना देना? मैं पुनः विनम्रतापूर्वक यह कहने की आज्ञा चाहूँगा कि मारवाड़ी सम्मेलन एक सामाजिक संस्था है, इसमें तथा क्लबों के प्रकार में अन्तर है। सम्मेलन जैसी सामाजिक संस्था के पदाधिकारियों पर समाज के लोगों को बुराइयों से बचाने का बहुत बड़ा दायित्व है।◆

आज का धनाढ्य समाज

श्री हरिप्रसाद बुधिया, चेयरमैन
पैटन इण्टरनेशनल लिमिटेड

"लक्ष्मीपुत्र, श्रेष्ठ (सेठ), महाजन जैसे श्रद्धापूर्ण उद्बोधन से पहचाना जाने वाला वर्ग आज दिशा भ्रमित होकर यह पहचान खोकर संकीर्णता, धनलोलुपता एवं स्वार्थ के फंदों से जकड़ता जा रहा है। अपने कर्तव्य एवं पूर्वजों की दी हुई संस्कारों की विरासत को खोता जा रहा है।

पहले अपने बन्धु बान्धव एवं समाज के कमजोर वर्ग एवं जरूरतमन्द इंसान की मदद करना अपना कर्तव्य समझा जाता था आज वहीं समय एवं साधन अपने स्वार्थ एवं ऐशोआराम पर लग रहा है।

बदलता हुआ समय सबको दिख रहा है, जो दहशतवाद, तोड़फोड़, लूट खसोट, चोरी चक्कारी एवं इस तरह की जितनी भी असामाजिक, अनैतिक घटनाएं हो रही हैं इसी अमानवीयता का परिणाम है। यदि अब भी सम्भल कर सुधारा न किया गया तो भविष्य में आने वाला समय और दुःखदायी ही नहीं खतरनाक भी हो सकता है।

जरूरत है सम्भालने की। सोच विचार कर एक सही दिशा में कदम बढ़ाने की जिसमें सबको साथ लेकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ें। भारत एक महान देश था, आज भी है और आने वाला 'कल' तो भारत का है ही।

"शानदार था भूत भविष्य भी महान है,
यदि हम संभाल लें आज तो वर्तमान है।"◆

समाजिक - चेतना

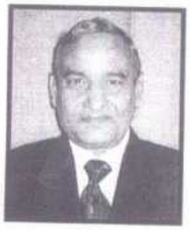

– ओमप्रकाश खण्डेलवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कदाचित् इन पदों पर कोई विस्मय प्रकट करे, हो सकता है, नकारने से भी न चूके। समस्त भारत में समग्र मारवाड़ियों की एक मात्र शीर्षस्थ संस्था है – मारवाड़ी सम्मेलन। लाखों की संख्या में जाने, पहचाने एवम् कहलाने वाले वृहत्तर मारवाड़ी समुदाय के कितने लोग समाज की इस संस्था से सम्बन्ध रखते हैं, तथ्यानवेषण पर अवश्य आश्चर्य होगा। समाज के विभिन्न मंचों से समय समय पर यह उद्घोषणा सुनने को मिलती है – राजनैतिक चेतना का अभाव। समाज की सुरक्षा हेतु राजनैतिक सजगता निर्विवाद रूपेन नितांत आवश्यक है। इधर कई वर्षो से धर्म के नाम से होने वाले विराट आयोजनों में वैभव प्रदर्शन फलस्वरूप अध्यात्म का एक अलग ही स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है। समाज की सर्वांगीण उन्नति में सभी प्रकार के सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवम् आध्यात्मिक आयाम मददगार हैं। प्रसंग है सामाजिक चेतना का। वर्तमान परिस्थितियों के दौरान यह लोगों के मध्य किस स्तर तक विद्यमान है। प्रतीत होता है कि यह चेतना अभी भी पूर्णता से दूर है।

समाजिक चेतना से मेरा अभिप्राय है, समाज कर्तव्यबोध एवम् उससे उत्पन्न दायित्यों का पालन। जिस प्रकार व्यष्टि से समष्टि संरचना, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति से समाज निर्माण प्रक्रिया से हम सब भलीभांति परिचित हैं। सामाजिक जाग्रति, जागरूकता अथवा चेतना को द्विपक्षीय समझना ही उचित होगा। परस्पर दायित्व पालन सामाजिक चेतना का मुख्य आधार है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज का एक अविच्छिन्न अंश है। सशक्त एवम् सुसंगठित अपने समाज संगठन से उसकी व्यक्तिगत अपेक्षायें भी रहती हैं जो अस्वाभाविक नहीं हैं किन्तु उनके अपूर्ण होने की स्थिति में सामाजिक संगठन की नकारात्मक आलोचना स्वागत योग्य नहीं कही जा सकती। परिवर्तनशील जगत में समाज संगठन अपने विचारों से समाज मार्ग प्रशस्त एवम् आलोकित करता है। विभिन्न प्रकार के बदलते हुए परिवेश में नई सोच के साथ दिशानिर्देशन करते हुए समुदाय को संकट की घड़ियों से त्राण दिलाने में एक मजबूत सम्बल का कार्य करता है। सामाजिक कुरितियों का उन्मूलन, समाज सुधार एवम् विकास संगठन के ऐसे प्रकल्प है जिन के लिये सतत प्रयास की आवश्यकता है।

मारवाड़ी सम्मेलन ने समय समय पर कई एतिहासिक एवम् साहसिक कदम उठाते हुए समाज निर्माण एवम् सुधार में अहम भूमिका निभाई है। कुशल एवम् योग्य नेतृत्व के अभाव में संगठनों में निष्क्रियता आती है जिसका खामियाजा समस्त समुदाय को भुगतना पड़ता है। इस के लिये दोषी कौन?

आत्मावलोकन कर प्रत्येक व्यक्ति को यह जानने की आवश्यकता है कि उसने अपने समाज संगठन के प्रति क्या योगदान किया। सामाजिक कर्तव्य बोध को समझते हुए यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उसने अपने सामाजिक दायित्वों का निष्ठापूर्ण परिपालन किया या नहीं। क्या अपनी सामर्थ्यानुसार सामाजिक कार्यो के लिये कदाचित तन मन एवम् धन से समर्पित करने के लिए कभी अपने को प्रस्तुत किया? समाज के कमजोर, असहाय, एवम् पीड़ित बन्धु के लिये सहिष्णुता से सहयोग करने का प्रयास किया। सामाजिक कार्यों के लिये चिंतन तथा जागरूकता की अपेक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति से की जाती है। दायित्वों के प्रति चेतना के अभाव में परस्पर दोषारोपण किसी के लिये कल्याणकारी नहीं है। अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने की इच्छाशक्ति ही चेतनता की प्रतीक है। सामाजिक कार्यकलापों के प्रति सदैव सजग रहना जागरूकता का सच्चा मापदण्ड है। संगठनों के प्रति व्यक्ति की सकारात्मक सोच चेतनता को दर्शाती है। संगठन हो या व्यक्ति, समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की सही समझ ही चेतना का सच्चा स्वरूप है अतः व्यक्ति एवम् समाज कल्याण में पूर्ण सामाजिक चेतना की परम आवश्यकता है। मारवाड़ी सम्मेलन अपने ७५ वें वर्ष में प्रवेश कर कौस्तुभ जंयती मनाने जा रहा है। इस अवसर पर सम्मेलन के सभी भाई–बहनों को हमारी शुभकामनाएं।◆

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books **OR** ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag **OR** ☐ Books

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________ City/District : ____________________

State : ____________ Country : ____________ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________ Mobile : ____________ Landline : STD CODE ____________

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________ dated ____________ for Rs. ________ drawn on ____________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature ____________ date ____________

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

मारवाड़ी समाज
कल आज और कल

– पुरुषोत्तम शर्मा, चाईबासा

आत्मचिंतन करने से अपने विचारों को एकत्रित करने तथा उन्हें पुनर्जीवित करने साथ ही समाज को विकसित करने में सहायता मिलती है तथा अपने आपको पहचानने, अपनी अच्छाइयों और बुराइयों का विश्लेषण करने में मदद मिलती है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है आवश्यकता है इसकी दिशा और दशा तय करने की यदि दिशा साकारात्मक है तो समाज को ऊँचाइयों तक पहुँचाने का यह सर्वश्रेष्ठ मार्ग है पर इसके विभिन्न पड़ावों पर आत्मविवेचन परिचर्चाएं, समाज मंथन, आदि की सोच विकसित करना आवश्यक है जिससें इसका सम्पूर्ण लाभ हम उठा सकें।

युवामंच का सदस्य रहने के कारण समाज की विभिन्न सभाओं, बैठकों, परिचर्चाओं में भाग लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होता रहा है, एक प्रश्न हमेशा से ही सुरसा की तरह मुहँ फैलाए हमारे समक्ष चुनौती देता हुआ प्रतीत होता है कि कल हम कहाँ थे, आज कहाँ है, और कल कहाँ होंगे? मैंने महसूस किया कि इस तरह की परिचर्चाओं से प्रायः हम बचना चाहते हैं क्योंकि आत्म विवेचना, अपनी कमजोरियों को ढूँढना अच्छा नहीं लगता है।

मारवाड़ी समाज कल क्या था, उसकी क्या पहचान थी, क्या विशिष्टताएं थीं, कौन सी बातें ऐसी थी जो हमारे समाज को प्रतिष्ठित करती थीं मेरी समझ में हमारी पहचान थीं।

1) मेहनत 2) ईमानदारी 3) सम्पन्नता 4) सेवा

ये चार मुख्य बातें हैं जो हममें इतर समाज की अपेक्षा अधिक थी, मेहनत की भावना हमारे अन्दर कूट–कूट कर भरी थी मेहनत ही पूर्वजों की पूंजी थी, नये प्रदेश नये स्थान जहाँ की भाषा, संस्कृति, रहन सहन की जानकारी न होते हुए भी अपनी मेहनत के बल पर मारवाड़ी समाज ने वहाँ पहचान बनाई, संसाधन एकत्रित किये, वहाँ के लोगों से घुल मिल कर वहाँ की भाषा, संस्कृति को आत्मसात किया।

ईमानदारी की जहाँ तक बात है, यह एक पर्यायवाची शब्द है जो उस व्यक्ति के लिये प्रयोग में लाया जाता है जो अपने परिवार, अपने समाज, राष्ट्र, अपने व्यवसाय, अपने मित्र, पड़ोस, सबके प्रति ईमानदार हो, जो हममें थी, हमारी ईमानदारी की लोग मिसाल देते थे।

अपनी मेहनत और ईमानदारी के बूते हमने सम्पन्नता हासिल की, गांव, शहर नगर कहीं भी आप जाये वहाँ, 'हेली' के नाम से एक बड़ा मकान आप जरूर पायेंगे, और आज भी उसे लोग प्रतिष्ठा से देखते हुऐ नजर आयेंगे। यदि १० सम्पन्न प्रतिष्ठित लोगों के नाम की गांव में सूचि बनानी होती थी तो १० के १० नाम मारवाड़ी के होते थे, समाज के व्यक्तियों की बोलचाल, पहनावे, मिलनसारिता को देख कर कोई उनकी सम्पन्नता के बारे में अनुमान नहीं लगा सकता था। सेवा के क्षेत्र में समाज ने एक मिसाल कायम की थी धर्मशाला, गौशाला, मन्दिर, अस्पताल, प्याऊ, आदि जनसेवा के प्रकल्प समाज द्वारा स्थापित किये गए कीर्ति स्तम्भ आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं।

आज परिस्थितियाँ क्यों बदली ?

मेहनत गायब, आज समाज के युवा शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धन कमाना चाहते हैं चाहे वह मार्ग कितना भी नीचे क्यूं न ले जाय, और शादी विवाह, अन्य आयोजन में धन का दिखावा फूहड़ प्रदर्शन अन्य विभिन्न आडम्बर, दिखावे ने ईमानदारी को भी हमसे अलग कर दिया। पहले के लोगों की तुलना में आज केवल हम नाम चला रहे हैं।

पहली पीढ़ी में यदि सम्पन्नता के क्षेत्र में १० नाम हमारे पास थे तो आज दो नामों पर भी सहमती नहीं बनती है, पहले हमारी सम्पन्नता को हमें देख कर नहीं जाना जा सकता था आज दूसरे समाज की सम्पन्नता को नहीं जाना जा सकता है, कल तक जो दूसरों के अवगुण थे वे आज हमारे समाज के लोगों में भी आ गए। आज हमारे युवाओं को अपने ही समाज पर प्रश्न चिन्ह लगाते देखा जा सकता है। दिखावे और धन के फूहड़ प्रदर्शन ने समाज की सभी विशिष्टताओं पर पर्दा डाल दिया है।

समाज की प्रतिष्ठा इस बात से नहीं बढती कि हमारी पीढ़ी ने क्या किया समाज की प्रतिष्ठा इस बात से बढती है कि आज हम क्या कर रहे हैं। आज समाज की पहचान अलग है और असलियत अलग, हमें वही बनना होगा जो हम पहले थे अपनी विशिष्टताओं को हासिल करना होगा, अपनी भाषा और संस्कृति का प्रदर्शन केवल तालियों के लिये नहीं अपितु उसे पुनः आत्मसात करना होगा। हमें उसी मार्ग पर चलना होगा जिससे हमारे पूवर्ज पहले गुजर चुके हैं।

आज हमारी युवा पीढ़ी को चाहिए कि सतत ईमानदारी पूर्वक अपने कार्यों, कर्तव्यों का अनुपालन करें तथा समाज और राष्ट्रहित में अपना योगदान सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से दें।◆

तलाक-दहेज हत्या

– राधेश्याम अग्रवाल

प्राचीन हिन्दु ग्रंथ जैसे मनु स्मृति में ऐसा उद्धत किया गया है कि भारतीय नारी के लिए उसकी डोली (प्लेनक्वीन) पति के घर पहुंचती है और उसके बाद उसकी अर्थी (वायर) उसके पति के घर से निकलती है। अब, यह आज के वैश्वीकरण के युग में जहाँ परिस्थितियों में काफी तेजी से बदलाव आया है मात्र कहावत सी रह गई है।

पहले जमाने में दो परिवारों में जब संबंध होने की बात होती थी वे एक दूसरे के परिवार के संस्कारों, सामाजिक प्रतिष्ठा, रहन–सहन आदि की जानकारी लेते थे परन्तु आज लड़के –लड़कियों के बारे में अभिभावकों को कोई जानकारी नहीं होती। आज लड़के–लड़की एक दूसरे से डेटिंग, ई–मेल, कम्प्यूटर, विज्ञापन आदि के द्वारा अपना संबंध बनाने का प्रयास करते हैं जो टिकाऊ नहीं होता है। ऐसा देखा गया है कि लड़कियों के अभिभावक अपनी लड़की की शैक्षणिक योग्यता न होते हुए भी उसके बायोडाटा में उच्च शिक्षा प्राप्त प्रोफेशनल लड़के के मिल जाने पर उसके समकक्ष या कम से कम शिक्षा स्नातक बतलाते हैं जो बाद में मालूम होने पर विस्फोटक हो जाती है ऐसे लड़कियों के माता–पिता के खिलाफ भारतीय पैनल कोड से संबंधित विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत कार्रवाई होनी चाहिए। समाज सोचता है कि लड़कियों की शादी में झूठ तो चलता ही है। उनका मुख्य मुद्दा यह होता है कि लड़की के हाथ किसी प्रकार पीले हो जाय, जो सरासर गलत है हिन्दु धर्म में जिन परिवारों को आप अपना बना रहे हैं, जन्म जन्मान्तर का रिश्ता जोड़ रहे हैं, उसमें झूठ बोलना हत्या करने के बराबर या ये कहें कि इससे भी अधिक जघन्य अपराध है।

मालीमथ कमेटी ने वर्ष 2003 में ही 498ए को गैर जमानती की जगह जमानती एवं इसे कम्पाउन्डेबुल बनाने की सलाह दी थी। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक इसका दुरूपयोग होता रहेगा। इस कानून के दुरूपयोग की शिकायतें लम्बें समय से आ रही हैं।

उपर्युक्त कारणों की समीक्षा करने पर यह लगता है कि भौतिक मुल्यों के बन्धन टूट चुके हैं, लोगों के अन्दर संवेदनशीलता बची ही नहीं है इसलिए उनकी नजर में आदमी की कद्र ही खत्म हो गई है यानि वह सिर्फ दूसरे की नजर में दिखावे के लिए अपनी धर्मपरायणता को छोड़ अपनी सामाजिक पहचान बनाने के चक्कर में जघन्य अपराध करने में भी अपनों को भी पीछे नहीं छोड़ते हैं। अब वह दिन नहीं रहे जब शादी को कायम रखने के लिए हर प्रयास किय जाता है। पिछले साल २००६ में सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में यह कहा था कि यदि शादी ऐसे मुकाम पर आ गई हो जिसमें उसे फिर से पटरी पर लाना सम्भव नहीं रह गया हो तो उसे तलाक का आधार मान लेना चाहिए। अदालत ने केन्द्र सरकार से कहा कि वह हिन्दु कानून विवाह में संशोधन 'अ–पुनरो–द्धार योग्य' स्थिति को पागलपन या सा क्रूरता जैसे आधार का दर्जा दे।

आज युवा दम्पतियों की तलाक लेने की संख्या तेजी से बढ़ रही है दिल्ली में पिछले २–३ सालों में तलाक के मामलों में बेतहासा वृद्धि हुई है। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि दिल्ली की ८ अदालतों में रोजाना औसतन तलाक हेतु ४० अर्जियां दाखिल होती हैं यानि एक सप्ताह में २८० अर्जियां। वर्ष २००४ में तलाक की ६५०० अर्जियां दाखिल हुई थीं। आज की युवा पीढ़ी जीवन भर घुट–घुट कर मानसिक तनाव में जीने से शादी को खत्म करना ही बेहतर समझती है।

ऐसा देखा गया है कि लड़की के अभिभावक आई.पी.सी की धारा ४९८ए का दुरूपयोग करते हैं। इसके अन्तर्गत लड़के वाले के खिलाफ झूठा दहेज हत्या एवं प्रताड़ना का केश करते हैं। मालीमथ कमेटी ने वर्ष २००३ में ही ४९८ए को गैर जमानती की जगह जमानती एवं इसे कम्पाउन्डेबुल बनाने की सलाह दी थी। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक इसका दुरूपयोग होता रहेगा। इस कानून के दुरूपयोग की शिकायतें लम्बें समय से आ रही हैं। दर्ज मामलों में ज्यादातर केश झूठे साबित होते हैं। हाईकोर्ट एवं सुप्रीमकोर्ट ने भी कई बार इस तथ्य को स्वीकार किया है। अभी हाल के दिनों में एक एन.जी.ओ. (एस.आई. एफ.एफ) ने एक रिसर्च द्वारा धारा ४९८ए के दुरूपयोग के ऊपर रिपोर्ट तैयार की है इसकी कॉपी लॉ अमीषन ऑफ इंडिया और लॉ एण्ड जस्टिस मिनिस्ट्री को भी भेजी गई है।

हर साल निर्दोष सिनियर सिटिजन बच्चों समेत करीब एक लाख आई.पी.सी की धारा ४९८ए के तहत बिना सबूत और जॉच के गिरफ्तार किए जाते हैं। कानून के जानकारों का कहना है कि क्रीमिनल जुरीस्पेन्डेंस का मौलिक सिद्धान्त यह कहता है कि कोर्ट कानून की नजर में किसी भी आरोपी को यह अधिकार है कि वह तब तक निर्दोष माना जाए जब तक दोषी साबित नहीं हो जाता।

अब समय आ गया है कि समाज कानून, आयोग सभी को गम्भीरता से ४९८ए में बदलाव लाने की बात पर चिन्तन किया जाना चाहिए।◆

– मयुर बिहार, फेज – 1, दिल्ली – 91

समरसता और सामाजिक
विकास के साथ राष्ट्रीय चेतना जरूरी

– हरि शंकर शर्मा, महामंत्री
छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी फेडरेशन

मारवाड़ी समाज ने न केवल भारत में वरन् सम्पूर्ण विश्व में अपने परिश्रम और ऊर्जा के साथ समर्पित भावना से व्यवसायिक औद्योगिक वरन् धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये हैं इसे हर व्यक्ति और समाज जानता है।

मारवाड़ी समाज के लोगों ने धार्मिक सहिष्णुता के साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं विकास ने अपनी शौर्य गाथा स्थापित की है इसे नकारा नहीं जा सकता। समाज के लोगों ने हर क्षेत्र में संयम, समर्पण, और निष्ठा का परिचय देते हुए व्यावसायिक क्षेत्रों और औद्योगिक इकाइयों का विस्तार करके न केवल देश का समुचित आर्थिक विकास किया है वरन् अपने उद्यम से हजारों लाखों लोगों के जीवन यापन के लिए नियोजन के अवसर भी सकारात्मक रूप में उपलब्ध करायें हैं। प्रदेश, देश एवं विदेशों में अपनी सामाजिक परम्पराओं के अनुरूप जनकल्याणकारी योजनाओं को मूर्तरूप देते हुए अनेकानेक जनोपयोगी कार्य सम्पादित कर अपना विशिष्ट स्थान एवं ख्याति भी अर्जित की है।

वर्तमान परिवेश में किसी भी समाज में सामाजिक चेतना के साथ ही राजनैतिक चिंतन व प्रभाव हमारे सामाजिक परिवेश को प्रभावित कर रहा है। यह अर्थहीन होगा कि हम सब कुछ धारण करने के बाद भी राजनैतिक परिदृश्य में अपना वर्चस्व अस्तित्व व स्थान खोते जा रहे हैं।

हमारे भारत देश की भौगोलिक संरचना, संस्कृति, कला, हस्तकला, हस्तशिल्प तकनीक और बहुआयामी दक्षता के कारण ही सम्पूर्ण विश्व के उद्योग व व्यापार जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखते है और यह उपलब्धि हमारी सामाजिक समरसता को ही प्रतिबिम्बित करती है किन्तु हम दिन–प्रतिदिन नित अपना राजनैतिक अस्तित्व और प्रतिष्ठित ख्याति राजनैतिक क्षेत्र में खोते जा रहे हैं यह एक चिन्तनीय विषय है।

प्रकृति और पर्यावरण में पारस्परिक सामंजस्य अपिहार्य होता है किन्तु इस सामंजस्य में विभिन्न गतिरोधों व उदासीनता के कारण प्रतिदिन बदलाव आता जा रहा है। ऐसा क्यों? इस पर चिंतन मनन और सकारात्मक रुख अपनाने की आवश्यकता है। हमारा भारत खनिज, वन, तकनीक और खाद्यान्न उत्पादन के साथ ही सभी विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में सम्पन्न है। हमारे संस्कार और पारस्परिक सामंजस्य ही हमारे समाज के विकास की दूरियाँ और परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है वैश्वीकरण के दौर में कार्पोरेट कल्चर व्यापार उद्योग एवं नियोजन के अवसर व क्षेत्र की सम्भावनाओं में नये आयाम रच रहा है। देश–विदेश की नामी–गिरामी कम्पनियां कार्पोरेट कल्चर के माध्यम से व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र को एक नया रूप प्रदान कर रही है।

वर्तमान में पूरे विश्व में बदलाव की लहर बह रही है और हो रहे हैं इंफ्रास्ट्रकचर तथा सभी क्षेत्रों में द्रुत गति से हो रहे हैं नित नये प्रयोग।

सम्पूर्ण भारत में जातिवाद ने मारवाड़ी समाज के सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक परिवर्तन को प्रभावित करते हुए प्रतिष्ठा को आघात पंहुचाया है फलत: नित नये गतिरोध उत्पन्न हो रहे हैं। जिस तरीके से हम अपने वैचारिक मतभेदों और प्रतिस्पर्धा के कारण सुसंगठित नही हो पा रहे हैं यही हमारे राजनैतिक स्थायित्व के लिए गतिरोध माना जा सकता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में सम्पूर्ण जनसंख्या का ७ से १० प्रतिशत हमारे मारवाड़ी समाज का बाहुल्य है किन्तु अपेक्षित रूप से सुसंगठित न होकर हम बिखराव की त्रासदी झेल रहे हैं। राजनैतिक दलों को जनप्रतिनिधियों के चुनावों में बेतहासा आर्थिक और जनबल की सहायता देकर हम अपने ही घरौंदों को रौंद रहे हैं और राजनैतिक अस्मिता खोते जा रहे हैं। समय का तकाजा है कि हम अपने धन–बल, बुद्धि और विकास के चिंतन को गम्भीर मोड़ देते हुए सुसंगठित हो जायें तभी मारवाड़ी समाज की समरसता और सामाजिक विकास के साथ राष्ट्रीय चेतना जागृत कर अपना पूर्ववत् राजनैतिक गौरवपूर्ण स्थान भी हस्तगत करने में सफल हो सकते हैं। हमें सामाजिक आस्था और संगठन को सुदृढ बनाने की दिशा में भी पहल करनी होगी अन्यथा आने वाले दिनों में हम अपनी राजनैतिक अस्मिता भी खो सकते हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन ने सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण से आ रही दुष्परम्पराओं में बदलाव के लिए प्रयास अवश्य किए हैं किन्तु सकारात्मक पहल की आवश्यकता है। संभव है कि हमारे प्रयासों में संकल्पों के क्रियान्वयन के प्रति दृढ इच्छा–शक्ति बाधक हो। अच्छाई के लिए प्रतिस्पर्धा वन्दनीय और अनुकरणीय होगी किन्तु मात्र प्रदर्शन और दिखावे के लिए प्रतिस्पर्धा हमारे सामाजिक विकास में घातक रूप से गतिरोधक होगी। समाज में आर्थिक दृष्टिकोण से विभिन्न परिवार एक समान सम्पन्न नहीं है। अत: सम्पन्न परिवारों को विपन्न परिवारों के उत्थान और विकास की दिशा में भी गम्भीर चिंतन और सृजनात्मक एवं सकारात्मक रुख अपनाने पर बल दें। आज के परिवेश में शासन स्वयं सभी वर्ग के गरीब तबकों के लिए जनकल्याणकारी योजनाएं क्रियान्वित कर रहा है। हमारे समाज को भी इस दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए समाज के गरीब एवं मध्यम वर्ग के परिवारों को उन्नत करने की कार्य योजनाएं बनाकर उन्हे मूर्तरूप देना होगा।

जिसे निज देश, जाति और समाज पर अभिमान हो,
वह नर नहीं निरापशु समान है।

आएं सह संकल्प करें अपने समाज की समरसता और सामाजिक विकास के साथ ही राष्ट्रीय चेतना जागृत कर समाज को सुसंस्कृत, सुसंगठित और अस्तित्वपूर्ण बनाने का।◆

विवाह संस्कार :

– राजेन्द्र शंकर भट्ट

एक विवशता को विशेषता बना लिया गया है। मध्ययुगीन समय में ऐसी कंटकाकीर्णस्थितियाँ थीं कि सामान्य प्रक्रियाएं सुमुचित सुरक्षा में हो नहीं पाती थीं। इसी कारण भारत के परिवारों में विवाह सूरज छिपने के बाद होने लगे–अंधेरे–अंधेरे में किसी तरह काम निपटा लो, भय रहता था कि कन्या की सुन्दरता की झलक भी दिख गयी तो उसे उठा ले जाया जाएगा। वह समय था जब प्रत्येक सुन्दर वस्तु पर शासक अपना ही प्राथमिक अधिकार मानते थे। एक भिन्न प्रकार का उदाहरण है। जब आमेर मुगल बादशाह के आने की आशंका बनी, वहाँ जहां आम दरबार होता था वहां के सुन्दर स्तम्भ चूने से ऐसे भरवा दिये गये कि उनकी भव्यता दृष्टिगोचर नहीं हो सके। कन्याएं उस समय सुरक्षित नहीं थीं, उनका विवाह इसलिए रात में होने लगा।

वैवाहिक प्रक्रिया दिन में होने लगे तो उससे जुड़ गये अनेक अपव्यय और अनावश्यक आडम्बर स्वत: समाप्त हो जायें। सदाचार से सुधार हो, इसी दृष्टि से यह आग्रह यहां आ रहा है।

इन पंक्तियों का लेखक दिन में विवाहों का प्रतिपादन कई दशकों से कर रहा है। उसे **''अध्यात्म अमृत''** के स्वर्गीय सीताराम पटवारी जन्मशती विशेषांक में पटवारी जी का यह उद्‌बोधन बहुत उचित और पूरी तरह ध्यान दिलाने योग्य लगा कि दिन में विवाह होने से हजारों रुपयों की बचत भी होगी, समय की भी बचत होगी और फालतू आडम्बर से भी बचाव होगा। अत: मनन करें और धर्मानुसार दिन में ही विवाह फेरे करें।

इसमें जो सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पटवारी जी ने प्रस्तुत किया वह यह है कि दिन में विवाह ही भारतीय परम्परा एवं निर्धारणों के अनुसार उचित है। उन्होंने तो **''विवाह पद्धति''** से ही प्रमाण दे दिया है। अभिषेक के अनन्तर कन्या सूर्य को देखे। वर–वधू सूर्य भगवान को देखें।

इस अवसर पर प्रार्थना भी प्रमुखता से सूर्य की करने का प्रावधान रहा है, और सूर्य स्तुति में कहा गया है : **''जगत के नेत्र स्वरूप, इन्द्रादि देवों का प्रिय करने वाले, पूर्व दिशा में उदय होने वाले, जो हैं उनकी कृपा से सौ वर्ष पर्यन्त हम देखते रहें, हम सौ वर्ष जीयें, सौ वर्ष तक सुनते रहें, सौ वर्ष तक हम में दीनता नहीं हो, हम सौ वर्ष से भी आगे जीवित रहें और सूर्य भगवान के दर्शन करते रहें।''**

यह श्लोक अपने में परिपूर्ण है। देवी–देवता बहुत है, परन्तु साक्षात तो प्रति दिन सूर्य से ही होता है। रात्रि का स्वामी चन्द्रमा भी हर रात को नहीं दिखायी देता । सूर्य अतएव सबसे अधिक आराध्य है, और उनकी साक्षी में संस्कार जो होगा उसका स्मरण वे प्रतिदिन करा सकते है। यह विवाह को पक्का करने और रखने का बड़ा ही स्थिर और सदा रहने वाला उपाय हुआ। इसलिए विवाह में सूर्य के दर्शन से उनके प्रति पूजनीयता का भाव इस संस्कार में समाविष्ट हुआ।

सूर्य से सौ वर्ष के जीवन–काल की प्रार्थना की गयी है, साथ में यह है कि देखने–सुनने की जो जीवन सार्थक एवं समर्थ रखने की प्राथमिक शक्तियां हैं उनसे वंचित नहीं हों। ऐसी स्वस्थ समर्थ स्थिति में सौ वर्ष का जीवन–काल प्राप्त हो, दीनता किसी प्रकार की इस बीच नहीं हो, यह विवाह के समय की सचमुच सबसे उपयुक्त अभिलाषा होती है। इसकी प्रार्थना उसी से करने का प्रावधान रखा गया है जो निश्चित रूप से हर दिन पूर्व दिशा में अवश्य उदय होता है। हमारे लिए तो ऐसी शक्ति इष्ट होती ही है, उसमें अत्यन्त असाधारण शक्ति यह है कि वह देवताओं का भी प्रिय कार्य करती है। प्रिय का ही यह विस्तार है कि जो शक्ति देवताओं के लिए प्रिय कार्य करती है, यह हमारे लिए जो सबसे प्रिय कार्य हो रहा है विवाह उसको सब प्रकार से सबल और सफल करें, और इसके लिए सौ वर्ष की अवधि दें। यह अवधि का निर्धारण भारतीय आदर्शों के अनुरूप है, हमारे यहां आशीर्वाद ही रहा है–सौ वर्ष जीयो !अर्थात सम्पूर्ण जीवन सूर्य का अनुग्रह रहे यह प्रार्थना उस शक्ति से है जो साक्षात रूप से अपनी सामर्थ्य हर सुबह दिखाती है।

प्रश्न बहुत सीधा और साफ यह हो जाता है कि ऐसी शक्ति के साक्षात से हम अपने को वंचित क्यों करने लगे। इसमें यह और ध्यान देने योग्य है कि चूंकि आक्रमण और अनुचित अधिपत्य दक्षिण में कम हुए, वहां अभी भी अधिकतर दिन में, सूर्य को ही साक्षी में, विवाह होते है। उत्तरी भारत से, राजस्थान से, जाकर, जो दक्षिणी राज्यों में बसे हैं, उनके अनेक परिवारों ने भी यह दिन में शादी करने की प्रथा अपना ली है। ऐसे परिवारों के लिए अपने मूल क्षेत्रों में रात में विवाह करने की विवशता नहीं होनी चाहिये।

पटवारी जी ने ठीक कहा है : ''जब से भारत में यवनों का राज्य हुआ तब से पर्दा प्रथा और रात्रि में फेरे होने लगे। कन्या की सुन्दरता देखकर उसे उड़ाया या भगाया न जा सके, नहीं अन्य उत्पात हो। इसी के लिए पर्दा या घूंघट का रिवाज या चलन हुआ और अंधेरे रात्रि में फेरे होने लगे।''

''इससे पहले दिन में सूर्य की साक्षी में फेरे होते थे'' इसके प्रमाण में पटवारी जी ने 'विवाह पद्धति' से ही उदाहरण दिया है, जो उपर्युक्त श्लोक में आ गया है। हमारे यहां कहा गया है कि जब दिन में किसी कारण से फेरे नहीं हो सकें तो ही रात्री में विवाह करें, और सूर्य की बजाय ध्रुव को देखें। स्पष्ट है, सूर्य ध्रुव से अधिक स्पष्ट और प्रकाशवान रहता है। उसका दर्शन परिस्थितियों ने कठिन कर दिया, अब ऐसी स्थिति नहीं है तो पुन: प्राचीन पद्धति, दिन में विवाह करने की, अपनायी जानी चाहिये।

पटवारी जी ने दो बातों की ओर ध्यान दिलाया है : (१) रूपयों की बचत और (२) फालतू आडंबर। इन दोनों दृष्टियों ने इस समय अति अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है। हमारे संविधान के उद्देश्यों में आया है– प्रतिष्ठा और अवसर की समता। संविधान केवल

औपचारिकताओं अथवा केवल अधिकारी वर्ग के लिए नहीं है। उसके प्रावधान जब तक जीवन्त होकर हर भारतवासी के चिन्तन और व्यवहार में नहीं आते संविधान को ऐसी सामर्थ्य प्राप्त हो ही नहीं सकती जिससे वह सभी की सुरक्षा एवं समुन्नति कर सके।

इसे बहुत स्पष्टता से समझे जाने की आवश्यकता है। समता ही सर्वप्रमुख तत्व है जो शांति–संतुलन– सुख–समृद्धि को स्थिर रख सकता है, अगर भेदभाव रहते हैं तो कभी कोई, कभी कोई, संकट में अवश्य आयेगा। विवाह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रायः हर व्यक्ति आता है। उसे अनुचित व्यय और अनावश्यक आडंबर से ऐसा कुरूप कर लिया गया है कि वह असमानता को सबसे अधिक दिखने वाला उपक्रम हो गया है। इसलिए इस संस्कार को समुचित स्वरूप देना, जिससे सबकी प्रतिष्ठा सुरक्षित रह सके, अत्यन्त आवश्यक है।

यह सही है कि जिनके पास अधिक धन–सम्पदा है वे उसका उपयोग और प्रदर्शन करने के लिए आतुर रहते हैं। इस असमानता मूलक असमाजिकता का परित्याग होना चाहिये। जो इस पर भी प्रदर्शन मुक्त नहीं हो सकें, उन्हे फालतू आडम्बर से बचकर, अपनी अभिलाषाओं की परिपूर्ति के वास्ते कुछ परोपकारप्रद उपाय अपनाने चाहिये। हमारे यहां इसका प्रचलन था कि जब समृद्ध–सम्पन्न परिवारों में विवाह होते थे, साथ–साथ कुछ न कुछ कम समर्थ परिवारों की कन्याओं के भी विवाह कराये जाते थे। यह समानता के अनुरूप नहीं होगा, लेकिन सामयिक सामाजिक आवश्यकता की परिपूर्ति इससे अवश्य होगी। यह एक मार्ग है जिससे आकांक्षा की भी परिपूर्ति होगी, और अनुपात में अधिक पुण्य भी प्राप्त होगा — एक कन्यादान के साथ–साथ कई कन्यादान होंगे।

असली बात यह है कि हम राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र हो गये हैं, परन्तु मानसिक दृष्टि से मुक्त नहीं हुए हैं, अनुचित प्रथा–प्रणालियों का भी परित्याग नहीं कर रहे। हम इतने भी सावचेत नहीं हुए हैं कि जो प्रथाएं परतंत्रता ने अनिवार्य की थीं, उनसे तो अपने को अलग करें। हमारी प्राचीन पद्धति जब दिन में, सामान्यतः प्रातःकाल, विवाह कराने की है, उसे अपनाने में केवल हमारी जड़ता बाधक है।

इसमें यह बहुत बुरा है कि युवक–युवतियां, जिनका विवाह होने को होता है, वे, इस संस्कार के पुनरूद्धार के पक्ष में नहीं हैं : हमारा विवाह तो एक ही बार होगा, बारात, रोशनी, आतिशबाजी आदि हमारे लिए फिर कब होगी? युवा वर्ग को समझना होगा कि उन्हे पुरानी प्रथाओं से नहीं, अपनी उपलब्धियों से अपनी मनोकामनाओं की परिपूर्ति का प्रयत्न करना चाहिये। युवक–युवतियां समझें कि **"प्रतिष्ठा और अवसर की समता"** का सिद्धान्त सभी के परिपोषण तथा उत्थान के लिए है, जिनमें वे भी आते हैं। दूसरे, जो सम्पन्न हैं वे भी प्रदर्शन के अवसरों से अपने को वंचित नहीं करना चाहते। ऐसे लोगों पर सामाजिक अंकुश लगाना होगा– जो विवाह रात्रि में हों उनमें सम्मिलित होने पर सामाजिक बहिष्कार का भय होना चाहिये।

दिन में विवाह परम्परा के अनुसार और अभी भी उपयोगी है, इनके साफल्य के लिए अतिरिक्त प्रयत्न तो करने ही होंगे।◆

– स्फटिक, 3, जयाचार्य मार्ग
समनिवास बाग, राजस्थान–302004

कैसे लायें सब मिलकर

– गोपाल "अकेला"

कैसे लायें सब मिलकर
समाज में, देश में सुधार
करना चाहिए मिल बैठ
हम सबको इस पर विचार

बन्द करदें हम अगर
आपसी नफरत की आंधी को
पा सकता है देश और समाज
फिर किसी 'गौतम' या 'गांधी' को

एकता और भाईचारे से ही
समाज का हो सकता है उत्थान
वरना वक्त ऐसा चल रहा कि
समाज खा जायेगा वक्त से पटकान

आतंकवाद, शोषण, अधिकार हनन
ये सब समाज को गर्त में ढकेलेगा
आखिरकार रक्त रंजित समाज को
वक्त बेचारा कब तक झेलेगा

इस आतंक और अधिकार हनन रूपी दानव ने
सारे समाज को जकड़ रखा है
समाज ने भी न जाने क्यों
इस दानव को पकड़ रखा है

आइये हम सब मिलकर
नींव रखें एक ऐसे शहर की
जो हो प्यार भाई चारे पर आधारित
न हो अधिकार हनन और आतंकवाद
न हो बुराई जिसमें आज की

आने वाले समाज के लिए
रहिए आज मजबूत आधारशिला
आइये शुरु कर दें आज से ही
समाज में प्यार भाई चारे का सिलासिल

–गोपाल प्रसाद चमड़िया
प्रदेश अध्यक्ष (बिहार), बेगूसराय

ROADWINGS INTERNATIONAL PVT. LTD.

**We Provide High Productivity
Equipment and Logistic Services**

HEAD OFFICE

8, Camac Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2282-5849, 2282-5784
Fax : 033-2282-8760
Email : roadwingsinternational@gmail.com

REGIONAL OFFICE

301, "B. D. Chambers"
10/54, Desh Bandhu Gupta Road,
Karol Bagh, New Dealhi - 110 005
Mob : 098731 87721
Email : roadwingsnewdelhi@gmail.com

zonal OFFICE

304, "Nirma Plaza", Marol Makwana Road
Andheri (East), Mumbai - 400 059
Phone : 2850-7899, 3256-7064
Fax : 022-2850-7928
E-mail : roadwingsint@vsnl.net

We are a professionally managed multi-crore growing concern with vast experience in Heavy Cargo Handling, Operation and Maintenance of more than hundred Container Handling Equipments, Mobile Crane, Forklifts, Hydra etc.

Courtesy : Bhaniram Sureka

With best compliments from :

SHREE BALAJI TEXSPIN (P) LTD.

7, Ganesh Chandra Avenue, Kolkata-700 013
Ph. : 22216717, 22110104, Fax : 033 22110437
E-mail : balaji_bijay@yahoo.co.in
Gram : "TEXTILES"

Textile Machinery
Merchant & Yarn Manufacturer

देश की मिट्टी। देश की हवा।
देश का पानी। देश की दवा।
SHREE BAIDYANATH AYURVED BHAWAN PVT. LTD.
KOLKATA
बैद्यनाथ
दवाएँ
Kesari Kalp
सुन्दरी सखी
च्यवनप्राश
शंखपुष्पी
दन्त मंजन लाल
SURAKTA
७०० से भी अधिक आयुर्वेदिक दवाओं के विश्वसनिय निर्माता।

Make a statement about yourself without even saying a word
Reflect your taste with the very latest in interior artistry. The leader in the plywood category Centuryply adds many inspiring touches with the widest range of spectacular veeners and eye-catching laminates. What you get is a high end designer space that talks eloquent about your lifestyle and leaves all and sundry speechless with admiration.
CENTURYPLY
Plywood | Veneer | Laminate | Prelam | MDF

शुभकामनाओं सहित :

दि ए.पी. महेश को-ऑप. अर्बन बैंक लि.

(प्र. का. आई. एस. ओ. 9001 : 2008 प्रदत्त) मल्टी-स्टेट शेड्यूल्ड बैंक

मुख्यालय : 5-3-989, तीसरा माला, शेरजाह इस्टेट, उस्मानगंज, एन.एस. रोड, हैदराबाद-500 095 (आं.प्र.) भारत

फोन : 24615296 व 99, 23437100 से 103 व 105 फैक्स : (040) 24616427

Website : www.apmaheshbank.com E-mail : info@apmaheshbank.com

महेश बैंक

स्थापना : 1978

3 राज्यों में 30 शाखाओं सहित व्यापार

दक्षिण भारत का प्रथम बहुराज्यीय अनुसूचित नगरीय सहकारी बैंक

आं.प्र. में आर.बी.आई. से सर्वप्रथम ए.डी. कैटागिरी-II का लाईसेन्स प्राप्त कर्ता

मैक्स-न्यूयार्क लाइफ इन्श्युरेन्श कं.लि. के साथ जीवन बीमा पॉलिसियों के वितरण की सुविधा

वैस्टर्न यूनियन मनी ट्रांस्फर (रिलायंस समूह) के द्वारा मुद्रा हस्तांतरण हेतु अनुबंधित

एन.आर.ई. जमा प्राप्तियाँ स्वीकारणीय

तत्काल मुद्रा हस्तांतरण के लिए आर.टी.जी.एस. सुविधा

नियमित लाभांश वितरण

शुद्ध अनुत्पादक ऋण 0%

ऑडिट वर्गीकरण श्रेणी - 'ए'

आर.बी.आई. द्वारा I श्रेणी में वर्गीकृत

आं.प्र. के नगरीय सहकारी बैंकों के कुल व्यापार की 15% भागीदारी

सभी शाखाओं में व्यापारिक लेन-देन हेतु अतिरिक्त कार्यावधि

कोर बैंकिंग द्वारा एनीब्रांच बैंकिंग सुविधा

गृह निर्माण हेतु 50 लाख रुपये तक एवं शिक्षा हेतु 20 लाख रुपये तक ऋण सुविधा

बहुनगरीय चेक बुक सुविधा आं.प्र. की सभी शाखाओं के लिये उपलब्ध

वरिष्ठ नागरिकों को अतिरिक्त ब्याज

निदेशक मण्डल

पुरुषोत्तमदास मानधना
सीनियर वाईस चेयरमैन

रमेशकुमार बंग
चेयरमैन

श्रीमती पुष्पा बूब
वाईस चेयरपर्सन

निदेशकगण

आनन्द प्रकाश डालिया

अशोक कुमार गिलड़ा

चैनसुख काबरा

देवेन्द्र झँवर

घनश्यामदास काकांणी

हरिकिशन बजाज

नन्दलाल सारडा

नारायणलाल बाहेती

रामनिवास सोनी

रामप्रकाश भण्डारी

श्रीमती रत्नमाला साबू

सीए. आर.बी. काबरा

सीए. रामगोपाल सारडा

उमेश असावा
एम.डी. व सी.ई.ओ. (आई/सी)

आपका विश्वास - हमारा उपहार

पूर्वी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

www.sanmarg.in

सन्मार्ग

DAILY READERSHIP OVER 7.5 LACS AS PER NRS

खबरें अनेक सच्चाई एक !

We Churn Out The Best News..

NO. 1 HINDI DAILY FROM KOLKATA (AS PER ABC & NRS)

Kolkata, Ranchi, Patna, Bhubaneshwar

कौस्तुभ जयंती पर हमारी तरफ से शुभकामनाएँ

Wish koshtubh jayanti
Great success

Best compliments from

BISHWANATH MAROTHIA
SHAILENDRA MAROTHIA
VIKAS MAROTHIA

We deal in
SPONGE IRON, INGOR, BILLETS, DOLOMITE AND COAL. MAA BHAWANI ENTERPRISES.
MAA BHAWANI TRANSPORT SERVICE.
SIDHIVINAYAK ENTERPRISES

Auth. Dealer secure meters for wesco region
Bisra-road, rourkela-769001
Tele fax 066:2500200

COSMIC TRADING AND SERVICES

1st floor, chartered bank building
4,n.s.road. Kolkata-700001
T/fax 913340015450
E.mail marothia@gmail.com.

With Best Compliments From

Ramdayal Maskara

MAHABIR PETRO PRODUCTS (P) LTD.

Barauni Industrial Area
P.O. TilRath (Begusarai)
Bihar

With Best Compliments From

With Best Compliments From

"Q"

AGRAWAL GRAPHITE INDUSTRIES

'SHANTIKUNJ'
FARM ROAD, SAMBALPUR-768002
ORISSA, INDIA.

. PHONE: (0663) 2400828,2403251, 2403651
FAX: (91) 663-2533374
E-MAIL:pravash2@bsnl.in
GRAMS : SONAMINE

MINE OWNERS,PIONEER PRODUCERS OF NATURAL CRYSTALLINE GRAPHITE FLAKES & POWDERS

We have the largest processing facility in India to process lowest grade Graphite dore to a minimum fixed carbon of 50% upto a maximum of 98% carbon with all mesh sizes to cater different types of industries like Steel Industry Foundry, Brake lining, Carbon brush, Pencil Battery, Packing & Crucibles, Refractories etc.

QUALITY IS OUR MOTTO

With Best Compliments From

कौस्तुभ जयंती पर हमारी तरफ से शुभकामनाएँ

Road Cargo Movers Pvt. Ltd

Suite No. 211, 2nd Floor
1, Gibson Lane, Kolkata-700 001
(Behind Orient Cinema)
Phone No. 2210-3480 / 3485, 32993480
Fax : 033-2231 9221

E-Mail: roadcargo@vsnl.net

With Best Compliments From

PU Foam Sheet

An ISO 9001 : 2000 Company

Puf®
100% PURE
PREMIUM
FOAM SHEET

Best for your Rest

flexipol@refiffmail.com

अग्रसेन महाराज की जयंती मनी

मुजफ्फरपुर । बिहार प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन ने रविवार को महाराज अग्रसेन की जयंती पर सदर अस्पताल व केजड़ीवाल मातृसदन अस्पताल में मरीजों के बीच फल और बिस्किट का वितरण किया। उधर सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. योगेन्द्र प्रसाद के आवास पर हुई संगोष्ठी में उपस्थित लोगों ने अग्रसेन महाराज के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अग्रसेन महाराज ने समाज को नई प्रेरणा दी। मौके पर महामंत्री राजीव कुमार केजड़ीवाल, वेदप्रकाश अग्रवाल, मयंक केजड़ीवाल, भारत भूषण अग्रवाल, सीताराम बाजोरिया, अमर कुमार, किशोरीलाल अग्रवाल एवं राजेंद्र प्रसाद मौजूद थे।

जागरण व फलाहार आयोजित

शारदीय नवरात्रा के चतुर्थ स्वरूप माता कुष्माण्डा के पूजन के मौके पर मंगलवार को सरैयागंज स्थित जालान औषधालय परिसर में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से देवी जागरण व सामूहिक फलाहार कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भजन गायक आचार्य विष्णु शर्मा के देवी भजनों की श्रद्धालुओं ने सराहना की। मौके पर सम्मेलन के अध्यक्ष विश्वनाथ अग्रवाल, सचिव शिवहरि अग्रवाल, संरक्षक सीताराम बाजोरिया, महासचिव नंदलाल मोटानी, वार्ड पार्षद इकबाल कुरैशी, के.पी. पप्पू, दिनेश केड़िया भी मौजूद थे। उधर रोटरी आम्रपाली मुजफ्फरपुर की ओर से मुजफ्फरपुर क्लब में भी फलाहार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गायकों ने भजन गीत प्रस्तुत किए। मौके पर एडीएम प्रहलाद ठाकुर, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश शर्मा, संस्थान के अध्यक्ष डा. रामजी प्रसाद, सचिव जीतेन्द्र प्रसाद, डा. टीपी शाही, डा. बीके राय, डा. अशोक कुमार शर्मा, आशीष शंकर, एचएल गुप्ता, आनन्द केड़िया, उमाशंकर कहनानी व रामावतार बजाज भी मौजूद थे।

माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल

दिनांक ०६ सितम्बर २००९ को सभा भवन में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित श्री अनिल कुमार जाजोदिया द्वारा "व्यक्तित्व-विकास" पर सफल परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें करीबन २५० लोग सहभागिता कर लाभान्वित हुए।

इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत सभापति श्री देव किशन करनानी ने किया। सभागत जानकारी मंत्री श्री हरीश काबरा ने प्रदान की। कार्यक्रम को साफल्यमंडित करने में सर्वश्री प्रदीप गट्टानी, पूनम चंद झंवर, राजेश मूंधड़ा, कुलदीप गट्टानी, विनोद राठी, मनोज सोमानी, अंजनी कुमार सोमानी, विजय डागा, राजेश चाण्डक, मदन गोपाल राठी, आशीष मालपानी, सुरेन्द्र मोहता, श्री किशन राठी, श्रीकांत करवा, प्रदीप डागा एवं गिरिराज मोहता का उल्लेखनीय योगदान रहा।◆

दीपावली मिलन समारोह सम्पन्न

जूनागढ़ २० अक्टूबर २०१० को अग्रसेन भवन में मारवाड़ी सम्मेलन युवा मंच तथा महिला समिति की तरफ से दीपावली मिलन धूमधाम से पालन किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के श्री माणिक चन्द अग्रवाल के सभापतित्व में हुई सभा में जूनागढ़ शाखा के सभापति श्री संजय कुमार अग्रवाल, युवामंच सभापति, श्री गोपाल मित्तल, महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रकला अग्रवाल, अग्रसेन भवन के सभापति श्री ललित कुमार अग्रवाल उपस्थित थे। इस अवसर पर धर्मगढ़ यशोदा अनाथ आश्रम के श्री श्याम सुन्दर जाल को सम्मानित किया गया। आश्रम के तीस बालक बालिकाओं को कपड़े, खिलौने, फल, मिठाई बाँटी गई। सचिव श्री राजेश अग्रवाल ने धन्यवाद दिया।◆

पंछी

प्रति की रीत बतादे पंछी, मानवता हमें सिखादे पंछी।
भाई बना भाई का दुशमन, इनका द्वेष मिटा दे पंछी।
भारत के खोये वैभव को, फिर से वापिस ला दे पंछी।
अनैतिकता पर, नैतिकता की, अब तो धाक जमा दे पंछी।
भूखे पेट कोई न सोये, ऐसा माहौल बना दे पंछी।
रामराज्य के मूलमंत्र को, जन–जन तक पहुँचा दे पंछी।
पाक की नापाक हरकतों को, अब तो धूल चटा दे पंछी।
मेरी प्यारी मातृ भूमि को, फिर से स्वर्ग बनादे पंछी।

– परशुराम तोदी 'पारस' सलकिया (हावड़ा)

विदाई गीत

–सज्जन बेरीवाल

एक गली से अर्थी निकली, एक गली से डोली।
कुछ पल का ठहराव हुआ, क्योंकि दोनों चौराहे पर मिली।।

अर्थी ने एक दूजे को निहारा।
डोली ने अर्थी को दुत्कारा।।

मनहूस क्या तुझे इसी पल जाना था।
मुझे जब खुशियों की ओर कदम बढ़ाना था।।

नाक सिकोड़ी, आँख तरेरी, हाथ झटका।
दिलों में नफरत का अंगार लपका।।

अर्थी ने डोली से कहा क्यों तू इतना इतराती हो।
व्यर्थ की बातों में खुशी के पल गंवाती हो।।

अभी तुझमें और मुझमें कोई फर्क नहीं।
हम दोनों में कोई अलग नहीं।।

हम दोनों की ही हो रही है विदाई।
दोनों के परिवारों ने ही आँसू बहायी।।

तू भी लाल जोड़े में, मैं भी लाल जोड़े में।
तू भी सुहागन, मैं भी सुहागन।।

तेरे भी आगे पीछे लोग, मेरे भी आगे पीछे लोग।
तू भी सजी हुई, मैं भी सजी हुई।।

तू भी चार काँधों पर, मैं भी चार काँधों पर।
तेरे आगे नाच गाना, मेरे आगे भजन कीर्तन।।

तुझमें और मुझमें फर्क सिर्फ इतना।
तू साजन के जीवन में जा रही है।
मैं साजन के जीवन से जा रही हूँ।।

तू बैठी है, मैं लेटी हूँ
तू जिन्दी है, मैं मुर्दी हूँ।
तू डोली है, मैं अर्थी हूँ।

– मारवाड़ी युवा मंच, कोलकाता शाखा
40/5, स्ट्राण्ड रोड
छठवां तल्ला, रुम नं. – 38
कोलकाता – 700 001

श्रद्धांजलि:

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार :

प्रोफेसर कल्याण मल लोढ़ा

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार व जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर कल्याण मल लोढ़ा का २१ नवम्बर की रात लगभग २.३० बजे जयपुर में निधन हो गया। वे ८९ वर्ष के थे। प्रोफेसर लोढ़ा पिछले कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे।

प्रोफेसर लोढ़ा ने १९४३ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयाग से हिन्दी में एम.ए किया। सन १९४५ में आप पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता आकर बस गए। कोलकाता के जयपुरिया कॉलेज में आप हिन्दी के विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। १९४८ में कोलकाता विश्वविद्यालय में अंशकालिक प्राध्यापक के रूप में काम शुरू किया, फिर १९५३ में पूर्णकालिक प्राध्यापक नियुक्त हुए। १९६० में आप रीडर बने ओर १९७४ में प्रोफेसर। १९६० से ८० तक आप कोलकाता विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। इस लम्बे कार्यकाल में आपने हिन्दी की विकास यात्रा में नए आयाम स्थापित किये। हिन्दी के सुविख्यात विद्वान तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री कोलकाता विश्वद्यािलय में प्रोफेसर लोढ़ा के शिष्य रहे। सन १९७९ से ८० तक आप राजस्थान के जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गए। एक वर्ष के पश्चात आप पुन: कोलकाता आ गए फिर सन १९८६ में आपने कोलकाता विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण किया।

प्रोफेसर लोढ़ा ने ५० से अधिक शोध निबंध लिखे। आपने दर्जनों पुस्तकों की रचना की, जिनमें प्रमुख है–वाग्मिता, वाग्पथ, इतस्तत:, प्रसाद–सृष्टि व दृष्टी, वागविभा, वाग्द्वार, वाक्सिद्धि, वाकतत्व आदि।

प्रोफेसर लोढ़ा को उनके साहित्यिक अवदानों के लिए २००३ में भारतीय ज्ञानपीठ के मूर्ति देवी पुरस्कार, केंद्रीय हिन्दी संस्थान–आगरा से राष्ट्रपति द्वारा सुब्रमण्यम सम्मान, अमेरिकन बायोग्राफिकल सोसाइटी आदि ने सम्मानित किया।

आपका जन्म २८ सितम्बर १९२१ को जोधपुर में हुआ। आपके पिता श्री चन्दमलजी लोढ़ा तत्कालीन जोधपुर राज्य में उच्च अधिकारी थे। इनकी माता का नाम सूरज कंवर था जो एक मध्यवित्त परिवार की गृहिणी महिला थी।

प्रोफेसर लोढ़ा के निधन से साहित्य जगत में शोक की लहर है। उनका अंतिम संस्कार रविवार २२ नवम्बर को जयपुर में किया गया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित है।◆

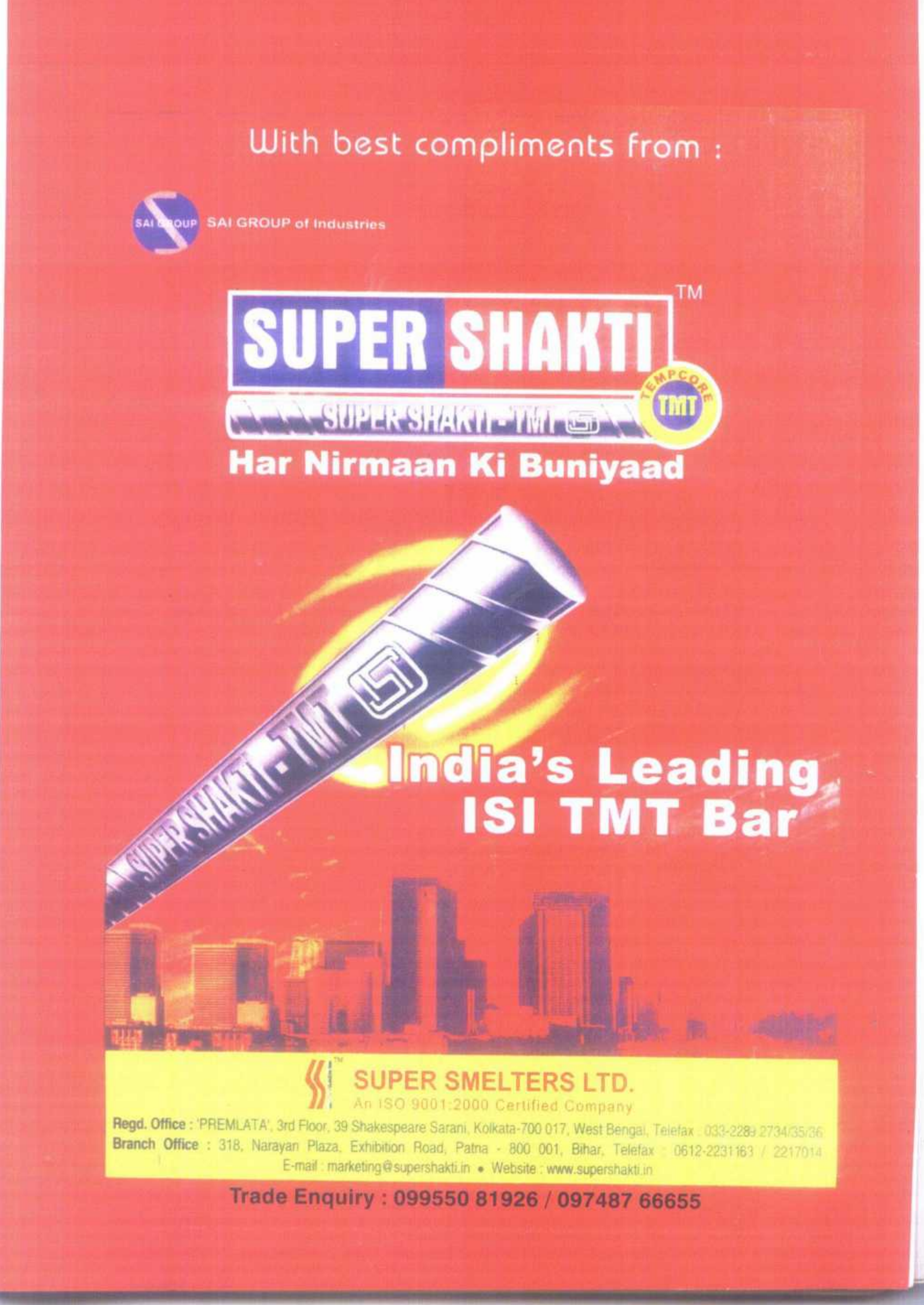

With best compliments from :
SAI GROUP
SAI GROUP of Industries
SUPER SHAKTI ™
TEMPCORE TMT
Har Nirmaan Ki Buniyaad
India's Leading
ISI TMT Bar
SUPER SMELTERS LTD.
An ISO 9001:2000 Certified Company
Regd. Office : 'PREMLATA', 3rd Floor, 39 Shakespeare Sarani, Kolkata-700 017, West Bengal, Telefax : 033-2289 2734/35/36
Branch Office : 318, Narayan Plaza, Exhibition Road, Patna - 800 001, Bihar, Telefax : 0612-2231163 / 2217014
E-mail : marketing@supershakti.in • Website : www.supershakti.in
Trade Enquiry : 099550 81926 / 097487 66655

With Best Compliments from :

MIRONDA
TRADE & COMMERCE PVT. LTD.

MIRONDA TRADE & COMMERCE PVT. LTD.

MERCURY INTERNATIONAL

MALVIKA COMMERCIAL PVT. LTD.

AMIT FERRO-ALLOYS & STEEL (P) LTD.

SB TOWERS, 3RD FLOOR,
37, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA - 700 017, INDIA

PHONE : 2289-5400
FAX : 2289-5401
EMAIL : info@mirondagroup.com

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, December 2009
RNI Regd. No. 2868/68

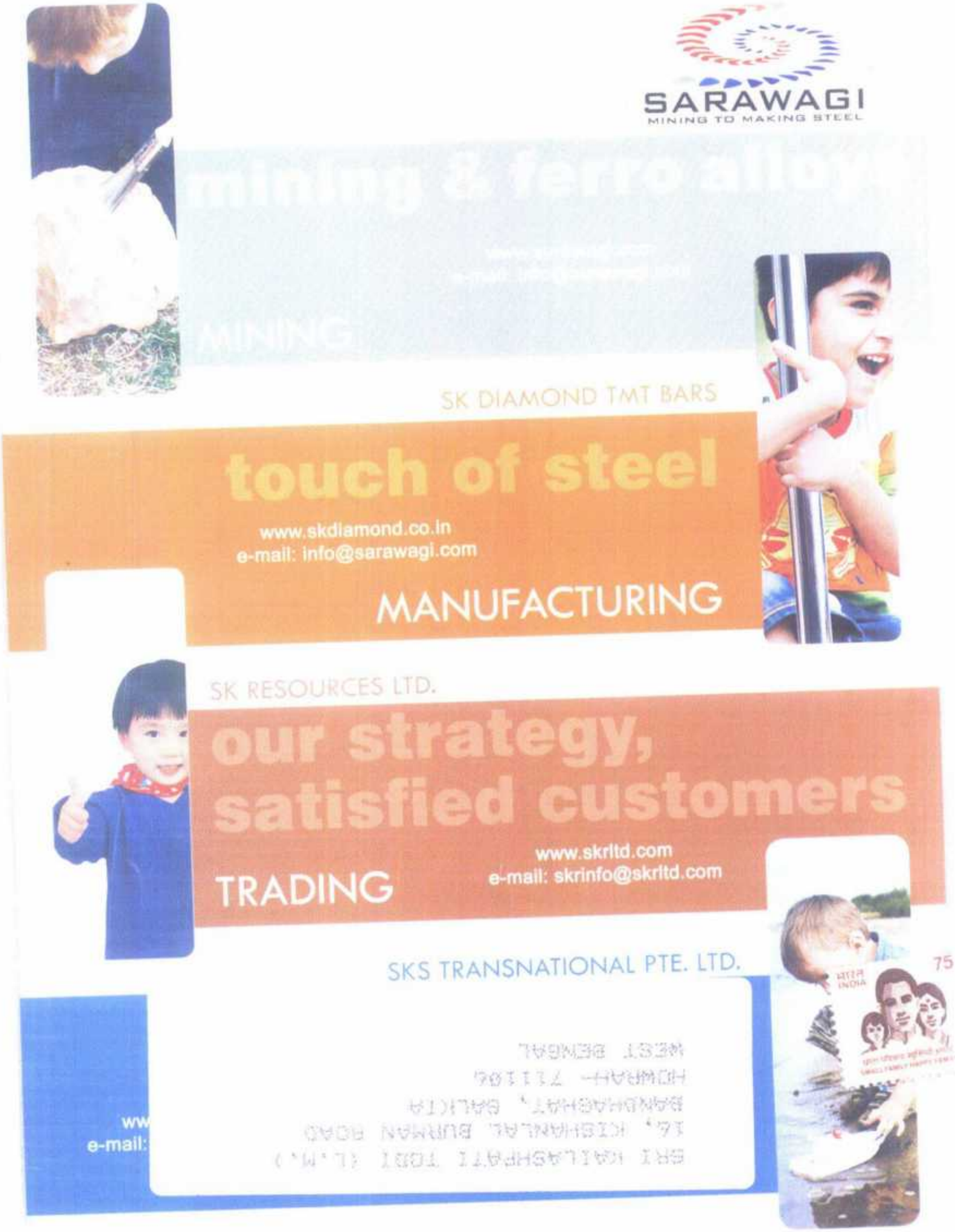

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

समाज के बारे में उद्‌गार

संवेदनशीलता समाज का आभूषण

– नन्दकिशोर जालान

आवश्यकता है हमारी अस्मिता अक्षुण रहे हम इक्कीसवीं सदी के नागरिक हैं। आज के छात्र छात्राएं थोड़े अन्तराल के बाद देश व समाज की युवा पीढ़ी में प्रवेश कर जायेंगे। युवा पीढ़ी हमारे समाज व देश की आधार शिला होती है। इन्हीं के कंधों पर देश की बागडोर रहती है। आज परिवेश तेजी से बदल रहा है। दुनिया सिमट कर छोटी हो गई है। आज हर जगह एक–दूसरी जगह चन्द घन्टों में ही जा–आ सकते हैं।

अर्थ व्यवस्था में भी काफी परिवर्तन हो रहे हैं। संवेदनशीलता समाज का आभूषण है जिस पर हम सभी गर्व कर सकते हैं। आने वाले युवा युवतियों का विस्तृत दृष्टिकोण होना चाहिए जो अपनी संस्कृति की ज्ञान विज्ञान, शौर्य त्याग व सर्वोत्तम सामाजिक व्यवस्था के आधार पर निर्मित करने का मानस आज से ही तैयार करे और हमारी अस्मिता को कहीं आँच न आने दें।

देश की स्वतंत्रता हेतु महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय ने कितनी लड़ाइयाँ लड़ी। उस समय के सामाजिक स्त्री पुरुषों का कितना सहयोग था। आने वाले समय में दुनिया के सिरमौर देशों में इसकी गिनती होनी आवश्यक है।

परिवर्तन की चलती चक्की के कारण आने वाले कल का चिन्तन नितान्त आवश्यक है पुरानी यादें पुरानी बातें अपनी संस्कृति और सभ्यता की एक महत्वपूर्ण थाती रही है। युवा दृष्टि और युवा शक्ति बड़ी विलक्षण होती है जो बौद्धिक वैज्ञानिक उन्नति में कुछ कर गुजरने की क्षमता रखती है। उसे मात्र दिग्दर्शन की जरूरत है। आज आर्थिक प्रभुता सर्वाधिक महत्व रखती है लेकिन सभी उसके शिखर पर नहीं चढ़ सकते हैं। देश का हर कोना अन्वेषण के पथ को सबल करने का आह्वान कर रहा है।

प्रतिभाओं को ठीक ढंग से देखे समाज

– स्व. भँवरमल सिंघी

अगर हम अपनी वर्तमान प्रतिभा को ठीक ढंग से देखें और समझें तो निश्चय ही हम शक्ति का अनुभव करेंगे। बहुत सारी गलतफहमियां हमारे समाज के बारे में दूर हो चुकी हैं और जो आज भी प्रचलित हैं, वे भी हमारी नई प्रतिभा को दिखाने समझाने से दूर हो जायेंगी। व्यवसायोत्तर क्षेत्रों में भी, जैसे शिक्षण–प्रशिक्षण, चिन्तन लेखन, कला और खेल कूद सरकारी नौकरियों और प्रतिरक्षा आदि के क्षेत्रों में अपने अवदान की विशेषता को हम लोगों के सामने रखें और पहुंचायें। हमारी सम्मान भावना केवल धन के प्रति ही न रहें, बल्कि अन्याय शक्तियों के विकास और संवर्धन के प्रति भी रहे। हम निरन्तर संगोष्ठियों का आयोजन कर रहे हैं जिनमें पारम्परिक विचार– विनिमय के द्वारा नये विचारों की जागृति हो, हमारी शक्ति का हमें सच्चा अहसास हो। इन संगोष्ठियों में हमने यह अनुभव किया है कि समाज में आज न विचार की कमी है और न शक्ति की। अगर कमी है तो इन दोनों के योग के कर्मशील बनने की।

इसी सन्दर्भ में हमारे सामने समस्या आती है कार्यकर्ताओं के निर्माण और प्रोत्साहन की। आज चाहे राजनीति के क्षेत्र में हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र में कार्यकर्ताओं का अभाव दिखता है। जिस समाज के पास सार्वजनिक सेवा करने वाले कार्यकर्ता नहीं होते, वह उतना अग्रसर नहीं होता, जितना हो सकता है। सम्मेलन न केवल कार्यकर्ताओं का सम्मान करता है और उनको प्रोत्साहित करता है, बल्कि उनके शिक्षण प्रशिक्षण के लिये प्रयत्नशील रहता है। आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि पुराने कार्यकर्ता नये कार्यकर्ताओं का निर्माण करें और उनको समाज में अग्रसर करें। आज कार्यकर्ताओं में जो नवचिन्तन होना चाहिये और सार्वजनिक कार्यों के तौर तरीकों का जो ज्ञान होना चाहिये, विश्लेषण करने की शक्ति होनी चाहिये, उसके लिये प्रेरणा और प्रोत्साहन की आवश्यकता है। जो समाज अपने कार्यकर्ताओं का आदर करना नहीं जानता, उसको प्रोत्साहित नहीं करता, सहायता और सहयोग नहीं देता, वह आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों अपने को बहुत ही चिन्तनीय स्थिति में पायेगा।

With Best Compliments From

कौस्तुभ जयंती वर्ष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

75

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

PLATINUM JUBILEE YEAR

1935-2010

A Well Wisher

पूर्ण-विराम

- जयकुमार रुसवा
हास्य व्यंग्य कवि

वह सभ्रान्त महिला
सहमी-सहमी सी डाक्टर के पास आई
और अपनी समस्या इस तरह बताई
डॉक्टर साब! मेरी बेटी की उमर है
अभी मात्र डेढ़ साल
और थोड़ी सी चूक ने
खड़ा कर दिया है एक नया बवाल
फिर से चढ़ गए हैं
मुझको महिने चार
अब हम पति-पत्नी
करके पूरा सोच-विचार
इस निर्णय पर आये
कि कोख का यह गर्भ गिरवा दिया जाये
क्यूंकि जब मैंने पिछले सप्ताह
सोनोग्राफी टेस्ट करवाया
तो उसने भी मेरे गर्भ में
फिर कन्या-भ्रूण ही बताया
एक तो डेढ़ साल की पहले ही है
अब एक और आयेगी
तो मेरे जीवन में
कई समस्याएं बढ़ जाएगी
मैं दो-दो बेटियों को
एक साथ नहीं पाल सकती
दिन भर उन्हें संभालते रहने का
समय नहीं निकाल सकती
इसलिए आप कृपा करके
मेरा यह गर्भ गिरा दीजिए
मेरी इस समस्या को
जड़ से मिटा दीजिए
डॉक्टर ने कहा-क्या आप नहीं जानती
कि जो आपकी साध है
वह टेस्टिंग और भ्रूण हत्या
कानूनन अपराध है
यह काम तो पूरी तरह से
जोखिम से भरा है
चार माह का गर्भ गिराना
इसमें आपकी जान का भी खतरा है
अगर आपकी कोख का कन्या भ्रूण
आपके जीवन पर भार है
तो क्या आप अपनी जान
दांव पर लगाने को तैयार हैं?
यह सुनकर महिला बोली-
बताया ना कि
एक ही बेटी को संभाल सकती हूँ
फीगर भी मैंटेन करना है
इसलिए एक बच्ची ही पाल सकती हूँ
अतः अब आप मेरी
यह समस्या मिटाइए
मेरी जान बचे और एक ही बेटी रहे
ऐसा कोई उपाय लगाइए
गंभीर होकर डॉक्टर ने कहा-
उपाय तो पक्का है
क्या आप उसे कर पाएंगी
उसके लिए हिम्मत भी चाहिए
क्या आप हिम्मत दिखाएंगी
महिला बोली-अगर मैं बची रहूँ
और एक ही बेटी रहे
तो पीछे नहीं हटूँगी
उपाय अगर एकदम पक्का है
तो उसे जरूर कर दूंगी
डॉक्टर ने बताया-उपाय यह है कि
आपको एक बेटी पालनी है
तो एक को ही पालो
कोखवाली को जन्म लेने दो
डेढ़ साल वाली को मार डालो
इस तरह एक ही बेटी रहने की
समस्या का हल निकल जाएगा
और आपकी जान का
खतरा भी टल जाएगा
सुनते ही महिला चौंक कर बोली-
डाक्टर साब! आप मुझसे ही
मेरी बेटी को मरवा रहे हैं
एक मां के हाथ से बेटी की हत्या का
पाप करवा रहे हैं
डॉक्टर तुनक कर बोला-
आप मुझसे भी तो अपनी कोखवाली
बच्ची की हत्या करवाने आई हैं
मेरे सर पर एक अजन्मे, अर्ध-विकसित
भ्रूण की हत्या का पाप चढ़ाने आई हैं
आपको बता दूँ कि हत्या आप करें
या मैं, दोनों ही पाप है
और भ्रूण हत्या तो बहुत क्रूर व घिनौना
सामाजिक अभिशाप है
आप मुझे नारी तो जरूर दिख रही हैं
पर ममता की मूरत नहीं क्रूर दिख रही हैं
आश्चर्य है कि नारी होकर
कन्या-भ्रूण की हत्या करवा रहीं हैं
भगवान से भी भय नहीं खा रही हैं
मेरा निवेदन है कि आप
भाग्य के लेखे को मत मिटाइए
आपके कोख की कन्या
सौभाग्यशाली भी हो सकती है
उसको समस्या मत बताइए
भगवान के लिए आप अपनी ही
कोख घातिनी बन कर
माँ जैसे पावन शब्द को रक्तरंजित न करें
डाक्टरी पेशा जान बचाने का है
भ्रूण-हत्या करवा कर उसको कलंकित न करें
साथियो! जिस दिन हर डाक्टर
भ्रूण-हत्या के लिए आने वाली
हर महिला को ऐसा जवाब देगा
उसी दिन समाज की इस
क्रूर विसंगति पर
पूर्ण-विराम लगेगा। ◆

- 66, पाथुरिया घाट स्ट्रीट
कोलकाता - 700 006
कानाबाती - 94332 72705

युगपथ चरण :

हिन्दुस्तान क्लब :

श्री सीताराम शर्मा अध्यक्ष चुने गये

महानगर की संस्था हिन्दुस्तान क्लब का चुनाव शनिवार को हुआ। देर रात नतीजे आये, जिसमें सीताराम शर्मा अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी पारस मल जैन को २५० वोटों से हराया। क्लब की नवनिर्वाचित टीम इस प्रकार है – अध्यक्ष – सीतराम शर्मा, उपाध्यक्ष जीवराज सेठिया, मंत्री संत कुमार कसेरा, कोषाध्यक्ष घनश्याम मवांडिया, संयुक्त सचिव हरीश सिंघानिया और गौरांग भट्ट, सदस्य विनोद कुमार सराफ, हरिप्रसाद अग्रवाल, हंसमुख राय मालानी, महावीर प्रसाद सराफ, कुमारी नीरू शाह, पवन भीमसरिया, प्रदीप सराफ, कुमारी प्रीति कानोड़िया, संदीप पाटनी, संतोष कुमार सराफ, सबिता अग्रवाल सूर्यकान्त दम्मानी, सुशील पोद्दार, अशोक जैन व आलोक गाड़ोदिया चुनाव जीतने पर फोन पर प्रभात खबर से हुई बातचीत में सीताराम शर्मा ने कहा कि वह नयी टीम के साथ हिन्दुस्तान क्लब में परिवर्तन और सुधार पर जोर देंगे। साथ ही क्लब को घाटे से उबारने का पूरा प्रयास करेंगे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन (महाराष्ट्र प्रदेश)

रजत जयन्ती सत्र 2008-2010

निमंत्रण पत्र

प्रिय स्नेही बहनों,

आगत नव वर्ष की आप सभी को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं। आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है। हमारे अ.भा.मा.म.सम्मेलन का ''महाराष्ट्र प्रांत अधिवेशन'' राष्ट्र अध्यक्षा **पुष्पाजी खेतान** की उपस्थिति में जालना शाखा के अतिथ्य में होने जा रहा है।

महाराष्ट्र प्रांत अधिवेशन "रजत चांदनी"

दिनांक 9 जनवरी 2010, समय सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक

स्थान : रुक्मिनी गार्डन, बजरंग दालमील के सामने

:: सन्मानिनी अतिथि ::
सौ. कुमकुम अग्रवाल
पूर्व प्रदेश अध्यक्षा
सौ. रजनी मोहता
पूर्व प्रदेश अध्यक्षा

:: उद्घाटक ::
माननीया सौ. मालती घनश्यामजी गोयल

:: मुख्य वक्ता ::
सौ. सावित्री बाफना
निवृत्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

:: विशेष अतिथी ::
सौ. पुष्पा खंतान
राष्ट्रीय अध्यक्ष (ओरिसा)
सौ. स्मीता चेचाणी
नि.रा.अध्यक्षा 2010-2012

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ

1. गुवाहाटी, 20 अक्टूबर, 2009। राजस्थान की पूर्व उप मुख्यमंत्री तथा प्रख्यात स्वाधीनता सेनानी डॉ. कमला बेणीवाल द्वारा हाल ही में त्रिपुरा के राज्यपाल का पद ग्रहण करने पर पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से उनको हार्दिक बधाई प्रेषित की गई। सम्मेलनाध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ने नवनियुक्त राज्यपाल श्रीमती बेणीवाल को भेजे अपने शुभकामना संदेश में आशा व्यक्त की है कि उनके कार्यकाल में न केवल त्रिपुरा, बल्कि पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में आपसी सौहार्द एवं मैत्री भावना को बल मिले।

डॉ. हरलालका ने राज्यपाल को सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा के आतिथ्य में आगामी ८ व ९ जनवरी, २०१० को आयोजित होने वाले त्रयोदश अधिवेशन में भी उन्हें सादर आमंत्रित किया है।

2. गुवाहाटी, 23 अक्टूबर, 2009। पवित्र सरोवर एवं नदी के जल से भगवान भास्कर को अर्घ देकर छठ मैया की पूजा–अर्चना कर उपवास करने वाले समस्त श्रद्धालू भक्तों के मंगलमय जीवन की कामना करते हुए पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन ने छठ महोत्सव के पुनीत अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की हैं। सम्मेलन की ओर से प्रादेशिक अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका तथा मंत्री श्री ओमप्रकाश चौधरी ने कहा कि छठ व्रतधारियों ने असाध्य कष्ट सहकर अपनी सहनशीलता तथा धार्मिक आस्था का परिचय दिया है। सम्मेलन ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की है कि छठ महोत्सव ने पिछले कुछ सालों में राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लिया है और दिनों–दिन इसमें आस्था रखने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में होती बढ़ोत्तरी को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। यह हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता का जीवन्त प्रतीक है।

3. गुवाहाटी, 28 अक्टूबर, 2009। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ने हाल ही में तेजपुर का दौरा कर स्थानीय मारवाड़ी धर्मशाला में समाज के अग्रणी कार्यकर्ताओं के साथ एक बैठक में मुलाकात की। इस बैठक में समाज की ज्वलंत समस्याओं पर गहन चर्चा की गई और विचारों का आदान–प्रदान किया गया। बैठक के दौरान बन्धुओं ने सम्मेलनाध्यक्ष की उपस्थिति में तेजपुर शहर में सम्मेलन की शाखा स्थापित करने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया और तदर्थ एक समिति का गठन किया गया। तदर्थ समिति में श्री कुंजबिहारी भूत–संयोजक, श्री दिलीप पाटनी एवं श्री जुगल डागा सह–संयोजक तथा सदस्य के रूप में सर्वश्री सुरेश सिरोहिया, विनोद बोथरा, ओम प्रकाश जालान, सुरेन्द्र अग्रवाल, विनोद पारीक, प्रेम झंवर, पवन अग्रवाल एवं श्री ओमप्रकाश चौधरी चुने गए। समिति दो महिने की अवधि में सम्मेलन के सदस्य बनाकर एक आम सभा में शाखा का विधिवत गठन करेगी।

4. गुवाहाटी, 29 अक्टूबर। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ने हाल ही में २५–२७ अक्टूबर को तेजपुर, विश्वनाथ चाराली, गोहपुर तथा लखीमपुर शाखाओं का दौरा किया। इस दौरे के दौरान आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों यथा कन्या भ्रूण हत्या, परित्यक्ता, वधू दहन एवं अन्तर्जातीय विवाह जैसी ज्वलंत समस्याओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए समाज से आह्वान किया कि इन समस्याओं के उन्मूलन में सम्मेलन को सहयोग प्रदान करे। सम्मेलन इस सामाजिक कोढ़ का जल्द से जल्द खात्मा देखना चाहता है। मारवाड़ी समाज की वर्तमान स्थिति का चित्रण करते हुए आपने स्थानीय समाज के साथ समरसता पर बल देते हुए कहा कि हमें अपने बच्चों को स्थानीय भाषा की शिक्षा भी अवश्य दिलानी चाहिए। सम्मेलन के भावी कार्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि समाज की जनगणना, विवाह प्रकोष्ठ तथा मारवाड़ी फाउण्डेशन की स्थापना समाज गौरव तथा समाज कीर्ति जैसे रचनात्मक कार्यों का संकलन प्रकाशित करना। सांगठनिक उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए शाखाओं से सक्रियता लाने तथा समयबद्ध चुनाव करवाने पर जोर दिया। डॉ. हरलालका ने गुवाहाटी शाखा के आतिथ्य में आगामी ९ व १० जनवरी, २०१० को आयोजित होने वाले त्रयोदश प्रादेशिक अधिवेशन के बारे में प्रकाश डालते हुए आशा व्यक्त की कि यह अधिवेशन सार्थक उद्देश्यों के साथ सफल होगा। आपने शाखाओं से आह्वान किया कि वे अधिकाधिक संख्या में भाग लेवें।

लखीमपुर में मारवाड़ी महिला मंच के रजत जयंती समारोह में सम्मेलनाध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका का भव्य स्वागत किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में शाखाध्यक्ष सरोज गिड़िया तथा सम्मेलन की लखीमपुर शाखा के अध्यक्ष श्री बलबीर प्रसादजी शर्मा एवं मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री गोविन्द तापड़िया द्वारा आपका हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया गया। रजत जयंती समारोह का उद्घाटन डॉ. हरलालका द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। अपने सम्बोधन में आपने महिला मंच के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सफलता के २५ साल पूरे कर लेना साधारण बात नहीं है इन २५ सालों में संस्था के जीवन में कई उतार–चढ़ाव आए, कुछ लोगों का साथ छूटा, तो कुछ नए लोग भी शामिल होते गये। इस प्रकार लखीमपुर के महिला मंच ने अपने २५ साल पूरे कर समाज के सामने एक उत्कृष्ट मिशाल कायम की है। २५ सालों के सफर में साथ रहे सभी सहभागियों को आपने धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की कि अन्य स्थानों की मारवाड़ी महिलाएं लखीमपुर की महिलाओं से प्रेरणा लेकर समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करेंगी। रजत जयंती समारोह में श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल, महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, महिला मंच की पूर्व अध्यक्ष, श्रीमती पीस्ता देवी जैन व श्रीमती लीला पटवारी, महिला मंच की मंत्री उर्मिला दिनोदिया के अलावा मारवाड़ी सम्मेलन के शाखाध्यक्ष श्री बलबीर प्रसाद शर्मा एवं मंत्री श्री हीरालाल जैन एवं मारवाड़ी युवा मंच के शाखाध्यक्ष श्री गोविन्द तापड़िया मंच पर आसीन थे। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन सम्मेलनाध्यक्ष डॉ. हरलालका ने किया। समारोह में काफी संख्या में समाज के गणमान्य व्यक्ति, महिलाएं एवं बच्चे भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री राधिका मालपानी एवं अनु बजाज ने किया।

विश्वनाथ चाराली में आयोजित बैठक में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही, जिनमें सर्वश्री श्रीलाल अग्रवाल

(शाखाध्यक्ष), छत्तरसिंह पंवार (शाखामंत्री), संजय पटवारी, सुरेश कुमार अग्रवाल, त्रिलोक चन्द जैन, दिलीप शर्मा, विश्वनाथ अग्रवाल एवं राज कुमार पारीक आदि उपस्थित थे।

गोहपुर में अपने दौरे के दौरान सम्मेलनाध्यक्ष ने शाखाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद मुरारका, मंत्री श्री विनोद कुमार तोषनीवाल, कोषाध्यक्ष श्री रतन चाचान के अलावा कई गणमान्य व्यक्तियों से विचार–विमर्श किया।

5. गुवाहाटी, 2 नवम्बर। लायंस क्लब ऑफ गुवाहाटी ग्रेटार द्वारा लायन संजय बाजपेयी की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया, जिसमें पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका का सम्मेलन के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने पर क्लब की ओर से उनका जापि एवं फुलाम गामोछा से अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर पूर्व जिला गवर्नर लायन जयकुमार सरावगी, लाईनेस क्लब की बेला नाउका, क्लब के सचिव लायन पंकज पोद्दार के अलावा अन्य कई पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि डॉ. हरलालका लायंस क्लब के पूर्व जिला गवर्नर भी रह चुके है। नगर के एक होटल में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए सम्मेलनाध्यक्ष ने कहा कि लायंस क्लब अपने जन्म काल से ही जनसेवा के क्षेत्र में कार्यरत है। नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में पूरे विश्व में अपनी एक विशिष्ठ पहचान बना रखी है। सम्मेलन के कार्यो पर प्रकाश डालते हुए डॉ. हरलालका ने कहा कि सम्मेलन भी जनसेवा के क्षेत्र में कार्यरत है और नेत्र चिकित्सा शिविर के आयोजन में लायंस क्लब के साथ सहयोग करने का इच्छुक है।

6. गुवाहाटी, 4 नवम्बर। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का एक दल सम्मेलनाध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका के नेतृत्व में अपर असम की विभिन्न शाखाओं का दौरा करेगा। इस दौरान डॉ. हरलालका तिनसुकिया में आयोजित मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय अधिवेशन को भी सम्बोधित करेंगे। पदाधिकारियों के इस दल में निवर्तमान अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलुणिया, संगठन मंत्री श्री बजरंगलाल अग्रवाल के अलावा कोषाध्यक्ष श्री सज्जन अग्रवाल भी शामिल रहेंगे। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार ६ नवम्बर को मंच के तिनसुकिया अधिवेशन में शामिल होने के पश्चात ७ नवम्बर को डिगबोई, मारघेरिया, दुमदुमा व तिनसुकिया शाखा तथा ८ नवम्बर को डिब्रूगढ़, मोरान, शिवसागर तथा आस–पास की शाखाओं का दौरा भी शामिल है। इस दौरे का उद्देश्य समाज बंधुओं से परस्पर सम्पर्क करना एवं शाखाओं को सक्रियता प्रदान करना व गुवाहाटी में आगामी ९ व १० जनवरी २०१० को आयोजित होने वाले अधिवेशन के बारे में जानकारी देना।

7. बरपेटा रोड, 4 नवम्बर। मारवाड़ी सम्मेलन, बरपेटा रोड शाखा की एक आम सभा हाल ही में सम्पन्न हुई, जिसमें शाखा की पिछली गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया और भावी कार्यक्रमों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। सभा में सर्वसम्मति से विजय कुमार भगेरिया की अध्यक्षता में नई कार्य समिति का गठन किया गया। इस समिति में बासुदेव सारड़ा–उपाध्यक्ष, श्री नागरमल शर्मा–सचिव, श्री दीपक कुमार बैंगानी–सह सचिव, श्री गोपाल सारड़ा–कोषाध्यक्ष एवं श्री अनिल कुमार जैन तथा श्री भैरु शर्मा–प्रचार सचिव चुने गये। सलाहकार समिति में सर्वश्री बाबूलाल मोर, रेवतमल बैंगानी, गोविन्दराम अगरवाल, विजय कुमार बगड़िया तथा भागचन्द जैन को शामिल किया गया।◆

नगाँव में अग्रसेन जयंती

नगाँव, २१ सितम्बर। अग्रवाल वंश के संस्थापक युगपुरुष महाराजा अग्रसेन की जयंती नगांव के हैबरगांव के शांतिपुर स्थित लोहिया भवन में अग्रवाल सभा, नगांव द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ मनायी गयी। जयंती के अंतिम दिन सायं विशेष सभा का आयोजन महाराजा अग्रसेन व कुलदेवी महालक्ष्मी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन व पूजा-अर्चना के साथ हुआ। इस सभा में मुख्य अतिथि के तौर पर गौहाटी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वासुदेव अग्रवाल अपनी धर्मपत्नी उर्मिला अग्रवाल के साथ उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका, अध्यक्ष पूमास के साथ अग्रवाल सभा नगांव के अध्यक्ष संतलाल बंका, सचिव रघुवीर आलमपुरिया भी मंचासीन थे। रघुवीर प्रसाद आलमपुरिया ने सचिव का प्रतिवेदन पेश किया। मंच संचालन संजय मित्तल, रतन बगड़िया, पायल अग्रवाल ने किया। मुख्य अतिथि वासुदेव अग्रवाल ने कहा कि मुझे मारवाड़ी होने पर गर्व है तथा खुशी है कि मेरा जन्म अग्रवाल समाज में हुआ है। समाज को महाराजा अग्रसेन के बताये मार्गों का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने अंतर्जातीय विवाह पर बल देते हुए इसके प्रति जागरुकता लाने का आह्वान किया।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका ने कहा कि महाराजा अग्रसेन ने हमारे समाज को बहुत सिद्धान्त दिये हैं। श्री हरलालका ने अग्रवाल जाति के विश्व के कोने-कोने में रहने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज हमारी उपलब्धियां ही हमारे लिए गर्व का विषय हैं। समाजसेवी मानक चंद नाहटा ने भी अपने विचार सभा पटल पर रखे। समाज में उल्लेखनीय योगदान के लिए अग्रवाल सभा ने वरिष्ठ समाजसेवी का सम्मान बाबुलाल अग्रवाल (दादलीका) को दिया, जिन्हें सम्मान स्वरूप महाराजा अग्रसेन का धार्मिक दुपट्टा, चित्र, प्रशस्ति-पत्र और शाल प्रदान किया गया। १६ सितम्बर को आयोजित चित्रांकन, एकल नृत्य प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगी को आमंत्रित अतिथियों ने पुरस्कृत किया। साथ ही कक्षा १०वीं, १२वीं में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होने वाले छात्र-छात्राओं को आमंत्रित अतिथियों द्वारा सम्मान पत्र दिया गया।◆

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव संपन्न

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की प्रान्तीय सभा की बैठक में आज प्रमुख समाजसेवी विजयकुमार गुजरवासिया को वर्ष २०१०–२०१२ के लिये प्रान्तीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस मौके पर सम्मेलन के चुनाव अधिकारी शंभु चौधरी व चुनाव पैनल के दो सदस्यों नन्द किशोर अग्रवाल तथा ओमप्रकाश (हावड़ा) ने नामांकन पत्रों की जांच करते हुए जरूरी औपचारिकतायें पूरी कीं। प्रान्तीय अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने के बाद गुजरवासिया का सम्मेलन की ओर से अभिनन्दन किया गया। सचिव रामगोपाल बागला एवं समाजसेवी घनश्याम प्रसाद सोभासरिया ने श्रीगुजरवासिया का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

श्री बागला ने कहा कि श्री गुजरवासिया के अध्यक्ष बनने से सम्मेलन को नयी दिशा मिलेगी। श्यामालाल डोकानिया, विश्वनाथ भुवालका, रामनिवास चोटिया, दामोदर बिदावतका, इंदरचंद मेहरीवाल, शिवकुमार क्याल, श्याम सुंदर भालोटिया, भंवरलाल जसनसरिया आदि ने श्री गुजरवासिया का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस मौके पर श्री गुजरवासिया ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन ने जो जिम्मेदारी उन्हें पूरा करने के लिये दी है वे उनको पूरा करने का गंभीरता से प्रयास करेंगे और संगठन की सामाजिक गतिविधियों को बढ़ाना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। समाज के कमजोर वर्ग की सहायता के लिये नयी योजनाएं बनाने की भी उन्होंने घोषणा की। पश्चिम बंगाल के जिन जिलों में अभी तक सम्मेलन की शाखाएं नहीं खुली है, उन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सम्मेलन की ओर से दी गयी जानकारी में कहा गया कि गुजरवासिया अगले महिने होने वाले अधिवेशन में अपनी टीम का गठन करेंगे।◆

कुमारी तूलिका डालमिया को सूप्रीम कोर्ट में इनटर्नसिप मिली

कुमारी तूलिका डालमिया, कलकत्ते में डिपार्टमैण्ट ऑफ लॉ, कलकता विश्व विद्यालय की छात्रा को सूप्रीम कोर्ट में इनटर्नसिप मिली है। कुमारी तूलिका डालमिया को सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी तूलिका डालमिया जसीडीह (झारखण्ड) निवासी श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, भूतपूर्व अध्यक्ष, झारखण्ड प्रांतिय मारवाड़ी सम्मेलन की पौत्री है।◆

बधाई

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष वरिष्ठ समाज सेवी उद्योगपति श्री आत्माराम सोन्थलिया को रेल मन्त्रालय भारत सरकार ने दक्षिण पूर्व रेलवे की आंचलिक उपभोक्ता परामर्श समिति (ZONAL RAILWAY USERS CONSULTATIVE COMMITTEE) का मानद सदस्य मनोनीत किया है। इस समिति का कार्यकाल वर्ष 2009 से 2011 का है। समाज विकास की ओर से हार्दिक बधाई।◆

अग्र युवा संगठन वाद-विवाद प्रतियोगिता

अग्र युवा संगठन, कोलकाता की ओर से ३० अगस्त, २००९ को स्थानीय भारतीय भाषा परिषद् में एकादश वार्षिक अन्तर्विद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं अष्टम युवा प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। सुप्रसिद्ध वास्तुशास्त्री एवं श्री अग्रसेन स्मृति भवन के मंत्री श्री श्यामलाल जालान ने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

सम्माननीय अतिथि श्री तुलसीराम टिबड़ेवाल ने युवा पीढ़ी में खेलों के प्रभाव पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता एवं दैनिक सेवा संसार के सम्पादक श्री संजय हरलालका ने समाज सेवा के क्षेत्र में युवा पीढ़ी को आगे लाने पर बल दिया। शिक्षाविद् एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री श्याम सुन्दर सांगानेरिया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।◆

With Best Compliments From

Purwanchal Rolling Mills & Industries Pvt. Ltd.

Manufacturing of M. S. Round Bars Structures

75

:: Address ::

O.P. Khandelwal
Shri Om Prakash Khandelwal
National Vice President AIMF
M/S Purvanchal Rolling Mills
G. S. Road, Dispur
Guwahati - 781 005, Assam
Ph. : (0361) 2343083/2346805
Mobile : 094350 45425

SINCE 1980
मम्मी ! आज
Sunday है,
कुछ Yammi...
हो जाये !!
गोल्डी
पावभाजी मसाला
जो भी खायेगा
वाह वाह करेगा !
गोल्डी
एगमार्क
मसाले
हींग • अचार • चाय • पापड़ • गुलाब जामुन मिक्स
सेवईयाँ • नूडल्स • सॉस • पूजाकिट • अगरबत्ती
धूपबत्ती • डायबिटिक पाउडर इत्यादि.
AGMARK
Pavbhaji
Masala
Shubham Goldiee Masale Pvt. Ltd.
AN ISO 9001:2000 & HACCP CERTIFIED COMPANY
51/40, Goldiee House, Nayaganj, Kanpur-01 (UP) Fax: +91-512-2319479
Phone : +91-512-2302737 E-mail: info@goldiee.com CONSUMER CARE CELL : +91-512-2316862

कौस्तुभ जयंती पर हमारी तरफ से शुभकामनाएँ

A Vertically Integrated Knitwear Unit (Cotton cultivation-Spinning-Knitting-Dyeing Garment.

Manufacture - Exporter Hosiary Organic Cotton, Openend, Millange, Airjet Yarn, Knitted Fabrics And Garment.

Pratibha

Pratibha Syntex Private Limited

ISO 9001:2000

(Govt. Recognized Three Star Export House)
Plot No. 4, Industrial Growth Centre
KHEDA - 454774, Pithapur, Dist. - Dhar, (M.P) India
Tel. No. 07292-404362-63, Fax No. 07292-256340-41
E-mail : info@pratibhasyntex.com

Quality Management Systems

ISO:9001:2000 - Yarns: Quality Standards
ISO:9001:2000 - Knitted Fabrics & Garments: Quality Standards
ISO 14001:2004 - Spinning, Knitting, Processing & Garment : Environmental Compliance
OHSAS 18001:2007 - Spinning, Knitting, Processing & Garments : Health & Safety Compliance
SA 8000:2001 - Spinning, Knitting, Processing & Garments: Social Compliance
Compliance - B Level by World Wide Responsible Apparel Production (WRAP)

Riddhi Siddhi GROUP

2, Rowland Road, Kolkata-20

Ph : 30520518, 2486-2569

"We never want to be like people building magnificient concrete cases; but like birds, building nests of blissful calm."

- Mr. D. P. Dabriwal, Chairman

- Riddhi Siddhi Mansion
- Riddhi Siddhi View
- Riddhi Siddhi Villa
- Riddhi Siddhi Garden
- Palm View
- Ganpati Business Suits
- Ballygunj Chamber

- Riddhi Siddhi Jyoti, Ballygunge
- Riddhi Siddhi, Sarat Bose Road
- Riddhi Siddhi Park, Diamond Park
- Riddhi Siddhi Residency, M. G. Road
- Riddhi Siddhi City, D.H. Road
- Alankrita, M. G. Road
- Alipore Exotica, Alipore
- Moore Exotica, Moore Avenue
- Prince Bhaktiar Shah Road

Riddhi Siddhi Centre 31, Sarat Bose Road

Riddhi Siddhi Park

Riddhi Siddhi Mansion Moore Avenue

Riddhi Siddhi Alankrita 203, M. G. Road

Alipore Exotica Alipore

Riddhi Siddhi Garden Diamond Park, D.H. Road